छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों के साथ हुई मुठभेड़ में 10 नक्सली हुए ढेर- 7

आईपीओ और एमपीएस की समय सीमा बढ़ाने पर सेबी करेगा विचार - 10

ट्रंप के करीबी सहयोगी कार्यकर्ता चार्ली किर्क की गोली मारकर हत्या - 11

सचिन तेंदुलकर बीसीसीआई अध्यक्ष पद की दौड़ में नहीं - 12

आज का मौसम

33.0⁰ अधिकतम तापमान

27.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 05.56

सूर्यास्त 06.21

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

आश्विन कृष्ण पक्ष पंचमी 09:58 उपरांत षष्ठी विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 12 सितंबर 2025, वर्ष 6, अंक 293, पृष्ठ 12+4 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

रेड टेप के ठिकानों पर आयकर का छापा

लखनऊ। प्रसिद्ध जूता और परिधान निर्माता कंपनी रेड टेप के खिलाफ आयकर विभाग ने गुरुवार को बड़ी कार्रवाई की। विभाग की टीमों ने नोएडा, ग्रेटर नोएडा और कानपुर में छापेमारी की। टैक्स चोरी, अनअकाउंटेड लेनदेन और बेनामी संपत्तियों की जानकारी के आधार पर यह कदम उठाया गया। छापेमारी का मुख्य केंद्र नोएडा का सेक्टर-44 स्थित स्टेलर अपार्टमेंट्स रहा। अधिकारी यहां महत्वपूर्ण दस्तावेजों, डिजिटल डेटा और वित्तीय रिकॉर्ड की जांच कर रहे हैं। लखनऊ आयकर मुख्यालय के सूत्रों के अनुसार, आयकर विभाग को रेड टेप समूह द्वारा आय छिपाने, बड़े स्तर पर नकद लेनदेन और अघोषित विदेशी निवेश से जुड़ी जानकारियां मिली थीं। ग्रेटर नोएडा में कंपनी के एक वेयरहाउस और ऑफिस परिसर में छापेमारी चल रही है। कानपुर स्थित कंपनी का मुख्यालय व मालिकों के आवासीय परिसर भी जांच के घेरे में हैं।

सोनिया गांधी से जुड़ी याचिका की खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के खिलाफ कार्रवाई की मांग वाली उस याचिका को गुरुवार को खारिज कर दिया, जिसमें आरोप लगाया गया था कि उनका नाम भारतीय नागरिक बनने से तीन साल पहले ही मतदाता सूची में शामिल कर लिया गया था। शिकायतकर्ता विकास त्रिपाठी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता पवन नारंग ने कहा कि जनवरी 1980 में सोनिया गांधी का नाम नई दिल्ली क्षेत्र में मतदाता के रूप में जोड़ा गया था, जबकि वह भारतीय नागरिक नहीं थीं।

भगोड़े को कुवैत से भारत लाया गया

नई दिल्ली। धोखाधड़ी और जालसाजी के मामलों में वांछित और इंटरपोल के रेड नोटिस का सामना कर रहे एक आरोपी को गुरुवार को कुवैत से प्रत्यर्पित किया गया। सीबीआई ने विदेश मंत्रालय और एनसीबी-कुवैत के साथ मिलकर प्रत्यर्पण का अभियान चलाया था। कुवैत पुलिस की सुरक्षा में मुन्नवर खान हैदराबाद हवाई अड्डे पहुंचा, जहां चेन्नई में सीबीआई की विशेष कार्य बल की शाखा ने उसे हिरासत में ले लिया। सीबीआई ने कहा कि जालसाजी और धोखाधड़ी के एक मामले में मुनव्वर खान सीबीआई का वांछित अपराधी है।

जेन जी में पड़ी फूट, अंतरिम प्रधानमंत्री पर फंसा पेच

- नेपाल संकट : जेन जी समूह ने की संसद भंग करने और संविधान में संशोधन की मांग

काठमांडू, एजेंसी

बुधवार रात को काठमांडू हवाई अड्डे को फिर से खोल दिया गया, लोग अपने सामान के साथ वहां इंतजार कर रहे हैं।

नेपाल में सरकार विरोधी प्रदर्शनों का नेतृत्व कर रहे 'जेन जी' समूह में अंतरिम सरकार के गठन और प्रधानमंत्री पद को लेकर फूट पड़ गई है। केपी शर्मा ओली के मंगलवार को इस्तीफा देने के बाद से प्रधानमंत्री पद खाली पड़ा है।

काठमांडू के मेयर और रैपर बलेंद्र शाह बालेन, पूर्व चीफ जस्टिस सुशीला कार्की और बिजली बोर्ड के पूर्व प्रमुख कुलमान घिसिंग के नाम प्रधानमंत्री पद के लिए प्रमुखता से सामने आए हैं लेकिन अभी अंतिम फैसला नहीं हो सका है। बालेन और सुशीला कार्की के समर्थकों के बीच झड़पों की बात सामने आई है। उधर, जेन जी समूह ने गुरुवार को कहा कि संसद को भंग किया जाना चाहिए और लोगों की इच्छा को प्रतिबिंबित करने के लिए संविधान में संशोधन किया जाना चाहिए। वहीं, प्रदर्शनों में मरने वालों की संख्या बढ़कर 34 हो गई है। प्रदर्शनकारियों ने अपने विचार व्यक्त करने के लिए यहां एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया, जबकि उनके कुछ प्रतिनिधि वर्तमान राजनीतिक संकट का समाधान खोजने के लिए सेना मुख्यालय में राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल और सेना प्रमुख अशोक राज सिगडेल के साथ विचार-विमर्श में व्यस्त थे। इस अवसर पर 'जेन जी' कार्यकर्ताओं ने बातचीत और सहयोग के माध्यम से समाधान खोजने की आवश्यकता पर बल दिया। 'जेन जी' समूह के प्रतिनिधि दिवाकर दंगल, अमित बनिया और जुनल दंगल ने प्रेस वार्ता के माध्यम से पुराने राजनीतिक दलों को चेताया कि वे अपने निहित स्वार्थों के लिए उनका इस्तेमाल न करें। एक कार्यकर्ता ने कहा कि यह पूरी तरह से नागरिक आंदोलन है, इसलिए इसमें राजनीति करने की कोशिश न करें। दंगल ने कहा कि हमारे सामने राष्ट्रीय संप्रभुता, एकता की रक्षा और आत्म-सम्मान बनाए रखने की चुनौती है।

पीएम पद की रेस में कार्की और घीसिंग का नाम आगे

कुछ कार्यकर्ताओं ने नए प्रधानमंत्री पद के लिए पूर्व प्रधान न्यायाधीश सुशीला कार्की का समर्थन किया, जबकि अन्य ने नेपाल विद्युत प्राधिकरण के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) कुलमन घीसिंग का समर्थन किया। एक अन्य कार्यकर्ता ने कहा कि उनका देश का नेतृत्व संभालने का कोई इरादा नहीं है, बल्कि वे सिर्फ़ एक प्रहरी बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हम सरकार में भाग नहीं लेंगे, बल्कि एक प्रहरी बने रहना चाहते हैं।

मौजूदा संकट का समाधान खोजने के प्रयास जारी : पौडेल

काठमांडू। नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने गुरुवार को सभी पक्षों से शांति बनाए रखने में सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि वह संवैधानिक ढांचे के भीतर मौजूदा राजनीतिक हालात का समाधान खोजने का प्रयास कर रहे हैं। यह पहली बार है जब राष्ट्रपति ने देश में मौजूदा उथल-पुथल के बारे में बात की है। मंगलवार को 'जेन ज़ी' के प्रदर्शनकारी समूहों द्वारा राष्ट्रपति कार्यालय और उनके निजी आवास पर आगजनी के बाद से उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया। पौडेल वर्तमान में सैन्य सुरक्षा में हैं। उन्होंने लोगों और सभी हितधारकों से इस गंभीर हालात में धैर्य रखने और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में मदद करने का आग्रह किया। राष्ट्रपति पौडेल ने कहा कि मैं कानून-व्यवस्था बनाए रखने, लोकतंत्र की रक्षा करने और संवैधानिक ढांचे के भीतर मौजूदा राजनीतिक गतिरोध से बाहर निकलने का हरसंभव प्रयास कर रहा हूं। उन्होंने सभी पक्षों से समस्या का जल्द से जल्द समाधान निकालने के उनके प्रयासों में विश्वास दिखाने का आह्वान किया।

भारत-मॉरीशस पार्टनर नहीं, परिवार

दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय बातचीत में कई अहम मुद्दों पर बनी सहमति

- मोदी और मॉरीशस के प्रधानमंत्री रामगुलाम का काशी में भव्य स्वागत
- नवीन चंद्र रामगुलाम ने काशी को बताया-मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/वाराणसी

वाराणसी में गुरुवार को द्विपक्षीय बैठक के दौरान अपने मॉरीशस समकक्ष नवीनचंद्र रामगुलाम से हाथ मिलाते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी।

अमृत विचार : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को वाराणसी में मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन चंद्र रामगुलाम का आत्मीय स्वागत करते हुए भारत-मॉरीशस संबंधों को पार्टनरशिप नहीं, पारिवारिक संबंध बताया। दोनों प्रधानमंत्रियों के बीच हुई द्विपक्षीय वार्ता में विकास, तकनीकी सहयोग, संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य और समुद्री सुरक्षा सहित कई अहम मुद्दों पर सहमति बनी।

काशी के ऐतिहासिक और आध्यात्मिक वातावरण में आयोजित इस मुलाकात को भारत-मॉरीशस रिश्तों में एक नए अध्याय की शुरुआत के तौर पर देखा जा रहा है। द्विपक्षीय चर्चा के बाद दोनों नेताओं ने साझा बयान में कहा कि भारत और मॉरीशस के संबंध केवल कूटनीतिक नहीं, भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार पर बने हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि मॉरीशस हिंद महासागर में भारत का स्वाभाविक साझेदार नहीं, विश्वासपात्र परिवार का हिस्सा है। वार्ता के दौरान भारत और मॉरीशस ने शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य तकनीक, डिजिटल गवर्नेंस और समुद्री सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने के लिए कई अहम प्रस्तावों पर सहमति जताई। साझा समुद्री निगरानी तंत्र, डिजिटल यूनिवर्सिटी की स्थापना और योग प्रशिक्षण केंद्र को लेकर कार्ययोजना पर चर्चा हुई। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत की 'एक्ट ईस्ट' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीति में मॉरीशस की भूमिका अहम है। हम हिंद महासागर क्षेत्र को शांति और समृद्धि का क्षेत्र बनाना चाहते हैं और मॉरीशस इसमें अग्रणी भूमिका निभा रहा है। मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन चंद्र रामगुलाम ने प्रधानमंत्री मोदी का धन्यवाद करते हुए कहा कि भारत हर संकट में हमारे साथ खड़ा रहा चाहे कोविड वैक्सीन हो या डिजिटल ट्रांजिशन। द्विपक्षीय वार्ता के बाद मॉरीशस के प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ धाम जाकर पूजा-अर्चना की और गंगा आरती में भाग लिया। कहा कि काशी सिर्फ भारत की सांस्कृतिक राजधानी नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

नई काशी में मोदी का अभिनंदन : योगी

लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पहुंचने पर प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी, दोनों उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक समेत भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने किया। मुख्यमंत्री योगी ने अपने एक्स अकाउंट पर किए पोस्ट में लिखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अध्यात्म व आधुनिकता के संगम उनकी नई काशी में हार्दिक स्वागत व अभिनंदन।

रोड शो में उमड़ा जनसैलाब

वाराणसी में दोनों प्रधानमंत्रियों का रोड शो भी आकर्षण का केंद्र रहा। सड़कों पर खड़े हज़ारों लोगों ने दोनों नेताओं का शंखनाद, पुष्पवर्षा और भारत-मॉरीशस के झंडों के साथ स्वागत किया। रोड शो में पारंपरिक लोकनृत्य, शहनाई और भव्य झांकियां थीं। मोदी के स्वागत में भाजपा कार्यकर्ता जीएसटी सुधार, विकसित भारत और विश्वगुरु भारत जैसे नारों की तख्तियां लिए हुए थे।

भारत-मॉरीशस सहयोग के प्रमुख बिंदु

- शिक्षा और स्किलिंग में साझा संस्थान
- समुद्री सुरक्षा पर संयुक्त निगरानी
- योग और संस्कृति के प्रचार हेतु केंद्र
- डिजिटल गवर्नेंस और हैल्थटेक में सहयोग

पाकिस्तान से जुड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़, 5 गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी

हमले की साजिश नाकाम

- दिल्ली पुलिस और केंद्रीय एजेंसियों का कई राज्यों में छापा

दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ और केंद्रीय एजेंसियों द्वारा कई राज्यों में समन्वित छापेमारी के बाद पाकिस्तान स्थित एक आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया गया और पांच संदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। एक अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि यह मॉड्यूल देश में बड़ा हमला करने की योजना बना रहा था।

अधिकारी ने बताया कि इस मॉड्यूल के मास्टरमाइंड की पहचान अशर दानिश के रूप में हुई है और उसे झारखंड के रांची से गिरफ्तार किया गया, जबकि दो संदिग्धों - मुंबई निवासी आफताब और सूफियान को मंगलवार को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि मुजपा को तेलंगाना से गिरफ्तार किया गया, जबकि एक और आतंकवादी कामरान को भी गिरफ्तार किया गया है।

उन्होंने बताया कि मॉड्यूल का सरगना दानिश, सीईओ, गजबा और प्रोफेसर जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता था। अधिकारी ने बताया कि यह छापेमारी खुफिया जानकारी मिलने के बाद की गई, जिसमें संकेत मिला था कि एक मॉड्यूल देश में बड़े आतंकवादी हमले की योजना बना रहा है। हम पिछले छह महीने से उन पर नजर रख रहे थे।

उन्होंने बताया कि कई स्थानों पर तलाशी के दौरान बड़ी मात्रा में रसायन, बॉल बेयरिंग और इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) बनाने में प्रयुक्त अन्य सामग्री बरामद की गई। पुलिस दलों ने आईईडी बनाने में इस्तेमाल होने वाले पुर्जे और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बरामद किए हैं। सोडियम बाइकार्बोनेट समेत कई रसायन, गैस मास्क, बिजली के केबल, फ्यूज प्वाइंट, तार और अन्य बिजली के उपकरण जब्त किए गए हैं। पुलिस ने बताया कि रांची में दानिश के ठिकाने पर छापेमारी में रसायन और अन्य सामग्री बरामद हुई, जिनका इस्तेमाल विस्फोटक बनाने में होने का संदेह है।

टैंकर से टकराकर पलटी रोडवेज बस, 5 की मौत

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- काकोरी में हुआ हादसा, 20 घायलों में से 3 की हालत नाजुक

अमृत विचार : हरदोई से लखनऊ जा रही कैसरबाग डिपो की बस काकोरी के गोला कुआं के पास टैंकर से टकराकर 25 फीट नीचे खंदक में गिर गई। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई। जबकि 20 से अधिक घायल हो गए। काकोरी सीएचसी में प्राथमिक इलाज के बाद 17 घायलों को केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया, घायलों में तीन की हालत नाजुक है। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर मंडलायुक्त रोशन जैकब, पुलिस कमिश्नर अरमेंद्र कुमार सेंगर, डीएम विशाख जी, संयुक्त पुलिस आयुक्त लॉ एंड आर्डर बबलू कुमार और डीसीपी पश्चिम विश्वजीत श्रीवास्तव मौके पर पहुंचे। देर रात तक राहत कार्य जारी रहा।

हरदोई से लखनऊ आ रही कैसरबाग डिपो की बस में 44 सवारियां थीं। गोला कुआं के पास से सड़क मरम्मतीकरण के साथ पेड़ भी लगाए जा रहे थे। पेड़ में टैंकर से पानी डाला जा रहा था। इसी बीच रोडवेज बस टैंकर में टकरा गई और पांच बाइक सवारों को ठोकर मारते हुए पास 25 फीट गहरी खंदक में जा गिरी। सूचना पर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंची। बस में फंसी सवारियों को निकालने का काम शुरू कर दिया गया। मृतकों की पहचान दिलशाद निवासी बुधडिया काकोरी (लखनऊ), बाबूराम निवासी सुनगढ़ी स्थित पिपरा (पीलीभीत), नरदेव निवासी मथुरा, संजीव कुमार निवासी रायपुर जगवन इसौली बदायूं और जगदीश पीलीभीत के रूप में हुई है।

कार की टक्कर से मां बेटे और पोते की मौत

पीलीभीत/ शाहजहांपुर। पीलीभीत के बीसलपुर कोतवाली क्षेत्र में गुरुवार दोपहर कार ने एक बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार मां-बेटे और पोते की मौत हो गई। हादसे के बाद चालक कार छोड़कर भाग निकला। नाराज परिजन आरोपी चालक की गिरफ्तारी तक शव नहीं उठाने की जिद पर अड़ गए। सूचना पर पहुंचे भाजपा विधायक ने उन्हें समझाकर शव उठाने के लिए राजी किया। शाहजहांपुर के पुवायां थाना क्षेत्र के गांव टिकोलिया निवासी प्रवीण कुमार (35), मां सुशीला देवी (60) और बेटे यश (12) के साथ पीलीभीत के दियोरियाकलां क्षेत्र के ग्राम गुलड़िया में रिश्तेदारी में आए थे। लौटते समय बीसलपुर-दियोरियाकलां मार्ग पर मानपुर-विसंगापुर के बीच बीसलपुर की ओर से आ रही कार ने बाइक में टक्कर मार दी जिससे तीनों की मौत हो गई।

राधाकृष्णन आज लेंगे उपराष्ट्रपति पद की शपथ

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन को शुक्रवार को पद की शपथ दिलाएंगी। अधिकारियों ने बताया कि महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल राधाकृष्णन सुबह 10 बजे राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में शपथ लेंगे। राधाकृष्णन (67) ने मंगलवार को उपराष्ट्रपति पद के लिए हुए चुनाव में संयुक्त विपक्ष के उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी को 152 मतों से हराया। तत्कालीन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ द्वारा 21 जुलाई को इस्तीफा दिए जाने के कारण चुनाव कराया गया।

हैदरी दल के सरगना अकबर अली को पुलिस ने दबोचा

कार्यालय संवाददाता, बरेली

आरोपी अकबर अली

- सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो अपलोड करने के साथ ही करता था भड़काऊ पोस्ट
- छिंदवाड़ा से चला रहा था नफरत की फैक्ट्री, आरोपी को कोर्ट में पेश कर भेजा जेल

अमृत विचार : कोतवाली पुलिस ने मध्यप्रदेश में बैठ कर सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो और भड़काऊ पोस्ट कर माहौल खराब करने की कोशिश करने वाले आरोपी हैदरी दल के सरगना ग्राम अवाजीपुर थाना चांदपुर फतेहपुर निवासी अकबर अली को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को गुरुवार को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। इससे पहले भी पुलिस इस गिरोह के कई सदस्यों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

एसपी सिटी मानुष पारिक ने बताया कि अकबर अली सोशल मीडिया पर हैदरी दल के नाम से कई अकाउंट्स बना कर धार्मिक भावनाओं को भड़काने, फेक न्यूज फैलाना, महिलाओं के लिए आपत्तिजनक पोस्ट करने जैसे काम करता था। आरोपी के सोशल मीडिया पर लाखों में फॉलोवर हैं। हैदरी दल का सरगना अकबर अली लंबे समय से फरार चल रहा था। इसकी तलाश कोतवाली पुलिस कर रही थी। आरोपी को बुधवार की रात में कोतवाली थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया था। इसे गुरुवार को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया।

एसपी सिटी ने बताया कि बीती तीन सितंबर को थाना कोतवाली में हैदरी दल के सदस्यों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई। हैदरी दल के ऑफिशियल खातों को ट्रेस किया गया तो मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा से संचालित किया जा रहा था। अकबर मूल रूप से ग्राम अवाजीपुर पोस्ट रिठवा थाना चांदपुर जनपद फतेहपुर का निवासी है। जो मौजूदा समय में पटेल कालोनी थाना सौसर मध्य प्रदेश में रहता है। उसके पिता कपड़े की दुकान चलाते हैं।

सुप्रीम सुनवाई

राष्ट्रपति के रिफरेंश मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सुरक्षित रखा अपना फैसला

कोर्ट ने पूछा : राज्यपाल कर्तव्य में विफल हों तो क्या चुप रहा जाए

नई दिल्ली, एजेंसी

- राज्यपालों की विवेकाधीन शक्तियों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए : केंद्र

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को विधेयकों को मंजूरी देने के संबंध में राष्ट्रपति के संदर्भ पर फैसला सुरक्षित रखते हुए पूछा कि यदि राज्यपाल जैसे संवैधानिक पदाधिकारी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में विफल रहते हैं तो क्या वह निष्क्रिय बैठ सकता है।

प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने 10 दिन तक चली मैराथन सुनवाई में राष्ट्रपति के संदर्भ पर अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, अभिषेक सिंघवी, गोपाल सुब्रमण्यम, अरविंद दातार और अन्य सहित कानूनी दिग्गजों की दलीलें सुनीं। यह अनुच्छेद 200 और 201 के आसपास केंद्रित था और मुख्य मुद्दा यह था कि क्या संवैधानिक न्यायालय राज्यपालों और राष्ट्रपति के लिए विधेयकों को मंजूरी देने के लिए समयसीमा निर्धारित कर सकता है। पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति विक्रमनाथ, न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति ए एस चंदुरकर भी शामिल थे। पीठ ने दलीलों के अंतिम दिन मेहता को उस समय टोका जब उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण को संविधान की मूल संरचनाओं में से एक बताया और कहा कि न्यायालय को समय सीमा तय नहीं करनी चाहिए और राज्यपालों की विवेकाधीन शक्तियों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रधान न्यायालधीश ने कहा कि कोई भी व्यक्ति चाहे कितने भी ऊंचे पद पर क्यों न हो, संविधान के संरक्षक (सुप्रीम कोर्ट का संदर्भ) के रूप में... मैं सार्वजनिक रूप से कहता हूं कि मैं शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखता हूं और यद्यपि न्यायिक सक्रियता होनी चाहिए, लेकिन न्यायिक अतिवाद या दुस्साहस नहीं होना चाहिए। लेकिन साथ ही, यदि लोकतंत्र का एक पक्ष अपने कर्तव्य का निर्वहन करने में विफल रहता है, तो क्या संविधान का संरक्षक शक्तिहीन होकर निष्क्रिय बैठा रहेगा?

मेहता ने कहा कि केवल न्यायालय ही नहीं, कार्यपालिका और विधायिका भी नागरिकों के मौलिक अधिकारों की संरक्षक हैं... तीनों अंग संरक्षक हैं। विधि अधिकारी ने कहा कि लेकिन, एक समन्वय संवैधानिक पदाधिकारी के विधायी विवेकाधीन कार्यों के संबंध में राज्यपालों को परमादेश जारी करना शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का उल्लंघन होगा और शक्तियों का यह पृथक्करण मूल संरचना का एक हिस्सा है।

अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल के पास विवेकाधीन शक्तियां

मेहता ने कहा कि राज्यपाल किसी विधेयक पर हमेशा के लिए नहीं बैठ सकते, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अनुच्छेद 200 के तहत उनके पास विवेकाधीन शक्तियां नहीं हैं और स्ट्रेटजैकेट फॉर्मूला के रूप में मंजूरी देने के लिए समयसीमा तय की जा सकती है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा अध्यादेश जारी करने के मामले में भी राज्यपालों की विवेकाधीन शक्तियों को रेखांकित किया। विपक्ष शासित राज्यों की दलीलों के जवाब में मेहता ने पूछा कि मान लीजिए कि एक राज्य विधानमंडल एक विधेयक पारित करता है जिसमें घोषणा की जाती है कि वह अब भारत संघ का हिस्सा नहीं रहेगा, राज्यपाल के पास सहमति को रोकने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। संबंधित राज्यों ने अपनी दलीलों में कहा था कि राज्यपाल को केवल मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कुछ संदर्भों में राज्यपालों और राष्ट्रपति को संवैधानिक विवेकाधिकार दिए जाने को रेखांकित किया।

अमृत विचार

बरेली , शुक्रवार,12 सितंबर 2025

5157 मेगावाट से बढ़कर शीघ्र 10,000 मेगावाट हो जाएगा सौर बिजली उत्पादन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- सोलर और हाइड्रो पावर के साथ साथ थर्मल पावर व बायोपावर का उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्य कर रही सरकार : एके शर्मा

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश की सौर ऊर्जा विद्युत उत्पादन क्षमता में बढ़ोत्तरी करते हुए 2025 में 5157 मेगावाट की क्षमता बढ़ाकर शीघ्र ही क्षमता 10000 मेगावाट हो जायेगी। 2017 तक यह क्षमता मात्र 389 मेगावाट थी। प्रदेश ने अपनी सौर ऊर्जा नीति व जैव ऊर्जा नीति समय से प्रख्यापित करके हरित ऊर्जा के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बन गया। यह जानकारी साझा करते हुए ऊर्जा एवं नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने बताया कि हम सोलर और हाइड्रो पावर के साथ-साथ थर्मल पावर व बायोपावर का उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

ऊर्जा मंत्री गुरुवार को राजधानी लखनऊ के सेट्रम होटल में पर्यावरण पर आधारित नेट जीरो सम्मिट को सम्बोधित कर रहे थे। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि हम अपने घरों की छतों, कम उपयोगी जमीनों तथा राजमार्गों के किनारे सोलर प्लांट लगवा सकते हैं। इसके लिए राज्य सरकार व केंद्र सरकार द्वारा सब्सिडी भी दी जा रही है तथा बैंकों द्वारा ऋण भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

संबोधित करते ऊर्जा मंत्री एके शर्मा।

सौर ऊर्जा अपनाकर हम न सिर्फ अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, बल्कि आर्थिक लाभ भी अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अयोध्या प्रदेश की पहली सोलर सिटी के रूप में विकसित की गई है। यहां की स्ट्रीट लाइट सर्किट, हाउस सोलर ऊर्जा से संचालित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त यहां सोलर ऊर्जा द्वारा मोटर वोट भी संचालित की जा रही है।

ऊर्जा मंत्री ने कहा कि हम हरित ऊर्जा के तीव्र विकास के साथ प्रति व्यक्ति ऊर्जा उपभोग की दर को भी बढ़ा रहे हैं और इसके लिए आवश्यकतानुसार थर्मल पावर की उत्पादन क्षमता बढ़ाने का भी कार्य किया गया है। उन्होंने बताया कि बीते तीन वर्षों में हमने पनकी, ओबरा, जवाहरपुर, घाटमपुर और खुर्जा में लगभग 4700 मेगावाट की पांच थर्मल पावर परियोजनाएं लगाई गई हैं। जिनमें उत्पादन शुरू हो गया है तथा 6000 मेगावाट की परियोजनाएं प्रस्तावित हैं। वर्तमान में प्रदेश की कुल विद्युत उत्पादन क्षमता लगभग 21000 मेगावाट है, जो वर्ष 2017 के सापेक्ष लगभग दो गुना है, इसमें थर्मल, सोलर व हाइड्रोपावर भी शामिल है।

एमएसएमई सेक्टर की आवश्यकता बनेगी ग्रीन एनर्जी

ऊर्जा मंत्री ने कहा कि आने वाले कुछ वर्षों में ग्रीन एनर्जी हमारे एमएसएमई सेक्टर की आवश्यकता बन सकती है, इसलिए हमें भावी चुनौतियों के प्रति सजग रहते हुए कार्य करना है। हमारी सरकार पर्यावरण को क्षति पहुचांए बिना ऊर्जा उत्पादन के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन इससे पूर्व हमारा उद्देश्य अपने सभी नागरिकों तक ऊर्जा पहुंच व उपभोग का स्तर बढ़ाना है। एके शर्मा ने कहा कि विद्युत उत्पादन के साथ, विद्युत वितरण में भी उत्कृष्ट कार्य भी हुआ है।

त्योहारों से पहले हो जाएगी बदहाल सड़कों की मरम्मत

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : फेस्टिवल सीजन से पहले उत्तर प्रदेश की बदहाल सड़कों को दुरुस्त करने का काम शुरू हो गया है और उम्मीद की जा रही है कि दीपावली से पहले सड़कों की सूरत बदल जाएगी।

दरअसल, पीडब्ल्यूडी ने सड़कों के गड्ढे भरने की कवायद तेज कर रखी है। दीपावली से पहले 50 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों को गड्ढामुक्त कर दिया जाएगा। इसके लिए सरकार ने 400 करोड़ रुपये की धनराशि की व्यवस्था भी कर दी है। दरअसल, इस बार जोरदार बारिश से सड़कों की हालत बदहाल हो गई है। ऐसे में प्रदेश में दुर्गा पूजा मार्ग 22 सितंबर से पहले चाकचौबंद करने के निर्देश हैं। लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत करीब 1.22 लाख सड़कें हैं, जिनकी कुल लंबाई 2.70 लाख किमी है। तमाम मंडलों से सामने आई रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 50 हजार किमी सड़कों में गड्ढे हैं, जिन्हें दमकाया जाएगा।

न्यूज ब्रीफ

अब ऑटोमेटेड फैट एनालाइजर से जांच

अमृत विचार, लखनऊ : खाद्य पदार्थों में मिलावट की बढ़ती समस्याओं को लेकर खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (एफएसटीए) ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। प्रशासन अब सात ऑटोमेटेड फैट एनालाइजर खरीदेगा, जिनकी मदद से खाद्य पदार्थों में वसा की सटीक और तेज जांच की जा सकेगी। यह कदम खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या पर काबू पाने और उपभोक्ताओं की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उठाया गया है। इसके लिए राज्य सरकार ने 68 लाख 60 हजार का बजट स्वीकृत कर दिया है। एफएसडीए के प्रमुख सचिव रंजन कुमार ने बताया कि खरीदे जाने वाले ऑटोमेटेड फैट एनालाइजर राजकीय जन विशलेषक प्रयोगशालाओं में लगेंगे, जिसके बाद जांच प्रक्रिया को गति मिलेगी।

दो अधिकारी निलंबित

अमृत विचार, लखनऊ : उत्तर प्रदेश सरकार ने राजस्व हानि और रिश्वतखोरी में राज्य कर के दो वरिष्ठ अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की है। अपर आयुक्त ग्रेड-दो (अपील) पंचम कानपुर अरुण शंकर राय और सहायक आयुक्त राज्य कर खंड-एक रामपुर सतीश कुमार को गुरुवार को निलंबित कर दिया गया। अरुण शंकर राय पर आरोप है कि उन्होंने नोएडा में तैनाती के दौरान अल्ट्रा होम, आम्रपाली और हाईटेक सिटी डेवलपर्स के 2009-10 से 2013-14 तक के वैट वादों में जानबूझकर त्रुटिपूर्ण निर्णय लिए। इन फैसलों से राज्य को 10 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व नुकसान हुआ। निलंबन अवधि में उन्हें अपर आयुक्त ग्रेड-एक, झांसी कार्यालय से संबद्ध किया गया है।

नेपाल से सटे सात जिले संवेदनशील घोषित

जिलों में दो-दो कंपनी पीएसी के अलावा अतिरिक्त फोर्स भी तैनात

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- एसएसबी की 170 चेक पोस्ट पर तैनाती बढ़ी, ट्रांजिट प्वाइंट पर अफसर तैनात
- ड्रोन से रखी जा रही नजर मुख्यमंत्री ने दिया पुलिस को 24 घंटे अलर्ट रहने का निर्देश

अमृत विचार : यूपी सरकार ने नेपाल से सटे सभी जिलों को संवेदनशील घोषित किया है। ऐसे सात जिले हैं, जहां दो-दो कंपनी पीएसी तैनात करने के अलावा अतिरिक्त फोर्स भी लगाई गई है। महराजगंज, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी और पीलीभीत जिलों में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी), स्थानीय पुलिस और खुफिया एजेंसियों को उच्च स्तर की सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सुरक्षा तंत्र को 24 घंटे अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं। वहीं, तमाम ट्रांजिट प्वाइंट पर एसएसबी के अफसर भी तैनात हैं। इस बीच नेपाल के मौजूदा राजनीतिक हालात के बीच वहां की जेलों से फरार 12 कैदियों को एसएसबी और यूपी पुलिस ने विभिन्न बॉर्डर से गिरफ्तार किया है। इस संबंध में आईबी के माध्यम से एसएसबी ने गृह मंत्रालय से गाइडलाइन भी मांगी है। आईबी ने इसकी सूचना उप्र. पुलिस महानिदेशक कार्यालय और मुख्यमंत्री कार्यालय को भी भेजी है। यूपी के पर्यटक अब भी नेपाल में फंसे हुए हैं। इनमें कानपुर के गोविंद नगर के रहने वाले अमनदीप और सौरभ हैं। अयोध्या के भी वहां फंसे लोगों के बारे में गोसाईगंज विधायक अभय सिंह ने पीएम कार्यालय को पत्र लिखकर जानकारी दी है। झांसी से नेपाल चार युवकों को वहां सेना ने सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया है। नेपाल में भड़की हिंसा का प्रभाव उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश की परिवहन सेवाओं पर भी पड़ा है।

कर्ता के प्रति कृतज्ञता धर्म का पहला संस्कार: योगी

महंत दिग्विजयनाथ व अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि समारोह का समापन

गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में महंत दिग्विजयनाथ एवं अवेद्यनाथ महाराज के पुण्यतिथि समारोह के अवसर पर उपस्थित मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कर्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना सनातन धर्म का पहला संस्कार है। यह विचार उन्होंने युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी की 56वीं और राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी की 11वीं पुण्यतिथि पर आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के समापन पर गुरुवार को व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने रामायणकालीन हनुमानजी और मैनाक पर्वत के संवाद 'कृते च कर्तव्यम एषः धर्म सनातनः' का उदाहरण देते हुए कहा कि सनातन परंपरा में पूर्वजों और गुरुओं के प्रति कृतज्ञता का भाव सर्वोपरि है। गोरक्षपीठ में महंतद्वय की पुण्य स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम इसी भाव का प्रतीक है। सीएम योगी ने महंतद्वय के शिक्षा, सेवा और राष्ट्रीयता के क्षेत्र में योगदान को याद किया। महंत दिग्विजयनाथ जी ने 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर शिक्षा के नए आयाम खोले और महंत अवेद्यनाथ जी ने इसे आगे बढ़ाया। मुख्यमंत्री ने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण में महंतद्वय के योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि महंत अवेद्यनाथ जी समाज में समानता और सामाजिक समरसता बनाए रखने में जीवनभर लगे रहे और अस्पृश्यता के खिलाफ आवाज उठाई।

बलिया में गैर इरादतन हत्या के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार किए

बलिया, एजेंसी

जिले के बांसडीह थानाक्षेत्र में पिछले दिनों बेरहमी से पिटाई करने के बाद युवक पर तेजाब डालकर उसकी कथित तौर पर हत्या करने के मामले में चार आरोपियों को पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

पुलिस के मुताबिक, एक आरोपी ने पूछताछ में खुलासा किया कि जिस युवक की हत्या की गयी वह उसकी बहन को परेशान करता था। पुलिस ने बताया कि बांसडीह थाना क्षेत्र के हुसैनाबाद गांव निवासी राजकुमार तिवारी पर कुछ लोगों ने हमला किया था। राजकुमार की पिटाई करने के बाद उस पर तेजाब डाल दिया गया था। राजकुमार की मंगलवार रात को मऊ के एक अस्पताल में मौत हो गयी थी। पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह ने बताया कि इस सिलसिले में पहले दर्ज किये गये मुकदमे में आपराधिक साजिश और गैर इरादतन हत्या के आरोपों को जोड़ा गया है।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष किए गए नजरबंद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: पुलिस ने गुरुवार को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को उनके घर पर नजरबंद कर लिया। इससे पहले अजय राय ने 11.30 बजे प्रदेश कार्यालय पर पत्रकार वार्ता बुलाई थी। पुलिस ने उन्हें घर से निकलने से पहले रोक लिया। बाद में भी उन्हें घर से नहीं निकलने दिया गया।

दरअसल, कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी दौरे के खिलाफ विरोध प्रदर्शन की योजना बनाई थी। पुलिस की ताजा कार्रवाई प्रधानमंत्री की सुरक्षा के मद्देनजर की गई। इसके अलावा, वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों में लगभग 200 कांग्रेसी और सपा कार्यकर्ताओं को भी हाउस अरेस्ट किया गया। हालांकि, अजय राय ने तर्क दिया कि अगर उनका इरादा व्यक्तिगत रूप से पीएम मोदी का विरोध करना होता, तो वे वाराणसी में होते, न कि लखनऊ में।

लखनऊ में हाउस अरेस्ट किए गए अजय राय। अमृत विचार

- प्रधानमंत्री के वाराणसी दौरे पर कांग्रेस-सपा कार्यकर्ताओं के विरोध-प्रदर्शन की थी आशंका

घोटाले का आरोपी बैंक मैनेजर पटना से गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- 2007-08 में सोनभद्र के किसानों के लिए भेजी गई थी राहत राशि

अमृत विचार : आर्थिक अपराध अनुसंधान संगठन (ईओडब्ल्यू) की टीम ने सूखा राहत अनुदान में घोटाला करने वाले बैंक मैनेजर को पटना स्थित इंडियन बैंक से गुरुवार की दोपहर गिरफ्तार किया है। यह धनराशि प्रदेश सरकार ने 2007-08 में सूखा अनुदान योजना के तहत सोनभद्र के घोरावल तहसील के किसानों के लिए भेजी थी। इस मामले में 2010 में घोरावल थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी।

ईओडब्ल्यू के अधिकारी के मुताबिक, आरोपियों ने यह भुगतान 16 चेक के माध्यम से किया गया था। जिस पर तहसीलदार के फर्जी दस्तखत किये गये थे। विभागीय जांच में तत्कालीन कानूनगो, इलाहाबाद बैंक के मैनेजर समेत चार लोगों की संलिप्तता पाई गई थी। ईओडब्ल्यू ने इस मामले में तीन लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी थी, जबकि बैंक मैनेजर की तलाश की जा रही थी। आरोपी को भ्रष्टाचार निवारण कोर्ट वाराणसी में पेश किया गया। जहां से जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार बैंक मैनेजर विजेंद्र चौधरी बिहार के पटना स्थित दीघा घाट का रहने वाला है।

वाराणसी में होगा अंतर्राष्ट्रीय टूरिज्म एक्सपो

अमृत विचार, लखनऊ : देश की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में आगामी दिसंबर माह में इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (आईआईए) की ओर से आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय टूरिज्म व हॉस्पिटैलिटी एक्सपो की शुरुआत केंद्रीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत करेंगे।

आईआईए के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश गोयल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने गुरुवार को मंत्री से उनके दिल्ली स्थित आवास पर भेंट कर उन्हें इस एक्सपो की शुरुआत के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। प्रतिनिधिमंडल में टूरिज्म एवं हॉस्पिटैलिटी कमेटी के चेयरमैन राहुल मेहता, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य विशारद गौतम व गजेंद्र सिंह शामिल थे।

सारिका बनीं वेतन आयोग समिति की अध्यक्ष

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश सरकार ने वेतन आयोग समिति में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल किया है। शासन ने शाहिद मंजर अब्बास रिजवी की सेवानिवृत्ति के बाद सारिका मोहन, सचिव, वित्त को समिति का नया अध्यक्ष नियुक्त किया है। समिति के अन्य सदस्यों में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार की ओर से जारी संशोधित आदेश के अनुसार, समिति के अन्य सदस्य यथावत रखे गए हैं। इनमें दो सदस्य पंकज कुमार, विशेष सचिव, वित्त और संबंधित व्यय नियंत्रण अनुभाग के विशेष सचिव कार्य करते रहेंगे। यह संशोधन मूल रूप से 20 जुलाई, 2022 को जारी शासनादेश में किया गया है।

चुनाव में धांधली की योजना बना रही भाजपा

सपा प्रमुख ने आगरा, मथुरा व हाथरस के पदाधिकारियों की बैठक को किया संबोधित

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लखनऊ स्थित पार्टी मुख्यालय में सपा प्रमुख अखिलेश यादव को सम्मानित करते पदाधिकारी व कार्यकर्ता।

अमृत विचार : 2027 चुनाव की तैयारी में अभी से जुट जाने का आह्वान करते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपने कार्यकर्ताओं को भाजपा की साजिशों के प्रति सावधान किया। उन्होंने कहा कि भाजपा लोकतंत्र के विरुद्ध चुनावों में धांधली की योजना बनाने की रणनीति पर काम कर रही है। इसलिए प्रत्येक कार्यकर्ता को सक्रिय, सतर्क और सावधान रहना होगा।

पार्टी मुख्यालय में सपा प्रमुख ने गुरुवार को आगरा, मथुरा और हाथरस के पदाधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सपा सरकार में आगरा, हाथरस एवं मथुरा के विकास के लिए तमाम योजनाएं शुरू की गई थीं, जो भाजपा सरकार में अब बर्बाद हो गई हैं। सपा का 2027 के चुनावों में इन तीनों जिलों का अलग घोषणा पत्र होगा, जिसमें नई विकास योजनाओं की घोषणा होगी।

उन्होंने कहा सपा का लक्ष्य सामाजिक न्याय के राज की स्थापना करना है। अखिलेश यादव ने कहा कि मतदाता सूची में कोई गड़बड़ी न हो, इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

पुरानी पेंशन पर राहुल का आश्वासन

कांग्रेस नेता से रायबरेली मिलने पहुंचा इप्सेफ का प्रतिनिधिमंडल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : नेता विरोधी दल एवं सांसद राहुल गांधी ने देशभर के कर्मचारियों की कठिनाइयों एवं समस्याओं को दूर कराने का वादा किया। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों के संघर्ष में पूरा सहयोग किया है और करते भी रहेंगे। राहुल गांधी ने यह अश्वासन गुरुवार को रायबरेली में मुलाकात करने आए इंडियन पब्लिक सर्विस इंप्लाइज फेडरेशन (इप्सेफ) के 10 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को दिया।

यह जानकारी इप्सेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीपी मिश्र ने दी। उन्होंने बताया कि एनटीपी गेस्ट हाउस में

राहुल गांधी से मुलाकात कर समस्या बताता इप्सेफ का प्रतिनिधिमंडल।

प्रतिनिधिमंडल ने राहुल गांधी को अवगत कराया कि इप्सेफ की मांगों पर केंद्र सरकार ने आठवें वेतन आयोग की घोषणा तो कर दी, परंतु इसका गठन न होने से इसका लाभ 1 जनवरी, 2026 से मिल पाना संदिग्ध लगता है। 50 प्रतिशत से ज्यादा डीए हो जाने पर 50 प्रतिशत डीए मर्जर भी केंद्र सरकार ने नहीं किया है। पुरानी पेंशन को बहाल करने का वादा तो किया था, परंतु अभी तक बहाली नहीं की गई। केंद्र सरकार ने एनपीएस-यूपीएस के रूप में पेंशन देने का निर्णय किया है, जो स्वीकार्य नहीं है। उप महासचिव अतुल मिश्र ने बताया कि राहुल गांधी ने आश्वासन देते हुए कहा कि जहां उनके दल की सरकार है, वहां के मुख्यमंत्री से कहेंगे कि कर्मचारी संगठनों से मिलकर बातचीत करके कर्मचारियों की समस्याओं का निवारण करें।

पर्यटन विभाग की पेंटिंग प्रतियोगिता 17 से

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- प्रतियोगिता के विजेताओं को मिलेगी नकद राशि व प्रमाण पत्र

अमृत विचार : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा-2025 मनाया जाएगा। यह पखवाड़ा, प्रदेश में विकसित भारत की परिकल्पना के साथ मनाया जाएगा।

गोमती नगर स्थित पर्यटन भवन में संस्कृति मंत्री ने अब तक आवंटित बजट के कम उपयोग किए जाने पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए निर्देशित किया कि विभागीय योजनाओं, कार्यक्रमों आदि को क्रियान्वित करते हुए बजट का उपयोग करें। जयवीर सिंह ने यह भी निर्देश दिए कि इस विशेष पखवाड़ा के अंतर्गत सभी जिलों में जनसहभागिता के साथ

बैठक करते मंत्री जयवीर सिंह।

चित्रकला, प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। आयोजित की जाने वाली चित्रकला प्रतियोगिताओं के माध्यम से विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत एवं डिजिटल भारत की परिकल्पना को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि जिला स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिताएं तीन वर्गों जूनियर वर्ग कक्षा (09-12) एवं सीनियर वर्ग स्नातक एवं परास्नातक एवं सामान्य वर्ग में आयोजित की जाएंगी। इस प्रतियोगिता में किसी भी आयु का चित्रकला-कला प्रेमी प्रतिभाग कर सकता है।

प्रतियोगिताओं में पेंटिंग्स में से प्रत्येक वर्ग की उत्कृष्ट तीन पेंटिंग्स प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा। तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये, 21 हजार रुपये और 11 हजार रुपये एवं प्रमाण पत्र भी प्रदान किए जाएगे। इसके लिए सभी जिलाधिकारियों एवं समस्त मंडलायुक्तों को निर्देश जारी किए जाएंगे।

न्यूज ब्रीफ

पीएम का अभद्र वीडियो अपलोड करने में एक गिरफ्तार

रायबरेली, एजेंसी : जिले में एक व्यक्ति को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एआई-जनित अभद्र वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड करने के आरोप में हिरासत में लिया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि मामले का संज्ञान लेते हुए पुलिस ने तुरंत कार्रवाई की और बछरावां थाना क्षेत्र के बन्नावा गांव निवासी आरोपी को हिरासत में ले लिया। रायबरेली पुलिस ने कहा कि आरोपी की पहचान दुर्गेश कुमार के रूप में हुई है, जिसने एआई-जनित वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित किया था। उसे हिरासत में ले लिया गया है और अबअदालत में पेश किया जाएगा।

हेलमेट न पहनने पर कार मालिक पर जुर्माना

गाजियाबाद, एजेंसी : गाजियाबाद में एक कार मालिक पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत हेलमेट न पहनने के लिए 1,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया। हालांकि, पुलिस ने इसे मानवीय भूल बताया है। यह मामला उस वक्त सुर्खियों में आया जब सोशल मीडिया पर एक चालान वायरल हुआ, जिसमें दोपहिया वाहन के उल्लंघन का उल्लेख था लेकिन तस्वीर एक कार की थी। यह तस्वीर स्थानीय पंजीकरण संख्या वाली कार की थी। अधिकारियों ने बताया कि एक यातायात उप-निरीक्षक ने नो-पार्किंग क्षेत्र में खड़ी कार की तस्वीर खींची थी, लेकिन अनजाने में वह तस्वीर दोपहिया वाहन के चालान पर लग गई।

समाज कल्याण अधिकारी ने लगाई फांसी

प्रतापगढ़, एजेंसी : प्रतापगढ़ में 38 वर्षीय जिला समाज कल्याण अधिकारी ने गुरुवार को अपने घर पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस के मुताबिक यह घटना जिले के पूरे केशवराय गांव में घटी। थाना कोतवाली नगर के प्रभारी निरीक्षक नीरज कुमार यादव ने बताया कि आशीष कुमार सिंह (38) आजमगढ़ में जिला समाज कल्याण अधिकारी के पद पर तैनात थे और छुट्टी लेकर पूरे केशवराय गांव में अपने घर आए थे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि आशीष आज सुबह आजमगढ़ के लिए निकलने वाले थे, तभी सुलतानपुर में मायके में रह रही उनकी पत्नी का फोन आया और बातचीत के बाद वह कमरे में गए और फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

जमीन के विवाद में बेटे ने की पिता की वैन से कुचल कर हत्या

संवाददाता, औरैया

- हत्यारोपी बेटे की तलाश में जुटी पुलिस

अमृत विचार: कस्बे में बुधवार देर शाम जमीन के विवाद में सेवानिवृत्त सैनिक को उसके ही बेटे ने कार से कुचल दिया। परिजन उन्हें इलाज के लिए सीएचसी अयाना ले गए। वहां डॉक्टर ने उनको मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना स्थल पर छानबीन की है।

अयाना निवासी सेवानिवृत्त सैनिक रमेश चंद्र पाल (85 वर्ष) की पहली पत्नी माया देवी के दो बेटे मोती सागर, किरन कुमार हैं। माया देवी की मौत के बाद रमेश चंद्र ने सिया देवी से दूसरी शादी कर ली थी। दूसरी शादी के तीन बेटे पदम, जगदेव, शिव विजय हैं। मोती सागर के बेटे अंकित ने बताया कि बाबा ने घर में जमीन का हिस्सा बांट दिया था। इसके बाद से चाचा पदम कम हिस्सा मिलने और पेंशन के रुपयों को लेकर घर में आए दिन झगड़ा करते थे। बुधवार दोपहर चाचा ने बाबा से जमीन को लेकर विवाद किया था। देर शाम बाबा घर के पास स्थित तालाब किनारे टहलने गए थे। वहां से घर लौटने के दौरान चाचा पदम ने वैन से बाबा को कुचल दिया।

स्टार्टअप, आईटी, हेल्थ और इंश्योरेंस विषय पर विशेषज्ञों की होगी भागीदारी

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो बनेगा ज्ञान और निवेश का महामंच

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- युवाओं और उद्यमियों को मिलेगा लाभ, लुभाएगा खादी फैशन शो

अमृत विचार : प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआईटीएस) 2025 इस बार केवल उत्पाद और निवेश तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि नॉलेज सेशन के जरिए प्रदेश के विकास के नए मार्ग भी प्रदर्शित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए स्टार्टअप, आईटी, मेडिकल हेल्थ, इंश्योरेंस, ई-कॉमर्स और स्किल डेवलपमेंट जैसे विषयों पर विशेषज्ञ अपने अनुभव साझा करेंगे। इस वर्ष यूपीआईटीएस को ज्ञान और तकनीक का हब बनाने की तैयारी की गई है। 25 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शो का उद्घाटन करेंगे। उसी दिन शाम 3 बजे से रात 8 बजे तक बी2सी विजिटर्स के लिए शो खुला रहेगा। 26 से 29 सितंबर तक प्रतिदिन दोपहर 11 बजे से 3 बजे तक बी2बी और शाम 3 से 8 बजे तक बी2सी मीटिंग्स आयोजित की जाएंगी।

नॉलेज सेशन 26 सितंबर से शुरू होकर 28 सितंबर तक चलेगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बार-बार कहा है कि उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाने में ज्ञान, नवाचार और तकनीक की अहम भूमिका होगी। इसी दिशा में आयोजित इन सत्रों और वर्कशॉप्स से स्टार्टअप्स, उद्यमियों और निवेशकों को नए अवसर मिलेंगे।

स्टार्टअप और आईटी सेक्टर पर चर्चा

26 सितंबर को सुबह 11.30 से 12.30 बजे तक एकेटीयू का सत्र होगा, जिसका विषय होगा – "वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी में स्टार्टअप इकोसिस्टम का योगदान।" दोपहर 1 बजे से 2 बजे तक आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स पर केंद्रित यूपी-यूपीएलसी सत्र आयोजित होगा।

स्वास्थ्य और वित्त पर गहन विमर्श

26 सितंबर को मेडिकल हेल्थ वेलफेयर विभाग वायरल हेपेटाइटिस और प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना पर वर्कशॉप करेगा। वहीं आईआरडीएआई और एक्सिस मैक्स लाइफ इंश्योरेंस नॉन-लाइफ एवं हेल्थ इंश्योरेंस पर अवेयरनेस सेशन आयोजित करेंगे। वित्त विभाग और लाइफ इंश्योरेंस पर भी अलग-अलग सत्र होंगे।

शहरी विकास, ई-कॉमर्स और स्किल डेवलपमेंट

27 सितंबर को अर्बन डेवलपमेंट, मेडिकल हेल्थ और ई-कॉमर्स जैसे विषयों पर विशेषज्ञ अनुभव साझा करेंगे। यूनिवर्सिटी एमओयू कार्यक्रम और खादी फैशन शो भी होगा। 28 सितंबर को इंडस्ट्री-एकेडमिया टाईअप फॉर स्किल डेवलपमेंट पर सत्र होगा। 29 सितंबर को समापन अवार्ड्स समारोह के साथ होगा।

पुलिस की पिटाई से दिव्यांग कार्यकर्ता की मौत

गाजीपुर : लाइट बंद कराकर बरसाई लाठियां, थाना इंचार्ज समेत 6 पुलिसकर्मी निलंबित, 5 लाइन हाजिर

गाजीपुर, एजेंसी

सियाराम उपाध्याय।

- परिवार ने पुलिस पर बेरहमी से पीटने का लगाया आरोप

जिले में पुलिस लाठीचार्ज में एक दिव्यांग भाजपा कार्यकर्ता की मौत हो गई। हालाकि पुलिस ने लाठीचार्ज से इनकार किया है और पूरे मामले की जाँच कर कार्रवाई किए जाने की बात कही है। दरअसल मृतक, सियाराम उपाध्याय उर्फ जोखू (35), रुकुंदीपुर गाँव का निवासी था। मंगलवार रात नोनहरा थाना परिसर में धरने के दौरान कथित तौर पर घायल होने के बाद, गुरुवार तड़के लगभग 3 बजे उसकी मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने दावा किया कि पुलिस ने लाठीचार्ज करने से पहले रात लगभग 1.30 बजे जानबूझकर बिजली आपूर्ति काट दी, जिसमें सात-आठ लोग घायल हो गए। इस मामले में एसपी डा. ईरज राजा ने कहा, परिजनों की मांग पर मजिस्ट्रियल जांच कराई जाएगी। साथ ही पोस्टमॉर्टम के लिए शव भेजा गया है। उन्होंने कहा कि इस मामले में थाने के कुल 11 पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की गई है। जिनमें थाना इंचार्ज समेत 6 पुलिसकर्मी निलंबित और 5 पुलिसकर्मी लाइन हाजिर किए गए हैं। पुलिस अधीक्षक ईरज राजा ने बताया कि नोनहरा क्षेत्र में नौ सितंबर को एक प्रकरण संज्ञान में आया था जिसमें एक ग्राम प्रधान और एक पूर्व प्रधान के बीच बिजली के खंभे लगाने को लेकर विवाद था। राजा के अनुसार इसके बाद एक पक्ष के 20-25 लोग थाने में आकर बैठ गए थे। उन्हें बहुत समझाया गया। मगर वे नहीं माने। रात में बिजली जाने के कारण कुछ अफरातफरी मची और इसके कारण इनको तत्काल वहां से जाने को कहा गया तो फिर इसके बाद वे लोग वहां से चले गए थे। कोई लाठीचार्ज नहीं हुआ था।

उपाध्याय के परिवार ने पुलिस पर उसे बेरहमी से पीटने का आरोप लगाया है और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। उनके पिता गिरजा उपाध्याय और भाभी नीतू उपाध्याय ने कहा कि वे सरकार से न्याय चाहते हैं और दोषी अधिकारियों के खिलाफ औपचारिक मामला दर्ज किया जाना चाहिए। इस बीच, जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश राय सहित स्थानीय भाजपा नेता रुकुंदीपुर पहुँचकर परिवार को सांत्वना दी। राय ने उपाध्याय को एक समर्पित पार्टी कार्यकर्ता" बताया और वादा किया कि "परिवार की सभी माँगें पार्टी द्वारा पूरी की जाएँगी। उन्होंने इसमें शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की माँग की, लेकिन भाजपा को विरोध प्रदर्शन से दूर रखने का ध्यान रखा और इसे दो व्यक्तियों के बीच का विवाद बताया। हालांकि, पुलिस ने किसी भी दुर्व्यवहार से इनकार किया है। पुलिस अधीक्षक डॉ. इराज राजा ने एक वीडियो बयान जारी कर कहाः कि 9 सितंबर को नोनहरा थाने पर पुलिस द्वारा कोई लाठीचार्ज नहीं किया गया था। प्रदर्शनकारी बिजली कटौती के दौरान वहाँ जमा हुए थे। पुलिस कार्रवाई के कारण एक युवक की मौत होने के आरोप की जाँच चल रही है। पोस्टमार्टम किया जा रहा है, और आगे की कानूनी कार्रवाई निष्कर्षों पर निर्भर करेगी। बताया गया कि भाजपा कार्यकर्ता अपनी मांगों को लेकर थाने गए थे। सुनवाई न होने पर वहीं पर धरने पर बैठ गए। इसी दौरान अचानक लाइट चली गई। पुलिस ने बीजेपी कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज कर दी। उन्हें दौड़ा-दौड़ाकर जमकर पीटा। पिटाई में घायल बीजेपी कार्यकर्ता सियाराम उपाध्याय की गुरुवार को मौत हो गई। वह दिव्यांग थे। लाठीचार्ज के दौरान वह भाग नहीं पाए और गिर पड़े। परिजनों का आरोप है पुलिस ने उन्हें बेरहमी से पीटा था। पूरा शरीर काला पड़ गया था। सियाराम उपाध्याय की पीठ, पैर और अन्य जगह चोट के गंभीर निशान थे। किसी तरह वह अपने घर पहुंचे। दो दिन से उनका इलाज चल रहा था।

गुरुवार सुबह उनकी मृत्यु हो गई। सियाराम के पिता गिरिजा उपाध्याय ने बताया– मेरा बेटा दिव्यांग था। थाने पर धरने पर बेटा गया हुआ था। लौट के आया तो उसे काफी चोट लगी थी। मां मालती देवी ने कहा- मेरा बेटा नोनहरा थाने गया था। किसके साथ गया था, यह मुझे नहीं जानकारी नहीं है। वहां पुलिस ने लाठी चलाई। सब लोग भाग गए, लेकिन मेरा बेटा भाग नहीं पाया। लाठीचार्ज के दौरान बेटे को बुरी तरह से पीटा गया।

सियाराम के साथ गए मिंटू सिंह ने बताया- हम 40-50 लोग अपनी समस्या को लेकर थाने पर धरने पर बैठ थे। हम सभी वहां एक बजे रात तक धरना देते रहे। करीब डेढ़ बजे एसओ ने कप्तान से आदेश लेकर हम लोगों पर लाठीचार्ज कर दिया। सबको बहुत चोट आई।लाठीचार्ज के दौरान लाइट काट दी गई थी। गेट बंद कर दिया गया था। घेर कर पुलिसवालों ने हम लोगों को मारा। करीब 25-30 पुलिसकर्मियों ने पीटा। मुझे थाने के अंदर ले जाकर मारा गया। सबको कहीं न कहीं चोट आई है। सियाराम भागते समय गिर गए थे।

इन पुलिसकर्मियों पर हुई कार्रवाई

थाना प्रभारी निरीक्षक वेंकटेश तिवारी, दरोगा अवधेश कुमार राय, हेड कॉन्स्टेबल नागेंद्र सिंह यादव, सिपाही धीरज सिंह, अभिषेक पांडेय व राकेश कुमार। लाइनहाजिर-दरोगा कमलेश गुप्ता, जुल्फिकार अली, सिपाही मुलायम सिंह, राघवेंद्र मिश्र व राजेश कुमार।

हाईकोर्ट ने शिक्षा निदेशक का आदेश निरस्त किया

विधि संवाददाता, नैनीताल

- नई भर्ती में एनओसी जारी न करने को कहा गया था आदेश में

अमृत विचार: उत्तराखंड हाईकोर्ट के वरिष्ठ न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ ने शिक्षा निदेशक (प्राथमिक) द्वारा जारी उस आदेश को रद्द कर दिया है, जिसके तहत जिला शिक्षा अधिकारियों को यह निर्देश दिया गया था कि वे पहले से कार्यरत सहायक अध्यापकों को नई भर्ती में शामिल होने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी न करें।

एकलपीठ ने यह आदेश सुधांशु जौहरी एवं अन्य बनाम राज्य सरकार सहित चार याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिया। याचिकाकर्ताओं ने वर्ष 2021 में हुई चयन परीक्षा में सहायक अध्यापक पद पर नियुक्ति पाई थी और जनवरी 2022 में अलग-अलग जिलों में पदस्थापित हुए। पहाड़ी व दूरस्थ क्षेत्रों में तैनाती के कारण कई अध्यापक सुगम क्षेत्रों में सेवा करना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने पुनः चयन परीक्षा में सम्मिलित होने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्हें एनओसी आवश्यक थी लेकिन निदेशक प्राथमिक शिक्षा ने सभी जिलों के जिला शिक्षाधिकारियों को 27 जुलाई 2024 को परिपत्र जारी कर ऐसे शिक्षकों को नई भर्ती प्रक्रिया में शामिल होने के लिये एनओसी जारी न करने को कहा था। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय का पद जिला कैडर पद है और इसकी नियुक्ति का अधिकार जिला शिक्षा अधिकारी के पास है। ऐसे में एनओसी जारी करने का निर्णय भी जिला शिक्षा अधिकारी का ही होना चाहिए, निदेशक शिक्षा का इसमें हस्तक्षेप असंवैधानिक और नियमविरुद्ध है।

राज्य सरकार की ओर से तर्क दिया गया कि कर्मचारी को एनओसी प्राप्त करने का कोई मूल अधिकार नहीं है और नियोक्ता चाहे तो एनओसी देने से मना कर सकता है परंतु न्यायालय ने स्पष्ट किया कि भर्ती नियमों के अनुसार नियुक्ति का अधिकार जिला शिक्षा अधिकारी के पास है, अतः एनओसी पर अंतिम निर्णय भी वही लेंगे। अदालत ने कहा कि निदेशक शिक्षा का 27 जुलाई 2024 का आदेश भर्ती नियमों के विपरीत है और इसे कानून की दृष्टि में बरकरार नहीं रखा जा सकता। न्यायालय ने उक्त आदेश को निरस्त कर दिया है।

अब फिर से दरक रहीं नैनीताल की पहाड़ियां, नागरिकों की बढ़ी चिंता

संवाददाता, नैनीताल

सुरक्षा को देखते हुए बैरिकेडिंग कर सड़क को किया गया बंद। ● अमृत विचार

- सात नंबर क्षेत्र में सड़क पर जगह-जगह पड़ीं दरारें
- सावधानी बरतने के लिए प्रशासन ने लगाई बैरिकेडिंग

अमृत विचार: सरोवर नगरी के अस्तित्व पर एक बार फिर से खतरा मंडराने आने लगा है। शहर के सात नंबर चार्टन लॉज की पहाड़ियों में भूस्खलन होने लगा है। इससे अब स्थानीय लोगों की चिंताएं बढ़ गई हैं। क्षेत्र में सड़क में पड़ी दरार के बाद अब प्रशासन ने बैरिकेडिंग लगाकर सड़क को बंद कर दिया है।

पहाड़ी में हो रहे भूस्खलन और भूधंसाव का असर अब शहर की माल रोड पर दिखने लगा है। जगह-जगह माल रोड पर भी दरारें उभरने लगी हैं। जिससे नैनीताल की लोअर माल रोड पर भी अब बड़ा खतरा दिखने लगा है।

नैनीताल में मंडरा रहे बड़े खतरे को देखते हुए जिलाधिकारी वंदना सिंह ने लोक निर्माण विभाग और सिंचाई विभाग की संयुक्त टीम बनाई। जिसने क्षेत्र का स्थल निरीक्षण किया है। जिलाधिकारी ने बताया संयुक्त टीम ने क्षेत्र का निरीक्षण किया है। टीम की प्राइमरी रिपोर्ट के आधार पर क्षेत्र में काफी बड़ा डैमेज है। धीरे-धीरे से पहाड़ी खिसक रही है। वह भविष्य के लिए काफी बड़ा खतरा हो सकता है। गंभीरता को देखते हुए तात्कालिक और दर्घकालिक सुरक्षात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। ताकि क्षेत्र में काम किया जा सके। जिसके आधार पर जनपद स्तर पर क्षेत्र का स्थाई उपचार किया जाएगा। विस्तृत कार्य के लिए शासन स्तर पर कार्य किए जाएंगे। उधर, दरारों की वजह से नागरिकों की चिंताएं बढ़ गई हैं। उन्होंने सुरक्षात्मक कार्य कराने की मांग की है।

राष्ट्र ध्वज की आपत्तिजनक तस्वीर अपलोड करने के आरोपी को जमानत से इनकार

प्रयागराज, एजेंसी

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फेसबुक पर राष्ट्र ध्वज की आपत्तिजनक तस्वीर अपलोड करने के आरोपी की जमानत याचिका खारिज कर दी है। आरोपी ने एक ऐसी तस्वीर अपलोड की जिसमें तिरंगा झंडा पर एक कुत्ता बैठा हुआ दिखाया गया है। साथ ही उसने पाकिस्तान के पक्ष में नारेबाजी भी पोस्ट की थी। वसिक त्यागी नामक याचिकाकर्ता की जमानत याचिका खारिज करते हुए न्यायमूर्ति संजय कुमार सिंह ने कहा कि ऐसा पोस्ट भड़काऊ, आपत्तिजनक और सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने वाला था और राष्ट्र ध्वज की छवि खराब करने वाला व्यक्ति किसी तरह की सहानुभूति के योग्य नहीं है।

मुजफ्फरनगर के चर्थवाल थाने में 16 मई, 2025 को प्राथमिकी दर्ज की गई जिसमें आरोप लगाया गया है कि वसिक त्यागी ने पाकिस्तान का महिमामंडन करते हुए अपने फेसबुक पेज पर राष्ट्र ध्वज का अपमान किया। प्राथमिकी के अनुसार, याचिकाकर्ता ने फेसबुक पोस्ट में लिखा कि कामरान भट्टी तुम पर गर्व है। पाकिस्तान जिंदाबाद। एक अन्य पोस्ट में उसने राष्ट्र ध्वज की एक तस्वीर लगाई जिसमें तिरंगे पर एक कुत्ते को बैठा हुआ दिखाया गया। प्राथमिकी में आरोप है कि इस पोस्ट से लोगों की भावनाएं आहत हुईं और समुदायों के बीच वैमनस्य पैदा होने की आशंका पैदा हुई।

विवेचना के दौरान, पुलिस ने पता लगाया कि उक्त पोस्ट त्यागी के फेसबुक एकाउंट से प्रसारित किया गया जो उसके मोबाइल नंबर पर पंजीकृत है। मेटा की साइबर रिपोर्ट ने भी इस बात की पुष्टि की कि उक्त पोस्ट से जुड़े आईपी पते का इस्तेमाल त्यागी के मोबाइल नंबर से किया गया। इसके बाद, आरोपी को सात जून, 2025 को गिरफ्तार किया गया और उसका मोबाइल फोन फॉरेंसिक परीक्षण के लिए जब्त किया गया। स्वतंत्र गवाहों ने भी अभियोजन पक्ष की दलीलों का समर्थन किया।

प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड को दी 1200 करोड़ रुपये की तात्कालिक वित्तीय सहायता

मुख्य संवाददाता, देहरादून

देहरादून में गुरुवार को आपदा पीड़ितों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाते प्रधानमंत्री।

अमृत विचार : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तराखंड के आपदाग्रस्त क्षेत्रों के लिए 1200 करोड़ रुपये की तात्कालिक वित्तीय सहायता की घोषणा की है। केंद्रीय टीम द्वारा किए जा रहे नुकसान के विस्तृत आकलन के आधार पर अतिरिक्त सहायता राशि भी प्रदान की जाएगी।

आपदा में दिवंगत लोगों के परिजनों को केंद्र सरकार द्वारा 2-2 लाख एवं घायलों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक मदद की भी घोषणा की। साथ ही, आपदा में अनाथ हुए बच्चों को पीएम केयर फॉर चिल्ड्रन योजना से व्यापक सहायता प्रदान की जाएगी। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत क्षतिग्रस्त घरों के पुनर्निर्माण के लिए विशेष परियोजना चलाई जाएगी। वहीं, सड़कों, विद्यालयों और अन्य ढांचागत पुनर्निर्माण के लिए भी केंद्र सरकार पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।उत्तराखंड में बाढ़ और आपदा से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी गुरुवार शाम करीब चार बजे देहरादून स्थित अटल बिहारी वाजपेयी एयरपोर्ट (जौलीग्रांट एयरपोर्ट) पर विशेष वायुयान से पहुंचे, जहां उनका स्वागत मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया।

इसके बाद, प्रधानमंत्री एयरपोर्ट परिसर के पास बने राज्य अतिथि गृह पहुंचे, जहां उन्होंने राज्यपाल गुरमीत सिंह और मुख्यमंत्री के अलावा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। प्रधानमंत्री को आपदाग्रस्त क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण भी करना था लेकिन मौसम प्रतिकूल होने के कारण इसे स्थगित करना पड़ा लेकिन उन्होंने आपदा प्रभावित इलाकों की विस्तृत प्रेजेंटेशन के जरिए समीक्षा की। बैठक में मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को राज्य में आपदा से हुई क्षति तथा प्रभावित क्षेत्रों में संचालित राहत एवं बचाव कार्यों की जानकारी दी।

आला अधिकारियों ने आपदा के सम्पूर्ण घटनाक्रम का क्रमवार प्रस्तुतिकरण दिया। प्रधानमंत्री ने एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के जवानों और आपदा मित्रों से भी भेंट की। उन्होंने सभी राहत कार्मिकों की हौसला अफजाई की।

खगोलीय घटना | 21 अक्टूबर को पृथ्वी के नजदीक पहुंचने पर नग्न आंखों से देखा जा सकेगा

फेस्टिव सीजन में आसमान में हलचल मचाएगा लेमन धूमकेतु

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार : आने वाले दिनों में ब्रह्मांड का एक और अजूबा धूमकेतु आसमान में हलचल मचाने आ रहा है। यह सूर्य की दिशा में आगे बढ़ रहा है। सी/2025 ए 6 (लेमन) नाम का यह धूमकेतु 21 अक्टूबर को पृथ्वी के करीब से होकर गुजरेगा। इन दिनों दूरबीन से देखा जा सकता है। यह ऐसा समय होगा जब देश भर में दिवाली फेस्टिव सीजन होगा तो आसमान में इसका नजारा बेहद दिलकश होगा।

लेमन धूमकेतु इसी वर्ष तीन जनवरी को पहली बार देखा गया था। इसकी खोज का श्रेय एरिज़ोना विश्वविद्यालय के स्टीवर्ड ऑब्जर्वेटरी स्थित माउंट लेमन ऑब्जर्वेटरी को जाता है। खास बात यह है कि वैज्ञानिक इसके नग्न आंखों से देखे जाने की संभावना जता रहे हैं। फिलहाल इसे दूरबीन के सहारे देखा जा सकता है। दूरबीन से देखे जाने पर यह हरे रंग का नजर आ रहा है। यूरोप के कई वैज्ञानिकों ने इसकी तस्वीरें ली हैं। यह धूमकेतु गैर आवासीय यानी किसी निश्चित स्थान का निवासी नहीं है। इसे सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में लगभग 1350 वर्ष का समय लगता है। पृथ्वी के नजदीक से गुजरने के बाद यह 8 नवंबर को सूर्य के करीब से गुजरेगा। तब इसकी दूरी सूर्य से 0.53 एस्ट्रोनॉमिकल यूनिट (एयू) यानी 79 मिलियन किमी रह जाएगी। यह दूरी इतनी अधिक है कि इसके सूर्य से टकराने की कोई संभावना नहीं है। लिहाजा सुरक्षित अपने पाथ में आगे निकल जाएगा। 21 अक्टूबर को यह पृथ्वी के नजदीक से गुजरेगा तो इसे देख पास अधिक आसान होगा। तब सूर्यास्त के बाद सूर्य से 42 डिग्री की दूरी पर मौजूद होगा। ताजा रिपोर्ट के अनुसार इस धूमकेतु चमक 9.6 परिमाण है। यानी यह इतना धुंधला है कि बिना दूरबीन के देख पाना आसान नहीं होगा। हमारे नजदीक आने पर इसकी चमक बढ़ जाएगी और देख पाना आसान हो जाएगा।

आकर्षक होगा यह नजारा

नैनीताल। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) नैनीताल के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे का कहना है कि लेमन धूमकेतु का नजारा बेहद आकर्षक होगा। इसकी वजह यह है कि यह ऐसे मौके पर पृथ्वी के करीब आ रहा है, जब वातावरण के लिहाज से अक्टूबर का महीना साफ सुथरा होता है। तब इसकी पूंछ भी देखी जा सकेगी। जिस कारण धूमकेतुओं पर अध्ययन करने वाले दुनिया भर के वैज्ञानिकों को इसके करीब आने का बेसब्री से इंतजार है। इसके अध्ययन से धूमकेतुओं के छिपे रहस्यों की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

रामनगर में फिर तीन अवैध मजारों पर चला बुलडोजर

रामनगर, अमृत विचार: अवैध मजारों पर प्रशासन का बुलडोजर एक बार फिर गरजा है। रामनगर के लुटाबड़, शिवलालपुर रियूनिया और चोरपानी क्षेत्र में स्थित तीन मजारों को प्रशासन ने ध्वस्त कर दिया है। यह सभी मजारें नाप भूमि पर थी। किसानों की आपत्ति और शिकायत के बाद इन्हें जमींदोज कर दिया गया। प्रशासन की इस कार्रवाई के दौरान उपजिलाधिकारी रामनगर, तहसीलदार, चौकी इंचार्ज पीरुमदारा सहित अन्य राजस्व और पुलिस कर्मी मौजूद रहे। प्रशासन ने अवैध कब्जा हटाकर भूमि को संरक्षित कराने का कदम उठाया है। बता दें कि रामनगर में अब तक 20 से ज्यादा अवैध मजारों पर प्रशासन का बुलडोजर चल चुका है।

डीएनए जांच का आदेश नियमित ढंग से नहीं दिया जा सकता

प्रयागराज, एजेंसी

- दुष्कर्म मामले में हाईकोर्ट ने एक व्यक्ति की याचिका खारिज की

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक मामले में कहा है कि दुष्कर्म पीड़िता और उसके बच्चे की डीएनए की जांच का आदेश नियमित ढंग से नहीं दिया जा सकता क्योंकि इसके गंभीर परिणाम होते हैं।

अदालत ने रामचंद्र राम नामक एक व्यक्ति की याचिका खारिज कर दी। उसने एक महिला और उसके बच्चे की डीएनए जांच की मांग खारिज किए जाने को चुनौती दी थी। न्यायमूर्ति राजीव मिश्रा ने कहा, कि भादंसं की धारा 376 (दुष्कर्म) के तहत उस बच्चे के पितृत्व का पता लगाने की आवश्यकता नहीं होती। दुष्कर्म पीड़िता और उसके बच्चे के डीएनए की जांच के गंभीर सामाजिक परिणाम होते हैं। बाध्यकारी और अपरिहार्य परिस्थितियां पैदा होने पर ही डीएनए की जांच का आदेश दिया जा सकता है। मौजूदा मामले में याचिकाकर्ता के खिलाफ कई धाराओं के तहत आपराधिक मामला दर्ज किया गया था। जांच के बाद याचिकाकर्ता के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया और मामले में सुनवाई आगे बढ़ी। बाद में पांच गवाहों की गवाही के बाद याचिकाकर्ता ने दुष्कर्म पीड़िता और उसके बच्चे के डीएनए की जांच के लिए एक आवेदन दाखिल किया जिसे निचली अदालत द्वारा खारिज कर दिया गया। इसके बाद, उसने उच्च न्यायालय का रुख किया।

न्यूज ब्रीफ

भाजपा बूथ अध्यक्ष सड़क हादसे में घायल

भोजीपरा, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के अंतर्गत धौंराटांडा अटामांडा रोड पर अज्ञात वाहन की चपेट में आकर भाजपा बूथ अध्यक्ष आचार्य ताराचंद गंगवार 56 वर्ष गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने गंभीर हालत में मेडिकल कालेज में भर्ती कराया। वहां से उन्हें दिल्ली रेफर कर दिया गया है। गांव मिलक इमामनगर निवासी आचार्य ताराचंद गंगवार बुधवार को धौंराटांडा की साप्ताहिक बाजार गए थे। वहां से लौटते समय हादसा हुआ।

परीक्षा देने जा रहे दो छात्र दुघर्टना में घायल

रिठौरा, अमृत विचार : थाना हाफिजगंज के कस्बा रिठौरा के मोहल्ला नई बस्ती के सलमान और थाना इज्जतनगर के गांव अणुपुरा के सत्यवीर गुरुवार को सुबह बाइक से हल्द्वानी को परीक्षा देने जा रहे थे। वहां परीक्षा का सेंटर पड़ा था। बहेड़ी के निकट मंडलपुर चौराहे के समीप अचानक बुलेरो गाड़ी आ जाने से छात्रों की बाइक उसमें जा घुसी। इससे दोनों छात्र उछलकर गिर पड़े और घायल हो गये। राहगीरों की मदद से घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

वांछित को ले गई उत्तराखंड पुलिस

फतेहगंज पश्चिमी, अमृत विचार : स्मैक तस्करी के मुकदमे में वांछित चल रहे पूर्व प्रधान यासीन खान के भाई छोटे खान को उत्तराखंड की पुलिस गिरफ्तार करके ले गई है। रुड़की के दरोगा धौराज कुमार ने बताया करीब एक वर्ष पहले पकड़े गए स्मैक तस्कर ने स्थानीय थाना के गांव रसूला चौधरी निवासी पूर्व प्रधान के भाई छोटे खां की स्मैक बताई थी।जिसके चलते रुड़की पुलिस ने छोटे खां को वांछित किया था।तभी से छोटे खां की तलाश चल रही थी। बृहस्पतिवार को स्थानीय पुलिस की मदद से छोटे खां को गांव रसूला चौधरी से गिरफ्तार कर लिया।

60 करोड़ का बकाया, ओसवाल चीनी मिल के बंद होने की आशंका

गन्ना भवन में गरजी किसानों की आवाज, दूसरी मिलों से सम्बद्ध करने की मांग तेज

एजीएम में विधायक डा. एमपी आर्य का स्वागत करते गन्ना चेयरमैन व उपाध्यक्ष।

एजीएम में मौजूद किसान ● अमृत विचार

संवाददाता, नवाबगंज

अमृत विचार : ओसवाल चीनी मिल बंद होने की आशंका बढ़ गई है गन्ना किसानों का 60 करोड़ रुपये का बकाया भुगतान नहीं कर पाने और मिल के नीलामी में लगे होने की कार्यवाही के बीच इसके बंद होने की आशंका बढती जा रही है। नीलामी से मिली रकम से गन्ना किसानों का बकाया भुगतान किया जाएगा। गुरुवार को हुई गन्ना समिति की आमसभा में भी मिल नहीं चल पाने की आशंका ने किसानों की चिता बढ़ा दी है।

गन्ना समिति की आमसभा (एजीएम) में किसानों ने जोरदार तरीके से मांग उठाई कि ओसवाल व बरखेड़ा की बजाज मिल से जुड़े गन्ना खरीद केंद्रों को दूसरी मिलों से सम्बद्ध किया जाए। इसके लिए पीलीभीत की एलएच शुगर, फरीदपुर की द्वारिकेश और मीरगंज की धामपुर बायो-ऑर्गेनिक मिल का प्रस्ताव रखा गया। विधायक डा. एमपी आर्य ने बताया कि किसानों का भुगतान हर हाल में किया जाएगा फिलहाल गन्ना क्षेत्र का वितरण किया जा रहा है।

150 गांवों का गन्ना आता ओसवाल मिल में

60 हजार किसान ओसवाल चीनी मिल से जुड़े हैं

करीब तीन घंटे चली बैठक में किसानों ने समिति से सस्ते ऋण पर खाद, बीज और कीटनाशक उपलब्ध कराने की भी मांग की। जिला गन्ना अधिकारी और उप-गन्ना आयुक्त के न पहुंचने पर नाराजगी जताई गई। बैठक की अध्यक्षता समिति अध्यक्ष निर्भय कुमार ने की। विधायक डॉ. एम.पी. आर्य, उपाध्यक्ष सर्वेश कुमार सहित गिरिजा शंकर, सुर्भीक सिंह, राकेश कुमार, गौरव कुमार, पीताम्बर सिंह , कृष्णा देवी के प्रतिनिधि लाल बहादुर , रामलली के प्रतिनिधि खेमकरन तथा सदस्य गौरी शंकर के प्रतिनिधि पूर्व प्रमुख विनोद दिवाकर के साथ ही समिति के संस्थापक अध्यक्ष लालता प्रसार गंगवार सहित बड़ी संख्या मे गन्ना किसानों ने भाग लिया ।

किसानों की बैठक के बड़े मुद्दे

- ओसवाल मिल पर 60 करोड़ से अधिक का बकाया
- खरीद केंद्रों को एलएच शुगर, द्वारिकेश व धामपुर मिल से जोड़ने की मांग
- किसानों को सस्ते ऋण पर खाद, बीज और कीटनाशक देने की मांग
- एजीएम में गन्ना उपायुक्त व अन्य अफसरों की गैरहाजिरी पर गुस्सा

साख बचाने में जुटा प्रबंधन, मिल बेचने की जुगत में

नवाबगंज । करोड़ों की बकाया मे कुर्क की गई ओसवाल चीनी मिल प्रबन्धन मिल को नीलामी से बचाने की जुगत मे जुटा है और किसी बड़े इण्डस्ट्री होल्डर से मिल का सौदा करने की तैयारी कर रहा है । मिल के आफर पर आज यहां पहुंचे के एम शुगर मिल अयोध्या के प्रतिनिधियों ने मिल का जायजा लिया। ओसवाल मिल के जीएम बीएन मिश्रा ने बताया कि किसानो की बकाया चुकाने के लिए प्रबन्धन लगातार मिल की बिक्री करने के प्रयास में है ताकि चीनी मिल चल सके और जल्द किसानों के बकाया का भुगतान कर इसकी नीलामी होने से बचाने का प्रयास किया जा रहा है । श्री मिश्रा ने बताया कि अयोध्या की केएम मिल के प्रतिनिधि दो दिन से यहां रुककर मिल का सर्वे भी कर चुके हैं और जल्द ही इसका सौदा भी होने की सम्भावना है ।

महिला से रेप के आरोप में कराया डीएनए परीक्षण

आंवला,अमृत विचार : सोशल मीडिया के जरिए दोस्ती कर महिला को फुसलाकर लाने और बंधक बनाकर दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने आरोपी एंबुलेंस चालक का डीएनए परीक्षण कराया है।

बीते 22 जुलाई को रायबरेली क्षेत्र निवासी एक महिला ने पुलिस को बताया था कि वह मुंबई में अपने पति और पांच वर्षीय बेटे के साथ रहती थी। इसी दौरान उसकी दोस्ती फरीदपुर के गांव नाद अलगनी निवासी मोहित से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर हुई। पति से विवाद के बाद दिसंबर 2024 में महिला मोहित के साथ आंवला चली आयी। इस दौरान मुंबई में उसके पति ने थाने में गुमशुदगी दर्ज करा दी थी। आरोप है कि बाद में जब उसने पति के पास लौटने की इच्छा जताई तो मोहित ने उसे बंधक बना लिया और मारपीट कर दुष्कर्म करने लगा। घर से बाहर निकलने पर पाबंदी भी लगा दी। मोहित आंवला के पुरैना अड्डे के समीप में किराए के मकान में रहकर प्राइवेट एंबुलेंस चलाता था।

मारपीट के बाद छेड़छाड़ कर फायर का आरोप

संवाददाता, मीरगंज:

- बच्चों को लेकर हुई थी मारपीट एक दिन बाद फिर हुई घटना

अमृत विचार : बच्चों के बीच हुई कहासुनी को लेकर दो परिवारों में जमकर मारपीट हुई। एक पक्ष ने महिलाओं से छेड़छाड़ की और तमंचा से फायर किया। दूसरे पक्ष ने घर में घुस कर हमला करने एवं टेंपो में तोड़फोड़ करने का आरोप लगाया है। झगड़े में तीन लोग घायल हो गए। दोनों पक्षों ने एक दूसरे के खिलाफ थाना शाही पुलिस को तहरीर दी है।

शाही कस्बा के मोहल्ला गांधीनगर में भगवानदास के पुत्र व नेत्रपाल के पुत्र में बुधवार को कहासुनी हो गई थी। लोगों ने समझा बुझा कर मामला शांत कर दिया था।

शांति देवी का आरोप है 8.30 बजे दूसरे पक्ष के तीन लोग लाठी डंडे व तमंचा लेकर उनके घर में घुस गए। आरोपियों ने उनको बुरी नियत से पकड़ कर छेड़छाड़ की। भतीजी ने मौके पर पहुंच कर उनको बचाया। आरोपियों ने भतीजी से मारपीट कर छेड़छाड़ की।

मोहल्ले के लोगों के आने पर एक आरोपी ने पुत्र भूपेंद्र पर तमंचा से फायर किया। भूपेंद्र बाल बाल बच गया। दूसरे पक्ष की कमला देवी का आरोप है सात बजे उनके पुत्र अभय की दूसरे पक्ष के व्यक्ति के पुत्र से कहा सुनी हो गई। लोगों ने समझा बुझाकर मामला शांत कर दिया। कुछ देर बाद चार आरोपी उनके घर में घुस गए। उनको, पुत्र व पुत्रियों को लाठी डंडों से पीटा। ताऊ ने मौके पर पहुंच कर उनको बचाया। थाने जाते समय मंदिर के पास आरोपियों ने उनको घेर कर लाठी डंडों व धारदार हथियार से हमला कर दिया।

टेंपो पर लाठी डंडे मार कर शीशा तोड़ दिया। जिससे उनके पुत्र अभय, विशाल व पुत्री घायल हो गईं। दोनों पक्षों ने थाने में तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक थाना शाही धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि मामले की जानकारी मिली है।जांच की जा रही है।

आपत्तिजनक वीडियो से गांव में तनाव, आरोपी गिरफ्तार

आंवला। सोशल मीडिया पर हिंदू देवता का आपत्तिजनक वीडियो डालने से गांव में तनाव की स्थिति बन गई। मामले की जानकारी पर पुलिस सक्रिय हुई और मौके पर पहुंचकर दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर शांत कराया। आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा है।

आरोपी हारून

एस आई पुरुषोत्तम सिंह ने बताया कि सिहुलिया गांव निवासी हारुन पुत्र फारूक ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर हिंदू धर्म के देवता का अपमानजनक वीडियो अपलोड किया। इस पोस्ट को लेकर गांव के हिंदू समुदाय के लोग आक्रोशित हो उठे और विरोध जताने लगे। देखते ही देखते दोनों समुदाय के लोग एकत्रित हो गए, जिसके बाद माहौल बिगड़ने की आशंका पैदा हो गई।

स्थिति नियंत्रित करने के लिए दोनों पक्षों को समझा बुझाकर शांत किया और आरोपी हारुन अंसारी को गिरफ्तार कर लिया। इंस्पेक्टर आंवला कुंवरबहादुर सिंह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ शांति भंग की कार्रवाई कर न्यायालय भेजा गया है।

धरना खत्म कराने आए तहसीलदार ज्ञापन लेकर लौटे

संवाददाता, फतेहगंज पश्चिमी

अमृत विचार : दो दिन से भाकियू कार्यकर्ताओं द्वारा ग्रामीण बैंक के सामने किया जा रहे अनिश्चित कालीन धरना को खत्म कराने के लिए पहुंचे तहसीलदार को बैरंग लौटना पड़ गया। भाकियू ने आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही होने पर ही धरना खत्म करने की बात कही। इससे तहसीलदार को भाकियू का ज्ञापन लेना पड़ा और वह बिना धरना खत्म कराए लौट गये।

बैंक कर्मियों के द्वारा धोखाधड़ी करके ऋण निकालकर बंदरबांट करने वाले आरोपियों और गांव टिटौली में हत्याकांड के आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने के कारण भाकियू कार्यकर्ताओं के द्वारा बैंक के सामने प्रदर्शन किया जा रहा है। तीसरे दिन बृहस्पतिवार को धरना स्थल पर तहसीलदार आशीष कुमार सिंह पहुंचे। कार्रवाई का भरोसा दिलाते हुए धरना प्रदर्शन स्थगित करने का आग्रह किया। लेकिन भाकियू कार्यकर्ताओं ने आश्वाशन नहीं आरोपियों पर कार्यवाही करके गिरफ्तारी करने पर ही धरना प्रदर्शन स्थगित करने की दो टूक बात कह दी। इस पर तहसीलदार बगैर धरना प्रदर्शन खत्म कराए वापस चले गए।भाकियू कार्यकर्ताओं ने उन्हें अगले 24 घंटे में कार्यवाही नहीं होने पर आमरण अनशन की चेतावनी दी। इस मौके पर तहसील अध्यक्ष चौधरी सुधीर बालियान,अरविंद सिंह सोमवंशी,राकेश कुमार आदि मौजूद रहे।

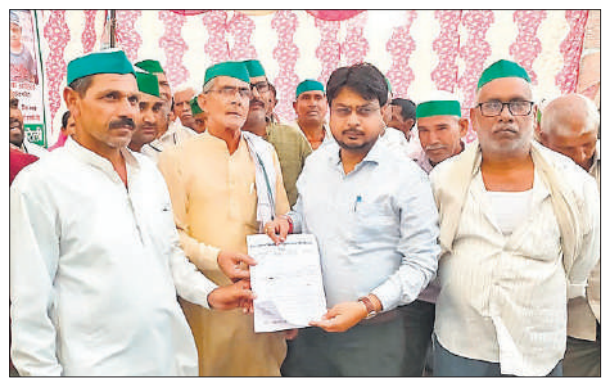

तहसीलदार को ज्ञापन देते भाकियू पदाधिकारी। ● अमृत विचार

पालिका कर्मचारी ने लोन कराने के नाम पर की ठगी

संवाददाता, फरीदपुर,

अमृत विचार: नगरपालिका परिषद फरीदपुर के कर्मचारी ने महिला व्यापारी का लोन पास कराने के नाम पर बतौर रिश्वत रुपए ले लिए। रिश्वत देने के बाद भी लोन न होने पर महिला ने अपने पैसे वापस मांगे तो आरोपी ने फर्जी चेक दे दिया। आरोपी पालिका कर्मी पैसे लौटाने के झूठे वादे कर लगातार टालमटोल कर रहा है।

नगर के मोहल्ला कानूनगोयान निवासी कामिनी देवी ने बताया कि पालिका की पानी की टंकी के पास उनकी रेडीमेड गारमेंट्स की दुकान है। उन्होंने नगर पालिका से लोन लिया था जिसे चुकता भी कर दिया। इसके बाद महिला दोबारा उसी फाइल पर लोन की धनराशि बढ़ाने हेतु नगर पालिका पहुंची तो वहां कार्यरत कर्मचारी मोहम्मद जावेद निवासी मोहल्ला मिर्धान ने दो-दो लाख लोन की दो फाइलें स्वीकृत कराने की बात कही। एक फाइल पर सरकार की ओर से 50 हजार का अनुदान मिलने और उक्त धनराशि को बतौर रिश्वत देने की बात कही। महिला जावेद की बातों में आ गई और उसने कई बार में जावेद के एकाउंट में व नगद लगभग 45 हजार रुपये उसे दे दिए। काफी दिन हो जाने पर भी जब लोन स्वीकृत नहीं हुआ तब महिला ने अपने पैसे वापस मांगे तो जावेद ने उसे किसी अन्य व्यक्ति के एकाउंट का एक चेक काट कर दे दिया। जब महिला चेक लेकर खाते में लगाने पहुंची तो उसे पता चला कि उक्त अकाउंट 2019 में ही बंद हो चुका था। तब महिला को अपने साथ धोखाधड़ी होने का एहसास हुआ।

पालिका कर्मी की शिकायत करने को महिला नगर पालिका पहुंची तो उसे बताया गया कि उक्त कर्मचारी लगभग एक माह से ड्यूटी पर ही नहीं आ रहा है। महिला ने फरीदपुर कोतवाली में तहरीर देकर आरोपी पालिका कर्मी के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने मामले की जांच कर उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है। पीड़िता ने पुलिस क्षेत्राधिकारी व पालिका के अधिकारियों को भी प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

- कर्मचारी के झांसे में आई महिला रेडीमेड गारमेंटस की है दुकान
- एक बार चुकता कर चुकी लोन को , दोबारा राशि बढ़वाने आई थी
- कर्मचारी ने बताया कि सरकार 50 हजार का अनुदान दे रही
- रिश्वत के रुपये देने के बाद भी नहीं मिला लोन
- एक माह से कार्यालय नहीं आया कर्मचारी, योजना भी हो चुकी बंद

एक प्लॉट का दो लोगों को कराया बैनामा, रिपोर्ट

नवाबगंज। गरगईया निवासी मो.साबिर ने गांव ताहिर हुसैन से 226.35 वर्ग मीटर का प्लॉट2.80 लाख में खरीदने का सौदा किया था, एक लाख रुपए बयाना भी दिया था। शेष के चैक दिए थे। सारा पैसा चुकाने के बाद ताहिर हुसैन ने 24 मई 2025 को मो साबिर की पत्नी मुन्नी बेगम के नाम रजिस्टर्ड बैनामा करा दिया था।

आरोप है कि उसके तीन सप्ताह बादउसी जमीन का दूसरा बैनामा करा डाला। इसकी जानकारी लगने पर साबिर ने नवाबगंज पुलिस को अपने साथ हुई धोखाधड़ी का शिकायती पत्र दिया लेकिन कोई कार्यवाही नहीं की गई। एसएसपी को शिकायती पत्र देने के बाद उनके आदेश से थाने में धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज की गई है।

न्यूज डायरी

सड़क बनवाना भूले

भदपुरा अमृत विचार : विकासखंड के गांव डडिया सफदर अली से सिठौरा लिंक मार्ग से जोड़ने वाला मार्ग कच्चा और जर्जर हाल में है। इस मार्ग पर सड़क बनवाने की मांग ग्रामीण कई वर्षों से करते आ रहे हैं चुनाव के दौरान जनप्रतिनिधियों ने कच्चे मार्ग पर सड़क बनवाने का वायदा जनता से किया था लेकिन इस वायदे को वह भूले हैं। सड़क निर्माण नहीं होने पर ग्रामीणों में नाराजगी है। गांव डडिया सफदर अली से सिठौरा लिंक मार्ग से रोजाना तमाम लोग गुजरते हैं।

एफएलएन प्रशिक्षण का समापन

कैंट , अमृत विचार : क्यारा बीआरसी पर चल रहे पांच दिवसीय एफएलएन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन द्वितीय बैच का समापन हुआ। प्रशिक्षण में भारतीय ज्ञान प्रणाली और इंटरडिसप्लानिरी एप्रोच व अंग्रेजी भाषा के सत्रों पर संदर्भदाताओं द्वारा सत्र लिए गये। प्रतिभागियों को समूह में बाँटकर प्रशिक्षण को रोचक ढंग से पूर्ण किया धर्मेंद्र पटेल, विजय, ज्योति, रेखा, संगीता, प्रीती, रिजबाना, पूनम, राजेश्वर, रजी, कल्पना, लक्ष्मन दत्त, ब्रिजेश सिंह सोलंकी, डीपी यादव, मृदुला गंगवार आदि प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राष्ट्र सेविका समिति के कार्यक्रम में जुटीं महिलाएं

नवाबगंज, अमृत विचार : राष्ट्र सेविका समिति, बृज प्रांत संगठन का कार्यक्रम हुआ। नगर पालिका अध्यक्ष के आवास पर हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कृष्णा शर्मा,विमला शुक्ला, रही। इस मौके पर प्रेमलता राठौर, डॉ मीनाक्षी गंगवार, वंदना पांडे, पुष्पा गुप्ता विमलेश रस्तोगी, शिखा गुप्ता, ममता गंगवार गौरी, लता गुप्ता, गीता गंगवार, सीता गुप्ता, प्रियंका गंगवार, नीति गंगवार, रजनी गुप्ता, मन्जू गुप्ता, शिवानी गुप्ता, शोभा गुप्ता, ममता गुप्ता, ऊषा गंगवार, लक्ष्मी, आदि रहीं।

रामलीला का मंचन आज से

आंवला, अमृत विचार : श्रीरामलीला मेला दशहरा कमेटी की ओर से रामलीला मंचन कार्यक्रम की शुरुआत 12 सितंबर से गंज त्रिपोलिया पर होगी। कार्यक्रम का उदघाटन कैबिनेट मंत्री धर्मपाल सिंह करेंगें। गुरुवार की देर शाम कमेटी की बैठक हुई। कमेटी अध्यक्ष वीर सिंह पाल ने बताया कि रामलीला मेला दशहरा का आयोजन 12 सितंबर से 4 अक्टूबर तक होगा। रामलीला मंचन कार्यक्रम 12 से 18 तक गंज त्रिपौलिया पर, 19 से 25 तक सोसायटी पर होगा।

भागवत ग्रंथ नहीं आध्यात्मिक मार्गदर्शक

शेरगढ़,अमृत विचार : श्रीमद भागवत महापुराण केवल एक ग्रंथ नहीं बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक है। जो जीवन के वास्तविक उद्देश्य धर्म भक्ति और प्रेम का मार्ग दिखाता है। श्रीमद् भागवत कथा नारी शक्ति को प्रेरणा देती है कि वह अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भक्ति और धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ें। भागवत कथा के दूसरे दिन कथाव्यास ललिता शास्त्री ने यह बात कही।

ललिता शास्त्री

मोहल्ला डूंगरपुर में नौ दिन चलने वाली भागवत कथा के दूसरे दिन गुरुवार को वृंदावन की कथावाचक ललिता शास्त्री ने व्यास के जन्म की कथा का मार्मिक प्रसंग सुनाया और श्रोताओं से सन्मार्ग पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भागवत में स्त्री का सम्मान और उसकी भूमिका का वर्णन है। नारी में लक्ष्मी,दुर्गा और सरस्वती का स्वरूप समाया है। माता देवकी, यशोदा, कुंती, द्रोपदी और रुक्मणी ने अपने कर्तव्य और भक्ति से समाज को दिशा दी।

माता यशोदा ने कृष्ण को संस्कार दिए, वैसे ही हर स्त्री अपने परिवार को धर्म और भक्ति के पथ पर चलने की प्रेरणा दे सकती है। इस अवसर पर राधा माधव सेवा संकीर्तन ट्रस्ट के संस्थापक रोहितानंद, अंकुर सक्सेना, विनय भारद्वाज, कल्याण राय श्रीवास्तव, अमित उपाध्याय, महेंद्र पाल राठौर, रामचंद्र राठौर,जसोदा श्रीवास्तव, मानसी, तारा राठौर, काजल, प्रियंका, मैना, दिव्या, रामवती, श्यामकली सहित तमाम श्रोता मौजूद रहे।

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005

बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ
- 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
- बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
- आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
- कैशलेस ईलाज

ADITYA आदित्य आई एण्ड लेजर सेन्टर
उपलब्ध सुविधायें
बिना सुई बिना टांका आधुनिक लेंस प्रत्यारोपण की सुविधा
अल्ट्रासाउण्ड द्वारा पर्दे की जांच की सुविधा उपलब्ध
IOL Master 700 द्वारा लेंस का नम्बर
लेजर द्वारा आँख की झिल्ली हटाने की सुविधा उपलब्ध
बी-स्कैन द्वारा पर्दे की जाँच उपलब्ध
OCT द्वारा काला पानी एवं पर्दे की जाँच व उपचार
80000 से अधिक आँखों के ऑपरेशन का अनुभव
TPA सुविधा उपलब्ध

डॉ. आदित्य त्यागी
MBBS, DOMS, DNB, MNAMS
CARARACT, REFRACTIVE & GLAUCOMA SURGEON
8077344353
समय :- प्रात: 10 बजे से सायं 7 बजे तक (सोमवार से शनिवार)
आयुष्मान कार्ड धारकों के लिए फ्री ऑपरेशन की सुविधा
ट्यूलिप ग्रांड के सामने, पीलीभीत बाईपास, बरेली

हर्षिल हॉस्पिटल
क्रिटिकल केयर एण्ड पेन सेन्टर
डॉ. हिमांशू वर्मा
MBBS, MD, FICM, FIPM
क्रिटिकल केयर एवं पेन फिजिशियन
Advanced ICU & OT 24x7 Emergency Operation | TPA/कैशलेस की सुविधा उपलब्ध
पता:- प्लाट नं. 4 राघव पेट्रोल पम्प के सामने, बुखारा, बरेली
Mob : 9458702280, 8937810741

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
7906732664, 8445507002

सूचना

मेरे पुत्र आदित्य के हाईस्कूल सह प्रमाणापत्र 2024 अनुक्रमांक 21134203 में माता का नाम नीमा नागरथ के स्थान पर नीमा उजूधा अंकित हो गया है भविष्य में मेरा नाम नीमा उजूधा के स्थान पर नीमा नागरथ पढा जावे ताकि उच्च शिक्षा में मेरा सही नाम नीमा नागरथ अंकित हो सके । नीमा नागरथ पुत्री विनोद कुमार नागरथ निवासी क्रास रोड कैन्ट बरेली ।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भारतीय स्टेट बैंक शाखा सुभाष नगर बरेली में मेरा बचत खाता संख्या 34927471726 संचालित हो रहा है जिसमें मेरा नाम सुमन अंकित हो गया है जबकि मेरा वास्तविक नाम सुषमा देवी है। बैंक खाते के दस्तावेजों में मेरा नाम सुषमा देवी अंकित किया जाये। **सुषमा देवी पत्नी श्री विशन कुमार सिंह निवासी करगैना पुलिस चौकी तिरूपति धाम कालौनी, बरेली उ.प्र.-243001**

Khushro Degree College
Nawada Kanja, Jahanabad, Distt. Pilibhit
College-216
आवश्यकता है
प्राचार्य –01,
सहायक प्रोफेसर
Zoology, Botany, Chemistry, Physics, Maths, Education, Home Science, Drawing & Painting, Sociology, Hindi, English
21 दिन के अन्दर अप्लाई करें।
9012074547, 9627496037

खुसरो मेमो. डिग्री कॉलेज
सी.बी. गंज, बरेली।
कॉलेज कोड : 111
आवश्यकता है
प्रचार्य–01
B.A., B.Sc., B.Com., M.A., M.Sc., M.Com, Zoology, Botany, Chemistry, Physics, Maths, Education, Home Science, Drawing & Painting, Sociology, Hind, English, History, Political Scince, Urdu
प्रत्येक में दो–दो पद,
योग्यता: एम.जे.पी. मानकनुसार
21 दिन के अन्दर अप्लाई करें।
6398158168

वैधानिक सूचना :– समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

न्यूज ब्रीफ

इंस्पेक्टर के ट्रांसफर पर गले लगकर रोई महिला पुलिसकर्मी

बरेली, अमृत विचार : शहर में तैनात एक इंस्पेक्टर का आगरा जोन में ट्रांसफर होने पर थाना परिसर में विदाई कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें महिला पुलिसकर्मी इंस्पेक्टर से गले लगकर रोई। बताया जा रहा है कि इंस्पेक्टर अपने मिलनसार स्वभाव के लिए भी जाने जाते थे। कार्यक्रम में कुछ महिला पुलिसकर्मी भावुक हो गईं। इसका वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें इंस्पेक्टर भावुक हुईं महिला पुलिसकर्मियों को चुप करा रहे हैं।

मारपीट में चबाई अंगुली, घायल

बरेली, अमृत विचार : शराब के नशे में मारपीट के दौरान पड़ोसी ने युवक की अंगुली चबा ली। जिससे युवक की अंगुली कटकर अलग हो गई। गुरुवार शाम घायल जिला अस्पताल पहुंचा। डॉक्टरों ने घायल का उपचार शुरु कर दिया है। किला थाना क्षेत्र के स्वालेनगर निवासी विपिन कश्यप ने बताया कि उसका पड़ोसी शाम 7 बजे शराब पीकर गाली गलौज कर रहा था। विरोध करने पर उसकी अंगुली चबाकर काट ली। पीड़ित ने किला पुलिस को तहरीर दी है।

विवाद में तीन साल की बच्ची को पीटा

बरेली, अमृत विचार : कैंट थाना क्षेत्र के मोहनपुर ठिरिया निवासी फहीम ने बताया कि गुरुवार शाम उसकी तीन साल की बेटी आयशा नूर का खेल के दौरान बच्चों से विवाद हो गया। जिसके बाद पड़ोसियों ने उनकी बेटी के साथ मारपीट करके उसके दांत तोड़ दिए। पुलिस ने बच्ची का जिला अस्पताल में मेडिकल कराकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

शराब पी रहे युवकों ने मैनेजर को पीटा, रिपोर्ट

बरेली, अमृत विचार : खजुरिया घाट निवासी रोहित पटेल ओमेगा अस्पताल में मैनेजर हैं। वह बुधवार को कार से घर जा रहे थे। वहां मौजूद अंकुश, सचिन, पुष्कर और इनके छह-सात साथी शराब पी रहे थे। उन्होंने उनसे कार के सामने से हटने को कहा तो युवकों ने रोहित की पिटाई कर दी। सरिया से हमला कर कार तोड़ डाली। शोर सुनकर अस्पताल स्टाफ ने बीच बचाव किया। पुष्कर और सचिन को पकड़ लिया गया। अंकुश व अन्य लोग फरार हो गए। हमलावरों के खिलाफ इज्जतनगर में मुकदमा दर्ज कराया गया है।

12 वर्ष पहले मारपीट करने का आरोपी बरी

विधि संवाददाता, बरेली, अमृत विचार: 12 वर्ष पूर्व मारपीट करने के मामले में अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सुमित कुमार ने थाना सीबीगंज के ग्राम विधौलिया निवासी अल्ताफ को बरी कर दिया। बचाव पक्ष का पक्ष वकील आर एन मिश्रा व गोपी कृष्ण मिश्रा ने रखा।

वादी रहीस अहमद ने 8 अप्रैल 2013 को थाना सीबीगंज में तहरीर देकर बताया था कि अल्ताफ मोहल्ले के कुछ लड़कों के साथ खेल रहा था, जो खेल-खेल में गाली दे रहा था। उसके भाई कबीर ने गाली देने पर विरोध किया तो अल्ताफ ने उसके मुंह पर घूंसा मारते हुए मारपीट शुरू कर दीं। इससे उसके भाई के मुंह पर व शरीर में चोटें आयीं। परीक्षण के दौरान वादी व चोटहिल मुकर गये थे।

लाशों का सौदा करने का ऑडियो-वीडियो वायरल, सिपाही निलंबित

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- ऑडियो में संविदाकर्मी सुनील साफ-साफ कर रहा सौदेबाजी
- सिपाही नरेन्द्र प्रताप सिंह के भी सौदेबाजी में शामिल होने का प्रमाण

अमृत विचार : लाशों के सौदे को लेकर ऑडियो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद एसएसपी ने एक सिपाही को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए तीन सदस्यीय टीम गठित की है। जो पूरे प्रकरण की जांच कर रिपोर्ट एसएसपी को सौंपेगी। जांच रिपोर्ट के आधार पर मामले में आगे की कार्रवाई होगी।

दरअसल, सोशल मीडिया पर एक ऑडियो और वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें लाशों का सौदा किया जा रहा है। इसमें कोतवाली थाने में तैनात आरक्षी नरेन्द्र प्रताप सिंह भी बात करते दिखाई दे रहे हैं। एसएसपी ने फौरन सिपाही को निलंबित कर दिया। साथ ही एसएसपी ने फौरन कार्रवाई करते हुए तीन सदस्यीय जांच टीम गठित की है। टीम में एसपी सिटी मानुष पारीक, क्षेत्राधिकारी एलआईयू विजय राणा और उप मुख्य चिकित्साधिकारी शामिल किए गए हैं। ऑडियो में संविदाकर्मी सुनील साफ-साफ सौदेबाजी कर रहा है। वह कह रहा है जो रुपये लेते हैं, वो तो नमक बराबर हैं, असली रकम ऊपर के अफसरों तक जाती है। सुनील का दावा है कि उसके पास यूपी के अलग-अलग जिलों से लाशों का जुगाड़ है।

इसी दौरान सिपाही नरेन्द्र प्रताप सिंह भी सौदेबाजी में शामिल होता है। उसने कहा कमाना सबको है, बात करनी पड़ेगी। पुलिस को आशंका है कि लावारिस लाशों का कागजों पर अंतिम संस्कार दिखा दिया जाता है, लेकिन उसे रुपये लेकर बेचा न जा रहा हो। ऑडियो में दावा किया जा रहा है कि कुछ प्राइवेट मेडिकल कॉलेज, एमबीबीएस की मान्यता बनाए रखने के लिए इन लाशों को खरीदते हैं। ऑडियो वायरल होने के बाद एसएसपी ने तत्काल कार्रवाई करते हुए सिपाही नरेन्द्र प्रताप सिंह को निलंबित कर दिया है। साथ ही मामले की जांच के लिए एसपी सिटी, सीओ एलआईयू और डिप्टी सीएमओ की टीम गठित की गई है।

दबंगों ने नाला बंद किया विरोध करने पर पीटा

हाफिजगंज। क्षेत्र के गांव बकैनिया निवासी असलम ने थाने मे दी तहरीर मे बताया कि गांव में मस्जिद वाली गली मे बड़ा नाला गया है जिसको गांव के कुछ लोगों ने जबरन बंद कर दिया। इससे पीड़ित के घर मे गंदा पानी घुस गया। इस बात का विरोध करने पर लड़ाई झगड़े पर उतारू हो गए बताया कि पूरी गली मे गंदा पानी इकट्ठा हो गया है। इससे बीमारी फैलने का भय बना हुआ है।

पूर्व प्रधान पर हिस्ट्रीशीटर प्रधान पति ने चलाई गोली, दो गंभीर

प्रधानी चुनाव की रंजिश में हमला, बिथरी चैनपुर का मामला, नौ आरोपियों पर रिपोर्ट

संवाददाता, बरेली/बिथरी चैनपुर

- दोनों पक्षों में चले लाठी-डंडे, तीन आरोपी पुलिस हिरासत में
- पूर्व प्रधान के समर्थक के साथ मारपीट से शुरू हुआ था विवाद

अमृत विचार : बिथरी चैनपुर थाना क्षेत्र के पुरनापुर गांव में प्रधानी की चुनावी रंजिश को लेकर बुधवार की देर रात मौजूदा प्रधान के हिस्ट्रीशीटर पति ने पूर्व प्रधान पक्ष के लोगों पर जानलेवा हमला कर दिया। उसे बचाने आए पूर्व प्रधान पर भी हमलावरों ने मारपीट कर फायरिंग की। इसमें पूर्व प्रधान समेत उनके साथी गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर सीओ थाना पुलिस के साथ मौके पर पहुंच कर घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। पूर्व प्रधान पक्ष की तहरीर पर वर्तमान प्रधान पति, देवरों सहित नौ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

थाना क्षेत्र के पुरनापुर गांव निवासी शानू ने बताया कि वह पूर्व प्रधान धनपाल पटेल का चुनाव में सहयोग करते हैं, इसलिए विरोधी पक्ष उनसे रंजिश मानता है। बुधवार की रात उनका भाई देवेन्द्र उर्फ गुड्डू रिश्तेदारी से आ रहे थे। आरोप है कि गांव में पहले से घात लगाए बैठे वर्तमान प्रधान पति संजीव पटेल ने अपने भाइयों कमल पटेल, विनोद पटेल, हाकिम पटेल, विनोद पटेल, सुरेंद्र पटेल और साथी प्रशांत, प्रकाश, रोहित, गिरीश के साथ मिलकर देवेंद्र पर हमला बोल दिया। शोर-शराबा के बीच उधर से अपनी कार से गुजर रहे पूर्व प्रधान धनपाल पटेल ने देवेंद्र को बचाने का प्रयास किया। इससे गुस्साए हमलावरों ने दोनों पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। आरोप है कि संजीव पटेल ने जान से मारने की नीयत से दोनों पर फायरिंग कर दी। इससे एक गोली देवेंद्र के पैर में और दूसरी धनपाल को छूते हुई निकल गई। बिथरी थाना प्रभारी चंद्रप्रकाश शुक्ला ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर तीन को हिरासत में लिया गया है। अन्य फरार आरोपियों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जायगा।

गोली लगने से घायल पूर्व प्रधान धनपाल।

प्रधानी चुनावी रंजिश को लेकर दो पक्षों में मारपीट हुई थी। इसमें प्रधानपति ने गोली चलाई जो पूर्व प्रधान को जा लगी। इस मारपीट में दो लोग घायल हुए हैं। नौ आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर तीन आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।
-मुकेश चन्द मिश्रा, एसपी उत्तरी

वर्षों से चली आ रही है रंजिश, कई मुकदमे दर्ज

पूर्व प्रधान धनपाल पटेल और वर्तमान प्रधान प्रभा देवी के पति संजीव पटेल में पिछले कई वर्षों से चुनावी रंजिश चली आ रही है। संजीव पटेल बिथरी थाने का हिस्ट्रीशीटर भी है। चुनाव आते ही दोनों पक्ष चुनाव की तैयारी में लगे हुए हैं। पिछले चुनाव में संजीव ने धनपाल को हराकर चुनाव में जीत हासिल की थी। दोनों पक्ष पहले भी कई बार आमने-सामने आ चुके हैं। इसके बाद भी दोनों पक्षों में खूनी संघर्ष जारी रहा। दोनों पर कई मुकदमे भी लिखे गए हैं, लेकिन सत्ताधारी नेताओं के कारण मुकदमे में या तो दोनों के नाम निकल जाते हैं या मुकदमे में एफआर लग जाती है। इससे आए दिन दोनों पक्ष आमने-सामने आ जाते हैं। गांव में दहशत का माहौल रहता है।

व्यावसायिक प्लॉट का आवासीय में कराया बैनामा, 18 लाख का जुर्माना

कार्यालय संवाददाता बरेली,

- एडीएम फाइनेंस ने नगर मजिस्ट्रेट की आख्या पर सुनवाई कर पकड़ी स्टांप शुल्क की कमी
- डॉक्टर दंपति से खरीदे प्लाट पर पिछले साल हुई गोलीबारी की प्रदेश भर में रही थी गूंज

अमृत विचार: गोलीकांड से प्रदेशभर में चर्चित हुए व्यावसायिक प्लॉट का आवासीय प्लॉट में बैनामा कराने के प्रकरण में कम स्टांप शुल्क जमा करने का मामला पकड़ा गया है। नगर मजिस्ट्रेट की जांच आख्या पर कम स्टांप शुल्क जमा करने का वाद दाखिल कर एडीएम फाइनेंस संतोष कुमार सिंह ने सुनवाई कर जुर्माने की कार्रवाई की है। डॉक्टर दंपती से प्लॉट खरीदने वाले क्रेता पर कब्जे को लेकर 1858342 रुपये का जुर्माना लगाया है।

एडीएम फाइनेंस की कोर्ट ने सुनाए आदेश में कहा है कि नगर मजिस्ट्रेट ने अपनी आख्या में बताया कि 14 मार्च 2024 को डॉ. भारती गुप्ता पत्नी डॉ. अवधेश कुमार गुप्ता से राजीव कुमार पुत्र कल्लू राम निवासी रामायण आवास कालोनी, सुरेश शर्मा नगर ने पीलीभीत बाईपास स्थित 718.32 वर्ग मीटर भूमि खरीदी। इस भूमि का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण करने पर पाया व्यवसायिक प्लाट है, जिस पर बिल्डिंग मैटेरियल, ईंट एवं पत्थर का व्यवसाय किया जा रहा था। जांच में पाया कि प्लाट को आवासीय प्लाट दर्शाकर विलेख पंजीकृत कराया, जबकि प्लाट पूर्ण रूप से व्यवसायिक है। 75000 रुपये प्रति वर्ग मीटर की दर निर्धारित है। कॉर्नर पर स्थित होने के कारण निर्धारित दर में नियमानुसार 10 प्रतिशत वृद्धि करके 82500 रुपये प्रति वर्ग मीटर से 718.32 वर्ग मीटर का मूल्यांकन 59261400 रुपये, बाउंड्रीवॉल की अनुमानित कीमत एक लाख रुपये दिखायी। कुल मालियत 59361400 रुपये बनी, जिस पर 4155298 रुपये का स्टाम्प शुल्क देय है, जबकि क्रेता ने 26.60 लाख का स्टाम्प शुल्क अदा किया। इस प्रकार 1495298 रुपये का स्टाम्प शुल्क कम अदा किया, इस प्लॉट पर अवैध कब्जा को लेकर गोलीबारी हुई थी। थाना इज्जतनगर में मुकदमा दर्ज है। तथ्यों एवं अभिलेखों के परीक्षण से स्पष्ट है कि विलेख पर स्टाम्प शुल्क कम दिखाया है। स्टांप अधिनियम व मूल्यांकन नियमावली के नियम 7/8 के तहत कार्रवाई कर 14,95,298 रुपये का स्टाम्प शुल्क व 2,13,514 रुपये निबंधन शुल्क, कमी स्टाम्प का 10 प्रतिशत यानी 149530 रुपये अर्थदंड बना। कुल 1858342 रुपये की धनराशि अधिरोपित की गयी।

एक्वाथलोन ट्रायल स्पोर्ट्स स्टेडियम में 14 को

बरेली, अमृत विचार : जिला एक्वाथलोन संघ की ओर से 14 सितंबर को स्पोर्ट्स स्टेडियम में जूनियर व सब जूनियर वर्ग में जिला स्तरीय ट्रायल होगा। सचिव सचिव सीमा चौरसिया के अनुसार सब जूनियर खिलाड़ियों की उम्र 13 से 15 वर्ष के बीच होनी चाहिए, जिसमें खिलाड़ी को 350 मीटर स्विमिंग व 3 किमी दौड़ लगानी होगी। वहीं जूनियर वर्ग में 750 मीटर स्विमिंग व 5 किमी की दौड़ लगानी होगी।

परचम कुशाई से हुई उर्स की शुरुआत

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- 14 को अदा की जाएगी कुल शरीफ की रस्म

अमृत विचार : नॉवल्टी चौराहा स्थित दरगाह पर सय्यद शाह वासिल शहीद उर्फ पहलवान साहब के 209 वें उर्स का आगाज गुरुवार को परचम कुशाई की रस्म के साथ हुआ। दरगाह पर हाजिरी देने वालों का सिलसिला चलता रहा। दरगाह पहलवान साहब पर फातिहाख्वानी हुई।

दरगाह के सज्जादानशीन फरहान रजा खान ने बताया कि गुरुवार रात इशा की नमाज के बाद दरगाह पर मिलाद शरीफ और सलातो सलाम हुआ। जिसमें हाजी गुलाम सुबहानी ने नात ओ मनकबत पढ़ी व पहलवान साहब की शान में कलाम पेश किए। जिसकी सदारत मुफ्ती खुर्शीद आलम ने की। 14 सितंबर को पहलवान साहब के कुल की रस्म अदा की जाएगी। उर्स के सभी कार्यक्रम मौलाना तौकीर रजा खान की सरपरस्ती और डॉ. नफीस खान की सदारत और सेक्रेटरी नोमान रजा खान की देखरेख में होंगे।

इमरान खान, सय्यद रेहान अली, नदीम खान,अफजाल बेग, सय्यद हामिद अली, इमरान खान, सोहेब हसन अल्वी, शहजाद पठान नियाजी, रहबर अंसारी, रिजवान हुसैन अंसारी, मो. शफी, सूफी जुबेर मियां, शादाब मिर्जा, आरिफ नूरी, वासिफ यार खान, निजाम अजहरी,अतीक साबरी, निजाम कुरैशी आदि मौजूद रहे।

उर्स में शामिल अकीदतमंद।

सिटी डायरी

डॉ. सुदीप सरन को मिली अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप

बरेली, अमृत विचार : मुझे पूर्व में 8 फेलोशिप मिल चुकी हैं, लेकिन फेलोशिप ऑफ अमेरिकन कॉलेज ऑफ फिजिशियन्स (एफएसीपी) से फेलोशिप मिलना मेरे लिए किसी गौरव से कम नहीं है, यह बातें गुरुवार को निजी होटल में आयोजित प्रेसवार्ता में वरिष्ठ फिजिशियन डॉ. सुदीप सरन ने कहीं। प्रेसवार्ता से पहले आईएमए अध्यक्ष डॉ. आरके सिंह ने डॉ. सुदीप सरन की इस उपलब्धि पर उन्हें सम्मानित किया। डॉ. सुदीप ने बताया कि ये सम्मान पाने वाले वह उत्तराखंड और रुहेलखंड क्षेत्र के पहले डॉक्टर हैं। 6 सितंबर को जयपुर में एफएसीपी के इंडिया चैप्टर की ओर से आयोजित गोष्ठी में यह फेलोशिप दी गई। ईएमए यूपी के एडिटर जनरल डॉ. रवीश अग्रवाल,आईएम सचिव डॉ. रतन पाल गंगवार, आईएमए के प्रेसिडेंट इलेक्ट डॉ. अतुल श्रीवास्तव, डॉ. अनूप आर्य उपस्थित रहे। आईएमए से डॉ. भारती सरन, डॉ. जेके भाटिया, डॉ. विमल भारद्वाज, डॉ. राजीव गोयल, डॉ. विनोद पागरानी, डॉ. हिमांशु अग्रवाल ने उन्हें बधाई दी।

जयंती पर लोकतंत्र सेनानी सत्यप्रकाश को याद किया

बरेली, अमृत विचार : किला के पास सत्य प्रकाश पार्क में गुरुवार को पूर्व राज्य मंत्री एवं लोकतंत्र सेनानी सत्यप्रकाश अग्रवाल की जयंती मनाई। कैंट विधायक संजीव अग्रवाल ने प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। खिचड़ी का वितरण किया। विधायक ने उनके साथ बिताए पलों को याद किया। लोकतंत्र सेनानी वेदप्रकाश वर्मा, विवेक अग्रवाल, अनुराग अग्रवाल, संदीप मिन्टू अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, अरुण कश्यप, अमरीश कठेरिया, ब्रजेश मिश्रा, हर्षित गुप्ता, प्रदीप गुप्ता, अजय मौर्य, रंजीत वाल्मीकि, चंद्र प्रकाश गुप्ता, दिव्य चतुर्वेदी, रोहित राकेश आदि एवं परिजन मौजूद रहे।

बरेली हज सेवा समिति के तीसरी बार अध्यक्ष बने अताउर्रहमान

बरेली, अमृत विचार : बरेली हज सेवा समिति की ओर से सिविल लाइन स्थित एक शादी हॉल में कार्यक्रम हुआ, जिसमें तीसरी बार विधायक अताउर्रहमान को समिति का अध्यक्ष बनाया गया। जबकि मौलाना तौसीफ रजा खां और मौलाना तस्लीम रजा खां नूरी को संरक्षक चुना गया। मुख्य अतिथि डॉ. पवन सक्सेना और डॉ. केबी त्रिपाठी रहे।

अस्थायी कर्मचारियों ने की न्यूनतम वेतन की मांग

प्राचार्य से वार्ता करते कर्मचारी कल्याण सेवा समिति के पदाधिकारी।

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : कर्मचारी कल्याण सेवा समिति के अध्यक्ष चंद्रकेश सिंह की अध्यक्षता में बरेली कॉलेज में अस्थायी कर्मचारियों ने मांगों को लेकर प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा। इसमें समान वेतन, समान कार्य और अस्थायी कर्मचारियों के शोषण को रोकने की मांग की।

समिति के सचिव सुनील राठौर ने कहा कि अस्थायी कर्मचारियों को उत्तर प्रदेश शासन की ओर से तय न्यूनतम वेतन 20,000 से 22,000 रुपये दिया जाना चाहिए। बरेली कॉलेज में 20-25 वर्षों से कार्यरत कर्मचारियों को सरकारी आदेश के तहत वेतन नहीं दिया जा रहा है और न ही कोई ग्रेड पे तय है। इससे कर्मचारियों को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कहा कि जब चुनाव कार्य में लगाया जाता है, तो उन्हें सरकार की सुविधाओं का लाभ भी मिलना चाहिए। ज्ञापन सौंपने वालों में मदन, श्रीपाल, आजम, तेजपाल, पूरनलाल, मनीष मिश्रा, सुनील कुमार सिंह, ज्ञानपाल, भगवान दास, बच्ची, देववती, आशा, माया पांडे, श्री राम, महेंद्र पाल आदि रहे।

दुस्साहस मुस्लिम युवतियों के वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर करते थे प्रसारित, पहले भी कई भेजे जा चुके हैं जेल

हैदरी दल के सदस्य पार्कों में करते थे गुंडई, उतरवाते थे नकाब

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में बैठकर सोशल मीडिया के जरिये चला रहा था गैंग
- हैदरी दल बरेली के नाम से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर चला रहे थे एकाउंट

अमृत विचार : पार्कों में मौजूद युवतियों के नकाब उतरवाकर उनके वीडियो बनाकर वायरल करने के मामले के बाद चर्चा में आए हैदरी दल के लोगों के खिलाफ पुलिस ने ताबड़तोड़ कार्रवाई की थी। इनका सरगना अकबर अली मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में बैठकर सोशल मीडिया के सहारे गिरोह को संचालित कर रहा था। उसके इशारे पर ये सभी हैदरी दल 25 के नाम से संगठन बना कर काम कर दिए थे। गिरोह के सभी सदस्य पार्कों में जाकर युवक-युवतियों के वीडियो बनाते थे और किसी हिंदू युवक के साथ मुस्लिम युवती के मिलने पर उसे धमकाते थे। साथ ही उसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर प्रसारित करते थे। पुलिस मामले में कई आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

जानकारी देते एसपी सिटी मानुष पारिख।

एसपी सिटी मानुष पारिख 8 जून को हिंदू संगठन से जुड़े हिमांशु पटेल ने एक्स पर शिकायत की थी। आरोप था कि हैदरी दल के सदस्य वीडियो पर लिखते हैं कि समझाने पर नहीं मानी तो हिजाब की इज्जत नीलाम नहीं होने देंगे। वीडियो में युवती का नाम उसके माता-पिता का नाम पूछकर भी पहचान उजागर की जा रही थी। इसके बाद ही यह गिरोह चर्चा में आया था। इंस्टाग्राम पर सोफियां-आठ के नाम से एक आइडी बनाई गई। इसका नाम हैदरी दल बरेली रखा गया। इस आईडी पर प्रसारित कई वीडियो गांधी उद्यान के थे। इसमें कुछ लोग पार्क में बैठे युवक युवतियों की सीधा वीडियो बनाना शुरू कर उनसे पूछताछ शुरू कर देते थे। मामले में पुलिस ने हैदरी दल 25 चलाने वाले आरोपी नबी हसन को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। हसन पर धार्मिक उन्माद फैलाने और नाबालिग से कुकर्म करने का भी आरोप था। उसके मोबाइल में दर्जनों अश्लील वीडियो और फोटो बरामद हुए थे।

इनसे जुड़े खाते को मेटा से कराए गए थे बंद

कोतवाली पुलिस ने मामले में रिपोर्ट दर्ज कर पांच लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। इनसे जुड़े खाते ट्रेस कर मेटा को रिपोर्ट भेजी गई और खाते बंद कराए गए। मगर कुछ खाते दोबारा सक्रिय हो गए। बिना संदर्भ को स्पष्ट किए खबरें पोस्ट की जाती थीं। इससे धार्मिक भावनाएं आहत हो रहीं थीं। एसपी सिटी के अनुसार पूछताछ में आरोपी ने बताया कि किसी भी घटना की वीडियो को एडिट कर न्यूज की तरह बना कर उसे सोशल मीडिया पर पोस्ट करता था। जिससे लोगों को लगे की यह असली न्यूज है। उसके इस मुहिम में अलग-अलग स्थानों से कई लोग जुड़े हुए हैं।

5वीं तक पढ़ा है आरोपी नबी हसन

पुलिस की पूछताछ में पता चला था कि पकड़ा गया आरोपी नबी हसन महज कक्षा 5 तक पढ़ा है। वर्तमान में वह शाहजहांपुर के गुलशने मुस्तफा मदरसे में रहकर दीनी तालीम ले रहा था। वह 'हैदरी दल 25' बरेली ग्रुप का एडमिन था। कई जिलों में उसका नेटवर्क है। अलग-अलग जगहों से फोटो-वीडियो मंगाकर उन्हें एडिट करके अपने सोशल मीडिया पेज पर अपलोड करता था। नबी हसन के पास से बरामद हुए मोबाइल फोन में नाबालिग छात्र से कुकर्म की वीडियो मिली थी। ये छात्र उसी के मदरसे में पढ़ता था।

सफाईकर्मी पेट्रोल लेकर पहुंचा पालिका

पीलीभीत, अमृत विचार : दो माह से वतन न मिलने से परेशान नगर पालिका का एक सफाई कर्मचारी बोतल में पेट्रोल लेकर पहुंचा और समाधान न होने पर आत्मदाह की चेतावनी दी। इसकी सूचना मिलने प पुलिस मौके पर पहुंची और मामला शांत कराया। मामले में जांच कराकर कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

गुरुवार को शहर के वार्ड नंबर चार में तैनात सफाई कर्मचारी अमन नगर पालिका दफ्तर पहुंचा। उसके हाथ में पेट्रोल भरी एक बोतल थी। उसका कहना था कि उसे दो माह से वेतन नहीं मिल सका है। जिस वजह से परिवार का भरण पोषण नहीं हो पा रहा है। आरोप लगाया कि सफाई निरीक्षक 10 हजार रुपये की मांग कर रहे हैं। इसे लेकर खलबली मच गई।

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 12 सितंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

दुधवा टाइगर रिजर्व में गैंडा की मौत

पलिया कलां, अमृत विचार : दुधवा टाइगर रिजर्व की बेलरायां रेंज में गैंडा पुनर्वासन योजना फेज–टू के तहत रखा गया चार वर्षीय गैंडा हिमांशु, गुरुवार दोपहर बाद आपसी संघर्ष में लगी गंभीर चोटों के कारण दम तोड़ दिया। दुधवा टाइगर रिजर्व के छंगा नाला क्षेत्र में रखे गए पांच गैंडों में 20 वर्षीय नेपोलियन और चार वर्षीय हिमांशु के बीच बुधवार को हिंसक भिड़ंत हो गई थी। कमजोर साबित हुए हिमांशु को गहरी चोटें आईं। इलाज के लिए मौके पर पहुंचे दुधवा टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर डॉ. एच. राजामोहन, उपनिदेशक जगदीश आर और पशु चिकित्सक टीम ने उपचार शुरू किया, लेकिन गुरुवार दोपहर 2:40 बजे उसकी मौत हो गई। वन विभाग ने बताया कि हिमांशु गैंडा की मौत से गैंडा पुनर्वासन योजना को बड़ा झटका लगा है। तीन सदस्यीय पशु चिकित्सक टीम उसका पोस्टमार्टम कर रही है। दुधवा के उपनिदेशक जगदीश आर ने गैंडे की मौत की पुष्टि की।

महिला थाने में मिला एसआई का शव

बिजनौर, अमृत विचार : जनपद मुख्यालय स्थित महिला थाने में उस समय सनसनी फैल गई जब वहां तैनात उपनिरीक्षक चंद्रपाल सिंह का शव उनके सरकारी

आवास से बरामद हुआ। गुरुवार सुबह जब वे ड्यूटी पर नहीं पहुंचे तो एक सिपाही उन्हें देखने के लिए उनके क्वार्टर पर पहुंचा। दरवाजा अंदर से बंद था। किसी तरह दरवाजा तोड़कर जब अंदर प्रवेश किया गया तो एसआई अपने बिस्तर पर मृत अवस्था में पड़े मिले। घटना की जानकारी तत्काल उच्चाधिकारियों को दी गई। मौके पर एसपी अभिषेक, एसपी सिटी संजीव बाजपेई और सीओ संग्राम सिंह फोरेंसिक टीम के साथ पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजते हुए परिजनों को सूचित कर दिया है।

हादसे में ममेरे-फुफेरे भाइयों की मौत

बिजनौर, अमृत विचार : नहटौर–नूरपुर मार्ग पर गुरुवार को बाइकों की आमने–सामने की भिड़ंत में ममेरे–फुफेरे भाइयों की मौत हो गई। ग्राम नरगढ़ी निवासी उस्मान पुत्र मुख्तार अंसारी और उसका ममेरा भाई अनस पुत्र युसूफ निवासी ठाठ जाट थाना स्योहारा की बाइक दूसरी बाइक से टकरा गई। टक्कर के बाद उस्मान की बाइक अनियंत्रित होकर सामने से आ रही डीसीएम के नीचे जा घुसी, जिससे दोनों युवक दब गए। घायलों को सीएचसी नहटौर में भर्ती कराया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दोनों युवक अपनी ससुराल ग्राम नेन्हेड़ा से लौट रहे थे, तभी यह हादसा हुआ।

शाहजहांपुर में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरोध में शिक्षकों का प्रदर्शन

शिक्षक बोले- निर्धारित योग्यता व आयु सीमा के कारण लाखों शिक्षक आवेदन ही नहीं कर पाएंगे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: सुप्रीम कोर्ट के 1 सितंबर को दिए गए टीईटी संबंधी निर्णय पर अध्यादेश लाने की मांग को लेकर गुरुवार को सैकड़ों शिक्षक खिरनी बाग मैदान में पर एकत्र होकर प्रदर्शन किया। कहा सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद बेसिक शिक्षा विभाग के लाखों शिक्षक असमंजस में हैं। आदेश में पांच वर्ष से अधिक सेवा दे रहे शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करने को कहा गया है, जबकि 3 सितंबर 2001 तक नियुक्त ओर 23 अगस्त 2010 के पूर्व नियुक्त शिक्षकों को मुक्त करने का प्रावधान भी है। इसी संदर्भ में उप्र जूनियर हाईस्कूल पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ शाहजहांपुर ने प्रधानमंत्री और मानव संसाधन विकास मंत्री को जिलाधिकारी के माध्यम से ज्ञापन भेजकर तत्काल अध्यादेश लाने की मांग की है।

खिरनीबाग में प्रदर्शन के दौरान ज्ञापन देते शिक्षक। ● अमृत विचार

संघ के अध्यक्ष मगर लाल और महामंत्री विश्राम सिंह ने कहा देशभर के लगभग 40 लाख और उत्तर प्रदेश के करीब 4 लाख बेसिक शिक्षक प्रभावित होंगे। सेवा के अंतिम पड़ाव पर पहुंचे शिक्षकों के लिए किसी परीक्षा से गुजरना बेहद कठिन है। वर्ष 2010 की एनसीटीई अधिसूचना और 2011 के शिक्षा अधिकार अधिनियम से पहले नियुक्त शिक्षक, विभागीय सेवा शर्तों को पूर्ण कर चुके हैं। उन्हें पुनः परीक्षा में शामिल करना उचित नहीं है। शिक्षक संघ ने बताया कि टीईटी की पात्रता के लिए स्नातक और बीएड / बीटीसी प्रशिक्षण अनिवार्य है। जबकि 2001 से पूर्व नियुक्त अधिकतर शिक्षक इंटरमीडिएट और बीटीसी योग्यता धारक हैं। साथ ही आयु सीमा 40 वर्ष तय होने से अधिकांश शिक्षक आवेदन ही नहीं कर पाएंगे।

बीपीएड डिग्री वाले और मृतक आश्रित कोटे से 1999 तक नियुक्त शिक्षक भी पात्रता शर्तें पूरी नहीं कर सकते। संघ ने भारत सरकार और एनसीटीई पर यह स्थिति उत्पन्न करने का आरोप लगाते हुए कहा कि लगभग डेढ़ दशक तक सरकार और नियामक संस्था ने शिक्षकों से योग्यता पूरी कराने का कोई प्रयास नहीं किया। अब अचानक सुप्रीम कोर्ट के आदेश का अनुपालन कराना लाखों परिवारों को संकट में डाल देगा।

एम्स की निदेशक बनीं डॉक्टर अमिता जैन

रायबरेली, अमृत विचार: एम्स मुंशीगंज में निदेशक के पद पर मंत्रालय ने प्रो. डॉ. अमिता जैन को नियुक्त किया है। निदेशक प्रो. डॉ. अरविंद राजवंशी का कार्यकाल समाप्त होने के बाद से यह पद खाली चल रहा था। मार्च में राजवंशी का कार्यकाल समाप्त होने के बाद गोरखपुर एम्स निदेशक मेजर जनरल प्रो. डॉ. विभा दत्ता ने यहां का चार्ज कार्यवाहक के रूप मे संभाला था।

लगभग छह माह से निदेशक के खाली चल रहे पद को भरने की जद्दोजहद चल रही थी। जिसके बाद मंत्रालय ने केजीएमयू में डीन के पद से रिटायर प्रो. डॉ. जैन को एम्स मुंशीगंज का निदेशक घोषित किया है। जानकारों की मानें तो आठ सितम्बर को ही निदेशक के पद पर नियुक्ति की मोहर लग गई थी लेकिन बुधवार को आधिकारिक तौर पर निदेशक के खाली पद पर निदेशक की नियुक्त की गई। अधीक्षक प्रो. डॉ. नीरज श्रीवास्तव ने बताया कि निदेशक के पद पर प्रो. डॉ. अमिता जैन की नियुक्ति हो चुकी है।

काशी का मैं कई जन्मों का ऋणी: प्रधानमंत्री मोदी

वाराणसी में गुरुवार को प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत करतीं राज्यपाल आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी। ● अमृत विचार

वाराणसी, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि वह कई जन्मों से काशी का ऋणी हैं और इस ऋण को चुकाने के लिये एक प्रयास भर कर रहे हैं। अपने संसदीय क्षेत्र काशी में मोदी ने मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीनचंद्र रामगुलाम के साथ होटल ताज में द्विपक्षीय बातचीत की। इस दौरान उन्होंने स्थानीय मीडिया से भी कुछ बातचीत की और उन्होंने कहा कि काशी का मैं कई जन्मों का ऋणी हूं, इस ऋण के लिए मैं काशी के लिए एक प्रयास भर कर रहा हूं।

उन्होने कहा कि मुझे आप लोगों ने जो काम सौंपा है, बस उसी को हृदय से पूरा करने में लगा हूं। इसकी वजह से समय बहुत कम मिल पाता है, नहीं तो आप लोगों से मिलता रहता। काशी विश्वनाथ से यही प्रार्थना है कि उनका आशीर्वाद सदैव बना रहे। काशी के लोगों से मिलने की मेरी बहुत इच्छा होती हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी ने मुझे जो जिम्मेदारी दी है, उसी को पूरा करने में लगा हूं। काशी के लोगों का स्नेह मुझे मजबूती प्रदान करता है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम के साथ द्विपक्षीय वार्ता के लिए गुरुवार को वाराणसी पहुंचे। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया। हवाई अड्डे से प्रधानमंत्री हेलीकॉप्टर से पुलिस लाइन पहुंचे। यहां से ताज होटल के लिए निकले प्रधानमंत्री के काफिले का भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यकर्ताओं व आमजन ने शंखनाद, हर-हर महादेव के जयकारों के साथ पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया। मार्ग में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए कलाकारों ने भी प्रधानमंत्री का स्वागत किया। मोदी ने भी हाथ हिलाकर काशीवासियों का अभिवादन किया। प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए पूरे मार्ग को सजाया गया था। पुलिस लाइन से ताज होटल तक रोड शो जैसा नजरा देखा गया जहां सड़क के दोनों ओर बड़ी तादाद में खड़े काशीवासियों ने प्रधानमंत्री मोदी पर पुष्पवर्षा भी की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का अध्यात्म व आधुनिकता के संगम उनकी नयी काशी में हार्दिक स्वागत व अभिनंदन।

अमेरिका के दुनिया में शीर्ष संबंधों वाले देशों में शामिल है भारत: मार्को रुबियो

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने बृहस्पतिवार को कहा कि आज भारत अमेरिका के दुनिया में शीर्ष संबंधों वाले देशों में से एक है और अमेरिका भारत के साथ इस संबंध में "असाधारण बदलाव" के दौर से गुजर रहा है। रुबियो ने सीनेट की विदेश संबंध समिति के समक्ष भारत में अमेरिका के नामित राजदूत सर्जियो गोर के नाम की पुष्टि के लिए सुनवाई के दौरान उनका परिचय दिया। रुबियो ने कहा कि वह गोर को काफी लंबे समय से जानते हैं और उन्हें जिस देश के लिए नामित किया गया है कि मैं कहूंगा कि वह आज अमेरिका के दुनिया में शीर्ष संबंधों वाले देशों में से एक है। पिछले महीने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि वह राष्ट्रपति कार्यालय के कार्मिक निदेशक गोर को भारत में अगला अमेरिकी राजदूत तथा दक्षिण एवं मध्य एशियाई मामलों के लिए विशेष दूत नियुक्त कर रहे हैं। नियुक्ति की पुष्टि होने पर गोर (38) भारत में सबसे कम उम्र के अमेरिकी राजदूत होंगे।

रुबियो ने कहा कि 21वीं सदी में "कहानी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में लिखी जाएगी। वास्तव में, यह इतना महत्वपूर्ण है कि हमने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की कॉम्बैटेंट कमान का नाम बदल दिया है। भारत इसके केंद्र में है। उन्होंने कहा कि हम भारत के साथ अपने संबंधों में एक असाधारण बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। हमारे सामने कुछ बेहद महत्वपूर्ण मुद्दे आ रहे हैं जिन पर हमें उनके साथ मिलकर काम करना होगा। हमें उन पर भी काम करना होगा, जो यूक्रेन में, साथ ही इस क्षेत्र में हो रही घटनाओं को भी प्रभावित करते हैं। रुबियो ने राजदूत पद के लिए गोर के चयन को बिल्कुल उपयुक्त बताते हुए कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि इस पद पर अमेरिका का प्रतिनिधित्व किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाए, जिसे अमेरिका के राष्ट्रपति का विश्वास प्राप्त हो, जो उनका करीबी हो।

निजी भूमि पर अमृत सरोवर बनवाकर 8.21 लाख रूपये लगाए ठिकाने

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: ग्रामीण की निजी भूमि पर खुदाई करवाकर अमृत सरोवर बनाते हुए 8.21 लाख रुपये ठिकाने लगा दिए गए। ग्रामीण की शिकायत के बाद कराई गई जांच में खुली पोल के बाद डीएम ने ग्राम पंचायत इमलिया की प्रधान के वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकार सीज कर दिए। वहीं जांच में दोषी मिले तत्कालीन खंड विकास अधिकारी, सचिव समेत चार के विरुद्ध भी कार्रवाई करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं।

विकास भवन। ● अमृत विचार

● जांच में दोषी मिले तत्कालीन बीडीओ, सचिव, रोजगार सेवक व तकनीकी सहायक

मामला बीसलपुर ब्लॉक की ग्राम पंचायत इमलिया का है। गांव निवासी प्रदीप कुमार ने डीएम को शपथ पत्र सहित की शिकायत में ग्राम प्रधान द्वारा उसकी निजी भूमि पर खुदाई करवाकर अमृत सरोवर बनवाने, प्रधान पति जो कि सफाईकर्मी है, द्वारा पत्नी के स्थान पर स्वयं कार्य करने और सरकारी धन का गबन करने का आरोप लगाते हुए जांच कराने की मांग की थी। डीएम ने मामले को गंभीरता से लेते हुए दो सदस्यीय जांच टीम गठित कर जांच कर आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। जांच टीम में शामिल जिला पूर्ति अधिकारी विकास कुमार और लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता उमेश वर्मा ने गांव पहुंच कर मामले की जांच की। जांच टीम ने अमृत सरोवर के जीर्णोद्धार में शिकायतकर्ता की जमीन शामिल होने पाते हुए रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को सौंप दी। जांच टीम ने 8,21,513 रुपये का दुरुपयोग में ग्राम प्रधान, सचिव, रोजगार सेवक, तकनीकी सहायक और तत्कालीन बीडीओ बीसलपुर को प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया। जांच रिपोर्ट के आधार पर ग्राम प्रधान, सचिव समेत पांच लोगों को संबंधित अधिकारियों की ओर से कारण बताओ नोटिस जारी किए गए। इस मामले में प्रधान रिहाना बेगम ने 22 जुलाई को साक्ष्य सहित अपना जवाब दाखिल कर दिया। मगर, सचिव, रोजगार सेवक, तकनीकी सहायक और तत्कालीन खंड विकास अधिकारी सुनील जायसवाल ने नोटिस का कोई जवाब नहीं दिया। प्रधान द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया। भुवनेश कुमार ने भी डीएम को सौंपे शपथ पत्र के माध्यम से ग्राम पंचायत में मनरेगा के तहत संपर्क मार्ग पर मिट्टी कार्य के संबंध में शिकायत की।

डीएम ने कराई जांच

इस मामले में भी डीएम ने दो सदस्यीय जांच टीम गठित कर जांच कराई। जांच में पाया गया कि बिना राजस्व लेखपाल की पैमाइश किए निजी भूमि को तालाब में शामिल करते हुए अमृत सरोवर का जीर्णोद्धार करा दिया गया। इसमें कार्य का बिना स्थलीय परीक्षण कर वित्तीय एवं तकनीकी स्वीकृति निर्गत करने के लिए तत्कालीन खंड विकास अधिकारी बीसलपुर समेत ग्राम प्रधान, सचिव, रोजगार सेवक और तकनीकी सहायक को दोषी पाया गया। वहीं संपर्क मार्ग की जांच में भी घपलेबाजी पाई गई। इधर गुरुवार को डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने अमृत सरोवर के अंतर्गत तालाब के जीर्णोद्धार में 8,21,513 रुपये का गबन पाते हुए ग्राम प्रधान रिहाना बेगम के वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकारों पर प्रतिबंध लगा दिया।

किशोरी से दुष्कर्म के दोषी को सात वर्ष की कैद

रामपुर, अमृत विचार: किशोरी से दुष्कर्म करने के मामले में एडीजे आठ ने दोषी को सात वर्ष की सजा और एक लाख पांच हजार का जुर्माना अदा करने की सजा सुनाई है। मिलक थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक ग्रामीण ने आरोप लगाया था। 20 नवंबर 2023 को उसकी बेटी का अपहरण करके हरीश ने दुष्कर्म किया था।पुलिस ने तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज करके चार्जशीट कोर्ट में दाखिल कर दी थी। जिसकी सुनवाई एडीजे आठ की कोर्ट में हो रही थी।

पब्लिक नोटिस

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल जना स्माल फाईनेंस बैंक शाखा बरेली से मोहन लाल पुत्र मिढ़ई लाल व श्रीमती रेखा रानी पत्नी मोहन लाल निवासीगण चीएएल0–1 नार्थ सिटी एक्सटेंशन बरेली एक किता मकान रकबई 45.98 वर्गमी0 जो गाटा नं. 63 में से वाके धौरैरा माफी तह0 व जिला बरेली को बंधक रखकर आपकी शाखा से ऋण ले रहे है उक्त सम्पत्ति को मोहन लाल व अन्य ने द्वारा बैनामा जिसकी रजिस्ट्री स.र. बरेली में दिनांक 30.07.2021 ई0 को बही सं. 1 जिल्द 12776 के पृष्ठ 335–350 में नं0 10446 पर हुई है इकरारी केवल हरीश कुमार से क्रय की थी जबकि हरीश कुमार व राजेश कुमार एडवोकेट ने एक किता कृषि भूमि तादादी 0.0890 हे0 द्वारा बैनामा जिसकी रजिस्ट्री स.र. बरेली में दिनांक 12.03.2013 ई0 को बही सं0 1 जिल्द सं0 5598 के पृष्ठ 111–188 में नं0 3300 पर हुई है इकरारी सरन पाल उर्फ सरन लाल व अन्य से क्रय की थी उक्त आराजी में से 45.98 वर्गमी. हरीश कुमार ने राजेश कुमार एड0 को सम्मिलित किए बिना द्वारा बैनामा दि0 30.07.2021 को मोहन लाल व अन्य को विक्रय कर दी। अतः सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यदि उक्त राजेश कुमार एड0 को उक्त बैनामे के निष्पादन के सम्बन्ध में या किसी अन्य व्यक्ति/बैंक/संस्था आदि को उक्त बंधक सम्पत्ति के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सामान्य कार्य दिवस के 07 दिन के अन्दर मेरे मुवक्किल जना स्माल फाईनेंस बैंक शाखा बरेली पर या मेरे कार्यालय पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर दर्ज करा सकता है उक्त समयावधि बीत जाने के उपरान्त मेरे मुवक्किल द्वारा उक्त ऋण जारी कर दिया जायेगा। **अमिताभ भंज (एडवोकेट) चैम्बर नं. 11 बड़ा वकालतखाना सिविल कोर्ट, बरेली सूचीबद्ध अधिवक्ता जना स्माल फाईनेंस बैंक, बरेली**

PUBLIC NOTICE

This is to certify all concerned that, on behalf of my client, Jana Small Finance Bank having its Branch office at Bareilly, I hereby give notice that one customer, Mohan Lal S/o Midhai Lal & Smt Rekha Rani W/o Mohan Lal R/o PL-1 North City Extension Bareilly has applied for loan over a house admeasuring 45.98 Sq.Mt. part of Gata No. 63 situated at Dhaurera Mafi Tehsil & Distt. Bareilly which was purchased from only Harish Kumar through Registered sale deed dated 30-07-2021 Bahi no. 1 Volume 12776 pages 335-350 at Sl. no. 10446 at SRO Bareilly. That Harish Kumar & Rajesh Kumar Advocate had purchased a agri- cultural land area 0.0890 H. from Saran Pal Urf Saran Lal & others through Registered sale deed dated 12-03-2013 Bahi no. 1 Volume 5598 pages 111- 188 at Sl. no. 3300 at SRO Bareilly and Harish Kumar sold 45.98 Sq. Mt. property from the said land to Mohan Lal & other without including Rajesh Kumar Ad. through sale dated 30-07-2021. If regarding the execution of the said sale deed Rajesh Kumar Ad. or any concern, Bank, financial institution or person having any claim, objec- tion related to the above proposed mortgage of said property with Jana Small Finance Bank, he/she may kindly contact me within 07 days (in normal working period) from the date of publication of this notice in the below mentioned address failing which no claim will be entertained later and Jana Small Finance Bank, will disburse the loan to proposed customer. **Amitabh Bhanj Advocate Chamber No. 11, Bara Vakalatkhana Civil Court, Bareilly-243001 Penal Advocate Jana Small Finance Bank, Bareilly**

रूसी सेना में भारतीयों की भर्ती बंद की जाए

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत ने गुरुवार को अपने नागरिकों से रूसी सेना में शामिल होने के प्रस्तावों को स्वीकार न करने का आग्रह किया और मॉस्को से मांग की कि वह रूसी सेना में भारतीय नागरिकों को सहायक कर्मचारियों के रूप में भर्ती करना बंद करे।

● भारत के विदेश मंत्रालय ने इस मामले को रूसी अधिकारियों के समक्ष उठाया

विदेश मंत्रालय ने कहा कि उसने इस मामले को दिल्ली और मॉस्को दोनों स्थानों पर रूसी अधिकारियों के समक्ष उठाया है। नई दिल्ली का यह कदम उन खबरों के बाद आया है कि छात्र और व्यावसायिक वीजा पर आये कुछ भारतीयों को यूक्रेन में युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर तैनात रूसी सैन्य इकाइयों में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया था। मंत्रालय ने अपने भारतीय नागरिकों को आगाह किया है कि वे रूसी सेना में शामिल होने के प्रस्तावों को स्वीकार न करें, क्योंकि इसमें जोखिम और खतरे निहित हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि हमने हाल में रूसी सेना में भारतीय नागरिकों की भर्ती की खबरें देखी हैं।

सरकार ने पिछले एक साल में कई मौकों पर इस तरह की कार्रवाई में निहित जोखिमों और खतरों को रेखांकित किया है और भारतीय नागरिकों को तदनुसार आगाह किया है। जायसवाल इस मुद्दे पर मीडिया के सवालों का जवाब दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमने दिल्ली और मॉस्को दोनों जगहों पर रूसी अधिकारियों के कि हम एक बार फिर सभी भारतीय नागरिकों से रूसी सेना में शामिल होने के किसी भी प्रस्ताव से दूर रहने का पुरजोर आग्रह करते हैं क्योंकि यह खतरों से भरा रास्ता है। हाल के महीनों में रूसी सेना द्वारा भर्ती किए गए भारतीय नागरिकों की संख्या अभी तक ज्ञात नहीं है। आधिकारिक विवरण के अनुसार, अतीत में 126 भारतीयों को रूसी सेना में भर्ती किया गया था तथा 12 मारे गये थे। रूसी अधिकारियों ने 96 भारतीयों को कार्यमुक्त कर दिया था तथा 16 को लापता घोषित कर दिया गया था। भारत बार-बार रूस से रूसी सैन्य इकाइयों में रसोइये और सहायक जैसे कर्मचारियों के रूप में कार्यरत सभी भारतीयों को कार्यमुक्त करने का अनुरोध करता रहा है। पिछले साल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी रूस की अपनी यात्रा के दौरान यह मुद्दा उठाया था।

अयोध्या आएंगे मॉरीशस के पीएम योगी करेंगे स्वागत

अयोध्या, अमृत विचार: रामलला के दर्शन करने के लिए मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन चंद्र राम गुलाम शुक्रवार सुबह लगभग 11 बजे वाल्मीकि एयरपोर्ट पर पहुंचेंगे।

जिले के प्रभारी व कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने बताया कि जहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व अन्य जनप्रतिनिधि उनका स्वागत करेंगे। इसके बाद वह राम जन्मभूमि परिसर पहुंचेंगे। जहां श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट और अयोध्या के कुछ प्रमुख संत उनका स्वागत करेंगे। मंदिर परिसर में रामलला, रामदरबार और कुबेश्वर महादेव आदि के दर्शन करेंगे।

जिया की पार्टी की छात्र शाखा ने विवि चुनावों का बहिष्कार किया

ढाका/नयी दिल्ली, एजेंसी

पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की छात्र शाखा ने ढाका विश्वविद्यालय में करारी हार के दो दिन बाद बृहस्पतिवार को एक प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालय में चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव का बहिष्कार किया। बीएनपी द्वारा समर्थित जातीयतावादी छात्र दल (जेसीडी) ने जमात-ए-इस्लामी समर्थित इस्लामी छात्र शिविर (आईसीएस) पर धांधली का आरोप लगाते हुए जहांगीरनगर विश्वविद्यालय केंद्रीय छात्र संघ (जेयूसीएसयू) चुनाव से हटने की घोषणा की। आईसीएस ने मंगलवार को ढाका विश्वविद्यालय केंद्रीय छात्र संघ (डीयूसीएसयू) में भारी जीत हासिल की, जबकि जेसीडी ने चुनाव परिणामों को खारिज करते हुए आरोप लगाया कि चुनाव में 'हेरफेर किया गया था।

आईसीएस, बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी पार्टी की छात्र शाखा है। हिंसा की आशंकाओं के चलते बांग्लादेश की सेना ने राजधानी के बाहरी इलाके में स्थित जहांगीरनगर विश्वविद्यालय परिसर और उसके आसपास अर्धसैनिक बल बीजीबी (बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश) के साथ मिलकर सैनिकों को तैनात किया, जबकि इससे पहले सेना ने छात्र संघ चुनावों में सुरक्षा के लिए तैनात होने से इनकार किया था।

अफसरों की फटकार के बाद डाककर्मी की तबीयत बिगड़ी

जैतीपुर, अमृत विचार: उप डाक घर खेड़ा बझेड़ा में जीडीएस पैकर की पोस्ट पर तैनात दुर्विजय सिंह (28) की तबियत बिगड़ गई। आरोप है गुरुवार को शाहजहांपुर से औचक निरीक्षण करने आए सुपरिडेंट राजेश शर्मा, सहायक डाक अधीक्षक व उनके स्टेनो ने उसे जमकर फटकार लगाई। पोस्ट ऑफिस में साफ सफाई कराने के साथ ही जबरदस्ती 200 खाता खोलने को कहा, जिससे दुर्विजय सिंह की तबीयत खराब हो गई। हालत बिगड़ने पर उनको सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें रेफर कर दिया गया।

कवायद | एनएचएआई ने शुरू की कांन्सटेंसी के लिए टेंडर प्रक्रिया, 200 किमी. लंबा होगा मार्ग

अयोध्या से वाराणसी तक बनेगा हाईस्पीड एक्सेस कंट्रोल एक्सप्रेस–वे

अयोध्या कार्यालय।

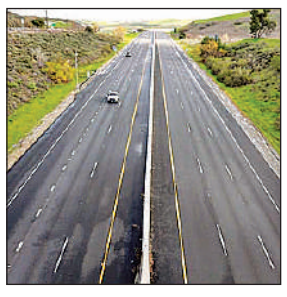

अमृत विचार: रामनगरी से बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी तक हाईस्पीड एक्सेस कंट्रोल एक्सप्रेस-वे का निर्माण जल्द शुरू होने जा रहा है। इससे दोनों आध्यात्मिक शहरों की दूरी मात्र दो घंटे में तय की जा सकेगी।

नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने एक्सप्रेस-वे की कांन्सटेंसी के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। चयनित संस्था इसके लिए डीपीआर बनाएगी। प्रस्तावित एक्सप्रेस-वे को पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जाएगा।

● पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे से जुड़ेगा, दिल्ली तक और मजबूत होगी कनेक्टिविटी

जिससे अयोध्या से दिल्ली तक की कनेक्टिविटी और मजबूत होगी। लगभग 200 किलोमीटर लंबे इस एक्सप्रेस-वे के बन जाने से यात्रियों को तेज, सुरक्षित और निर्बाध आवागमन की सुविधा मिलेगी।सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने अयोध्या में कई बड़ी परियोजनाएं चलाई हैं। इनमें 84 कोसी परिक्रमा मार्ग, रामजानकी मार्ग अयोध्या से जनकपुर, अयोध्या-सुल्तानपुर व अयोध्या-जगदीशपुर मार्ग, राम वन गमन मार्ग के साथ-साथ यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर लखनऊ हाईवे पर अनेक ओवरब्रिज और अंडरपास का निर्माण शामिल हैं। इसके अलावा, अयोध्या बाईपास का सौंदर्यीकरण 55 करोड़ की लागत से कराया गया है।

शहर के यातायात दबाव को कम करने और राष्ट्रीय महत्व की कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए रिंग रोड का काम प्रगति पर है। अयोध्या-प्रयागराज ग्रीनफील्ड एक्सेस कंट्रोल छह लेन हाईवे के प्रथम चरण में प्रतापगढ़ तक के लिए सीमांकन की प्रक्रिया चल रही है। इन परियोजनाओं के पूरे होने पर अयोध्या उत्तर भारत का एक प्रमुख सड़क संपर्क केंद्र बन जाएगा, जिससे न केवल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि औद्योगिक और व्यापारिक गतिविधियों को भी गति मिलेगी।

परियोजना पीएम मोदी और गडकरी की दूरदर्शी सोच का परिणाम

अयोध्या से वाराणसी के बीच सड़क परिवहन को उच्च स्तरीय विकसित करने के लिए लंबे समय से प्रयासरत पूर्व सांसद सिंह ने एक्सप्रेस–वे निर्माण को अयोध्या और पूर्वांचल के लिए ऐतिहासिक कदम बताया। कहा अयोध्या से वाराणसी हाईस्पीड एक्सप्रेस–वे का निर्माण प्रधानमंत्री और सड़क परिवहन मंत्री गडकरी की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। इस एक्सप्रेस–वे से न केवल अयोध्या की देशभर से कनेक्टिविटी बेहतर होगी, बल्कि धार्मिक पर्यटन, उद्योग और व्यापार को भी नई गति मिलेगी।

डूंगरपुर मामले में 17 को होगी सुनवाई

रामपुर, अमृत विचार : सपा शासनकाल में डूंगरपुर में बने मकानों पर बुलडोजर चलवाकर उन्हें गिरवा दिया था। जिसमें सपा नेता आजम खां सहित कई लोगों को आरोपी बनाया गया था। एडीजीसी सीमा सिंह राणा ने बताया कि अब 17 सितंबर को सुनवाई होगी।

कार्यालय ग्राम पंचायत खेड़ा वि.खं. आलमपुर जाफराबाद

निविदा आमंत्रण सूचना

सभी पंजीकृत फर्म एवं आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2025–26 कि ग्राम पंचायत खेड़ा में ग्राम निधि/मनरेगा से आदि योजनाओं के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि से स्वीकृत कार्य योजना के अनुसार ईट, सीमेन्ट, बजरफुट, बजरी, लोहा आदि सामग्री की आपूर्ति आमंत्रित की जाती है। जिसकी सीलबन्द निविदाएं ग्राम पंचायत के कार्यालय पर दिनांक 12.09.2025 से 19.09.2025 को अपरान्ह 12:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। जिसे 19.09.2025 को दोपहर 02 बजे खोला जायेगा।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनुमानित लागत
1.	ग्राम पंचायत खेड़ा में समुदाय के लिये खाद्यान्न भण्डारण का निर्माण कार्य	7.90x 7.30 m	886799/-

कुसुम राजपूत
ग्राम प्रधान

तुषार राज
ग्राम सचिव

नवरात्र की तैयारी

कोलकाता में गुरुवार को दुर्गा पूजा उत्सव से पहले एक कारीगर देवी दुर्गा की मूर्ति को रंगता हुआ। कच्चे माल की बढ़ती कीमतों और मौसम की अनिश्चितता के बावजूद कारीगर अपनी कला और परंपरा के प्रति समर्पित हैं। एजेंसी

खतरनाक जल क्षेत्रों से गुजरेंगी तीनों सेनाओं की महिलाएं

नई दिल्ली, एजेंसी

पहले महिला जलयात्रा नौकायन अभियान को रक्षामंत्री राजनाथ ने दिखाई हरी झंडी

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अगले नौ महीनों में दुनिया के कुछ सबसे खतरनाक जल क्षेत्रों समेत लगभग 26,000 समुद्री मील की दूरी तय करने के लिए तीनों सेनाओं के महिला जलयात्रा अभियान को बृहस्पतिवार को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नौकायन पोत त्रिवेणी पर सवार दस महिला अधिकारी 'समुद्र प्रदक्षिणा' नामक अभियान का हिस्सा हैं, जिसे दुनिया में इस तरह की पहली त्रि-सेवा यात्रा बताया जा रहा है।

अभियान की शुरुआत मुंबई के गेटवे ऑफ इंडिया से हुई और रक्षा मंत्री ने इसे दिल्ली से ऑनलाइन तरीके से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर अपने संबोधन में सिंह ने इस यात्रा को नारी शक्ति, तीनों सेनाओं की सामूहिक शक्ति, एकता, आत्मनिर्भर भारत और इसकी सैन्य तथा कूटनीतिक दूरदर्शिता का एक उज्ज्वल प्रतीक बताया। रक्षा मंत्रालय ने कहा, 10 महिला अधिकारी अगले नौ महीनों में स्वदेश निर्मित भारतीय सेना के नौकायन पोत (आईएएसवी) त्रिवेणी पर सवार होकर पूर्वी मार्ग पर लगभग 26,000 समुद्री मील की यात्रा करेंगी। इसने कहा, वे भूमध्य रेखा को दो बार पार करेंगी, तीन अंतरीपों - लीउविन, हॉर्न और गुड होप - का चक्कर लगाएंगी और सभी प्रमुख महासागरों और दक्षिणी महासागर तथा 'ड्रेक पैसेज' समेत कुछ सबसे खतरनाक जलक्षेत्रों को पार करेंगी। मई 2026 में मुंबई लौटने से पहले यह दल चार अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों का भी दौरा करेगा। 'ड्रेक पैसेज' को दुनिया के सबसे जोखिमयुक्त जलमार्गों में से एक माना जाता है। मई 2026 में मुंबई लौटने से पहले यह दल चार अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाहों का भी दौरा करेगा। दस सदस्यीय दल में अभियान का नेतृत्व करने वाली लेफ्टिनेंट कर्नल अनुजा वरुडकर, स्क्वाड्रन लीडर श्रद्धा पी राजू, मेजर करमजीत कौर, मेजर ओमिता दलवी, कैप्टन प्राजक्ता पी निकम, कैप्टन दौली बुटोला, लेफ्टिनेंट कमांडर प्रियंका गुसाईं, विंग कमांडर विभा सिंह, स्क्वाड्रन लीडर अरुवी जयदेव और स्क्वाड्रन लीडर वैशाली भंडारी शामिल हैं।

सशस्त्र बलों की महिला अधिकारी विश्व भ्रमण अभियान के लिए भारतीय सेना के नौकायन पोत (आईएएसवी) त्रिवेणी पर सवार होकर मुंबई के गेटवे ऑफ इंडिया से निकलीं।

अनेक चुनौतियों का करना पड़ेगा सामना

रक्षा मंत्री ने 'समुद्र प्रदक्षिणा' को केवल एक जहाज पर की गई यात्रा ही नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना और अनुशासन एवं दृढ़ संकल्प की यात्रा भी बताया। उन्होंने कहा, अभियान के दौरान, हमारे अधिकारियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन उनके दृढ़ संकल्प की लौ अंधकार को चीरती हुई आगे बढ़ेगी। वे सुरक्षित घर लौटकर विश्व को दिखाएंगी कि भारतीय महिलाओं का पराक्रम किसी भी सीमा से परे है। इस त्रि-सेवा अभियान को तीनों सेनाओं के बीच एकजुटता के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बताया।

नेशनल ब्रीफ

121 करोड़ के बैंक धोखाधड़ी में छापेमारी

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने अहमदाबाद स्थित एक निजी कंपनी के खिलाफ 121 करोड़ रुपये के बैंक धोखाधड़ी मामले में गुजरात में कई जगहों पर छापेमारी की है। सीबीआई ने एक बयान में कहा कि बुधवार को अहमदाबाद और गांधीनगर में तीन स्थानों पर छापेमारी की गई तथा आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए। उसने कहा कि 'बैंक ऑफ इंडिया' की शिकायत के आधार पर सीबीआई ने 'अनिल बायोप्लस' और उसके निदेशकों अमोल श्रीपाल शेठ, दर्शन मेहता और नलिन ठाकुर के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इस जांच एजेंसी ने कहा, शिकायत में आरोप लगाया गया है कि कंपनी के निदेशकों ने बैंक ऑफ इंडिया के अज्ञात अधिकारियों के साथ मिलकर एक सुनियोजित साजिश रची और बैंक को 121.60 करोड़ रुपये का गलत तरीके से नुकसान पहुंचाया।

एएसआई यमुना नदी में डूबा, मौत

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस का एक सहायक उप-निरीक्षक (एएसआई) अपने पिता का 'श्राद्ध' कर्म करते समय यमुना नदी में कथित तौर पर डूब गया। अधिकारी ने बताया कि एएसआई की पहचान संजय (46) के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि वह पिछले तीन दिनों से यमुना घाट पर अपने पिता का श्राद्ध कर्म कर रहे थे। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, पुजारी ने बुधवार सुबह संजय को यमुना नदी में स्नान के लिए जाते देखा था। जब वह वापस नहीं आए तो पुजारी ने सुबह लगभग 10 बजे पीसीआर कॉल की। पुलिस ने मौके से उनके कपड़े और जूते बरामद कर लिए हैं और गोताखोरों की मदद से बचाव अभियान चलाया जा रहा है।

हथियार तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस ने गुरुवार को फाजिल्का जिले में भारत-पाकिस्तान सीमा के निकट संगठित हथियार तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया और 27 अत्याधुनिक पिस्तौल तथा 470 कारतूस बरामद करने के बाद दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने बताया कि 'काउंटर इंटेलिजेंस' (सीआई) फिरोजपुर और राज्य विशेष अभियान प्रकोष्ठ (एसएसओसी) फाजिल्का द्वारा यह अभियान शुरू किया गया। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने बताया कि आरोपियों की पहचान फाजिल्का के तेजा रहेला निवासी मंगल सिंह उर्फ मंगली और फाजिल्का के मुहर जमशेर गांव निवासी गुरमीत सिंह के रूप में हुई है।

पुलिस अधिकारी जब वर्दी पहन लेते हैं, तो उन्हें निजी और धार्मिक पूर्वाग्रहों को त्यागना चाहिए

सांप्रदायिक दंगा मामले में महाराष्ट्र पुलिस पर कर्तव्यहीनता और मामले में प्राथमिकी दर्ज न करने की घोर लापरवाही का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को कहा कि जब पुलिस अधिकारी वर्दी पहन लेते हैं, तो उन्हें अपने व्यक्तिगत तथा धार्मिक झुकाव और पूर्वाग्रहों को त्याग देना चाहिए। इसके साथ ही न्यायालय ने महाराष्ट्र के अकोला में 2023 में हुए सांप्रदायिक दंगों के दौरान हत्या के कथित मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया।

महाराष्ट्र पुलिस पर कर्तव्यहीनता और मामले में प्राथमिकी दर्ज न करने की घोर लापरवाही का आरोप लगाते हुए न्यायमूर्ति संजय कुमार व न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने राज्य के गृह विभाग के सचिव को हिंदू और मुस्लिम समुदायों के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की एक एसआईटी गठित करने का निर्देश दिया, जो प्राथमिकी दर्ज कर जांच करेगी। पीठ ने कहा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जब पुलिस बल के सदस्य अपनी वर्दी पहन लेते हैं, तो उन्हें अपने व्यक्तिगत झुकाव और पूर्वाग्रहों को त्यागना पड़ता है, चाहे वे धार्मिक, नस्लीय, जातिवादी या अन्य किसी भी तरह के हों। उन्हें अपने पद और अपनी वर्दी से जुड़े कर्तव्य के प्रति पूरी निष्ठा और ईमानदारी से काम करना चाहिए। दुर्भाग्य से, इस मामले में ऐसा नहीं हुआ। मई 2023 में अकोला के पुराने शहरी क्षेत्र में पैगंबर मोहम्मद के बारे में एक धार्मिक पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद झड़पें शुरू हो गई थीं। इस घटना में विलास महादेवराव गायकवाड़ नामक व्यक्ति की मौत हो गई थी तथा मामले के याचिकाकर्ता समेत आठ लोग घायल हो गये थे। याचिकाकर्ता मोहम्मद अफजल मोहम्मद शरीफ के अनुसार, चार लोगों ने गायकवाड़ पर तलवार, लोहे के पाइप और अन्य वस्तुओं से हमले किए। याचिकाकर्ता ने कहा कि चारों हमलावरों ने उनके वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया तथा उसके सिर और गर्दन पर अपने हथियारों से हमला किया। याचिकाकर्ता के अनुसार, उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया और पुलिस ने उनका बयान दर्ज किया।

सुप्रीम कोर्ट ने मृत्युदंड पाए दोषी को किया बरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक लड़की के साथ दुष्कर्म और हत्या के लिए दोषी और मौत की सजा पाए कैदी को बरी कर दिया। कहा कि जल्दबाजी में सुनाई गई मौत की सजा कानून के शासन को कमजोर करती है। मामले में दुष्कर्म पीड़िता का शव वर्ष 2014 में मिला था। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने अभियोजन पक्ष द्वारा अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए परिस्थितियों की पूर्ण और अटूट श्रृंखला साबित करने में विफलता को रेखांकित किया। पीठ ने नवंबर 2014 में उत्तराखंड के हल्द्वानी क्षेत्र के काठगोदाम पुलिस थाने में दर्ज मामले में सात साल की जेल की सजा पाए सह-अभियुक्त को भी बरी कर दिया। पीठ ने 10 सितंबर के अपने फैसले में कहा कि निचली अदालतों के साथ-साथ हाईकोर्ट को भी मौत की सजा देने से पहले अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। पीठ ने कहा कि मृत्युदंड की अपरिवर्तनीय प्रकृति के कारण मौत की सजा केवल दुर्लभतम मामलों में ही सुनाई जानी चाहिए। पीठ ने कहा कि अभियोजन पक्ष के मामले में जरा सा भी संदेह या पुख्ता साक्ष्य नहीं होने पर ऐसी सजा सुनाने से बचा जाना चाहिए। यह फैसला उत्तराखंड उच्च न्यायालय के अक्टूबर 2019 के आदेश को चुनौती देने वाली दो दोषियों की अपील पर आया। उच्च न्यायालय ने एक आरोपी की मौत की सजा की पुष्टि की, जबकि दूसरे आरोपी को दी गई सात साल की जेल की सजा बरकरार रखी थी।

भारत-पाकिस्तान मैच पर कोर्ट बोली- जल्दी क्या है

सुप्रीम कोर्ट ने आगामी एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले क्रिकेट मैच को रद्द करने के अनुरोध वाली याचिका पर गुरुवार को तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया। एक वकील ने न्यायमूर्ति जे के माहेश्वरी और विजय बिश्नोई की पीठ के समक्ष मामले को तत्काल सुनवाई के लिए पेश किया। पीठ ने कहा कि इसमें जल्दी क्या है? यह मैच है, इसे होने दीजिए। मैच इसी रविवार को है, क्या किया जा सकता है? वकील ने दलील दी कि क्रिकेट मैच रविवार को है और यदि मामला शुक्रवार को सूचीबद्ध नहीं किया गया तो याचिका निरर्थक हो जाएगी। पीठ ने कहा कि इस रविवार को मैच है? हम इसमें क्या कर सकते हैं? इसे होने दीजिए। मैच होना चाहिए। उर्वशी जैन के नेतृत्व में चार विधि छात्रों द्वारा दायर याचिका में कहा गया है कि पहलगाम आतंकवादी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान से क्रिकेट मैच का आयोजन राष्ट्रीय गरिमा और जनभावना के विपरीत है। दोनों देश 14 सितंबर को दुबई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में भिड़ेंगे।

छत्तीसगढ़ : मुठभेड़ में 10 नक्सली ढेर

गरियाबंद, एजेंसी

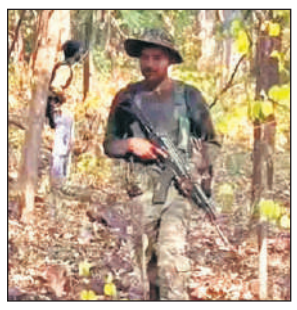

- प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) के वरिष्ठ नेता मोड़ेम बालकृष्ण उर्फ भास्कर भी मृत नक्सलियों में शामिल

छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में कम से कम 10 नक्सलियों को मार गिराया है। पुलिस अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि मारे नक्सलियों में प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय समिति सदस्य मोड़ेम बालकृष्ण उर्फ भास्कर भी शामिल है।

रायपुर क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक अमरेश मिश्रा ने बताया कि गरियाबंद जिले के मैनपुर क्षेत्र में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 10 नक्सलियों को मार गिराया है। मैनपुर क्षेत्र के जंगलों में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कोबरा बटालियन, विशेष कार्य बल (एसटीएफ) और ई-30 (जिला पुलिस की एक इकाई) को नक्सल विरोधी अभियान में रवाना किया गया था। आज सुबह से ही क्षेत्र में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ जारी है। वहीं नक्सलियों ने बारूदी सुरंग में विस्फोट भी किया है। मुठभेड़ में कई नक्सली कमांडर समेत 10 नक्सलियों के मारे जाने की जानकारी मिली है। पुलिस के अनुसार, राजधानी रायपुर से 180 किलोमीटर दूर स्थित शीर्ष नक्सलियों की गतिविधि की सूचना के बाद यह अभियान शुरू हुआ था। पुलिस ने बताया कि प्रतिबंधित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय समिति के सदस्य (सीसीएम) मोड़ेम बालकृष्ण के मुठभेड़ में मारे जाने की संभावना है। बालकृष्ण को उसके उपनाम बालन्ना, रामचंदर और भास्कर से भी जाना जाता है, वह उड़ीसा राज्य समिति (ओएससी) का सचिव था और 1980 के दशक की शुरुआत में आंदोलन में शामिल हुआ था। इस मुठभेड़ के साथ, इस साल अब तक छत्तीसगढ़ में मुठभेड़ों में 241 नक्सली मारे गए हैं।

मणिपुर के चुराचांदपुर में उपद्रवियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प

चुराचांदपुर/इम्फाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मणिपुर यात्रा से पहले बृहस्पतिवार शाम राज्य के कुकी बहुल चुराचांदपुर जिले में दो स्थानों पर उपद्रवियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि पियर्सनमुन गांव और फिलियन बाजार में उपद्रवियों ने प्रधानमंत्री के दौरे के सिलसिले में सड़कों पर लगाये गये बैनर और 'कटआउट' फाड़ दिए तथा बैरिकेड् हटा दिए। उन्होंने बताया कि बदमाशों ने भागने से पहले सुरक्षाकर्मियों पर पत्थर फेंके। एक जिला अधिकारी ने बताया कि चुराचांदपुर में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए अर्धसैनिक बल 'फ्लैग मार्च' और गश्त कर रहे हैं।

राहुल गांधी सुरक्षा प्रोटोकॉल नहीं मानते : सीआरपीएफ

नई दिल्ली, एजेंसी

- अर्धसैनिक बल की वीआईपी सुरक्षा शाखा ने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे को पत्र भेजकर लगाया आरोप

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने दावा किया है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपनी आवाजाही के दौरान कुछ सुरक्षा प्रोटोकॉल का उल्लंघन किया है। सीआरपीएफ की वीआईपी सुरक्षा शाखा 55 वर्षीय गांधी को 'जेड प्लस (एएसएल)' सशस्त्र सुरक्षा प्रदान करती है। जब भी राहुल गांधी कहीं जाते हैं, 10-12 सशस्त्र सीआरपीएफ कमांडो उनके साथ होते हैं।

उन्नत सुरक्षा संपर्क (एएसएल) के एक भाग के रूप में, सीआरपीफ गांधी द्वारा दौरा किए जाने वाले स्थानों का निरीक्षण करती है। अर्धसैनिक बल की वीआईपी सुरक्षा शाखा ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पत्र भेजा है, जिसमें कहा गया है कि गांधी ने अपने घरेलू दौरे के दौरान और विदेश जाने से पहले, बिना किसी सूचना के कुछ अनिर्धारित गतिविधियां कीं। नियमित ऐसा होता है और सीआरपीएफ सुरक्षा शाखा ने सुरक्षा के संदर्भ की जानकारी पहले भी दी थी। बल ने रेखांकित किया कि अघोषित गतिविधियां उच्च जोखिम वाले वीआईपी की सुरक्षा के लिए ''जोखिम'' पैदा करती हैं।

चूहों के हमले में दो बच्चियों की मौत घोर लापरवाही : हाईकोर्ट

इंदौर। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने इंदौर के शासकीय महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय (एमवायएच) में चूहों के हमले के बाद दो नवजात बच्चियों की मौत के मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए इस घटना को पहली नजर में एमवायएच प्रशासन की घोर लापरवाही करार दिया है। हाईकोर्ट की इंदौर पीठ के न्यायमूर्ति विवेक रुसिया और जय कुमार पिल्लई ने इस मामले का स्वतः संज्ञान लिया। पीठ ने कहा कि उसे अखबारों के समाचारों के आधार पर इस चौंकाने वाली घटना का पता चला जिसका जनहित याचिका के तौर पर स्वतः संज्ञान लिए जाने की जरुरत है। हाईकोर्ट ने एमवायएच के आईसीयू में चूहों के हमले के बाद दो नवजात बच्चियों की मौत का हवाला देते हुए आदेश में कहा कि पहली नजर में यह घटना घोर लापरवाही प्रतीत होती है।

फिजियोथेरेपिस्ट अब नाम के आगे नहीं लगा पाएंगे 'डॉ'

नई दिल्ली, एजेंसी

- डीजीएचएस ने फिजियोथेरेपिस्टों को नाम के साथ 'डॉ' लगाने पर रोक वाला निर्देश लिया वापस

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) ने फिजियोथेरेपिस्टों को अपने नाम के आगे डॉक्टर शब्द लगाने पर रोक वाला निर्देश वापस ले लिया है। उसने कहा है कि इस मामले में अभी और जांच की आवश्यकता है। डीजीएचएस डॉ. सुनीता शर्मा ने नौ सितंबर को आईएमए के अध्यक्ष डॉ. दिलीप भानुशाली को पत्र लिखकर कहा था कि फिजियोथेरेपिस्ट अपने नाम के आगे डॉ लगाने के पात्र नहीं हैं और यह शब्द केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिए ही है।

शर्मा ने बुधवार को लिखे पत्र में कहा कि इसके बाद इस विषय पर कुछ अभ्यावेदन मिले हैं, जिन पर और गहन विचार-विमर्श की आवश्यकता है, इसलिए उक्त पत्र को वापस लिया

जाता है, क्योंकि इस मामले पर अभी और परीक्षण और विचार किया जाना है। शर्मा ने नौ सितंबर को कहा था कि निदेशालय को फिजियोथेरेपिस्टों द्वारा अपने नाम के आगे डॉ और बाद में पीटी लगाने के संबंध में आईएपीएमआर समेत विभिन्न संगठनों से कई ज्ञापन और कड़ी आपत्तियां प्राप्त हुई हैं।

डूसू चुनावों के लिए छात्र संगठनों ने उम्मीदवार किए घोषित

नई दिल्ली। ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) व स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) गठबंधन समेत प्रमुख छात्र संगठनों ने 18 सितंबर को होने वाले दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की गुरुवार को घोषणा की।

परिसर में महिला नेतृत्व के लिए नए सिरे से प्रयास करते हुए, दो संगठनों ने डूसू चुनावों में अध्यक्ष पद के लिए महिलाओं को मैदान में उतारा है। आरएसएस समर्थित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने अध्यक्ष पद के लिए आर्यन मान, उपाध्यक्ष पद के लिए गोविंद तंवर को मैदान में उतारा है। आइसा और एसएफआई ने इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज की छात्रा अंजलि को अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनाया है।

राहुल के वोट चोरी अभियान की पटकथा व संवाद विदेश से लिखकर आए : भाजपा

नई दिल्ली, एजेंसी

- कांग्रेस नेता पर देश के लोकतंत्र में हस्तक्षेप करने के विदेशी एजेंडे को आगे बढ़ाने का लगाया आरोप

प्रदीप भंडारी

शहजाद पूनावाला

भाजपा ने गुरुवार को दावा किया कि राहुल गांधी के वोट चोरी अभियान की पटकथा और संवाद विदेश से लिखकर आए हैं। भाजपा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर देश के लोकतंत्र में हस्तक्षेप करने के विदेशी एजेंडे को आगे बढ़ाने का आरोप लगाया।

सत्तारूढ़ दल ने दावा किया कि 'निर्विवाद साक्ष्य' सामने आए हैं, जो दर्शाते हैं कि राहुल गांधी ने हाल ही में भाजपा और निर्वाचन आयोग के खिलाफ वोट चोरी का आरोप लगाने के लिए जो पावर-पॉइंट प्रेजेंटेशन दिया था, वह विदेशी धरती से आया था। इन आरोप पर कांग्रेस या राहुल गांधी की ओर से प्रतिक्रिया नहीं आई। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने एक्स पर कहा कि सात अगस्त को राहुल गांधी ने वोट चोरी का शोर मचाते हुए प्रेस वार्ता की और राहुल गांधी डॉट इन नाम की वेबसाइट पर अंग्रेजी, हिंदी व कन्नड़ में पीडीएफ अपलोड किए। जांच में पता चला कि तीनों पीडीएफ का मेटाडेटा म्यांमा टाइमजोन है। ये तथाकथित सबूत भारत में नहीं बनाए गए। इन्हें म्यांमा टाइमजोन पर सेट पर बनाया गया था। राहुल का अंतर्राष्ट्रीय वोट चोरी टूलकिट पकड़ा गया।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि सब जानते हैं कि राहुल गांधी को भारत से ज्यादा विदेशी धरती और विदेशियों पर भरोसा है, लेकिन किसी ने कभी नहीं सोचा होगा कि वोट चोरी के आरोप पर उनके नाटक और संवादों की पटकथा भारत के बाहर से लिखी व भेजी जा रही है। उन्होंने कहा कि तकनीकी सबूत दिखाते हैं कि कथित वोट चोरी पर कांग्रेस नेता का पावर-पॉइंट प्रेजेंटेशन विदेशी धरती पर बनाया गया था और इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता।

चिंतनीय | दिल्ली उच्च न्यायालय ने छात्र आत्महत्या के बढ़ते मामलों पर पर गहरी चिंता जताई

छात्र आत्महत्याएं रोकने को सक्रिय एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन जरूरी

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली उच्च न्यायालय ने छात्र आत्महत्या के बढ़ते मामलों पर पर गहरी चिंता जताते हुए एक प्रभावी रैगिंग विरोधी हेल्पलाइन की स्थापना को एक मजबूत एवं कारगर उपाय के रूप में रेखांकित किया है।

मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और न्यायमूर्ति अनीश दयाल की पीठ ने उच्च शिक्षण संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य और छात्र आत्महत्या के मुद्दों पर उच्चतम न्यायालय के एक आदेश का भी हवाला दिया और तत्काल कदम उठाने का आह्वान किया। पीठ ने कहा, अदालत पहले ही कह चुकी है कि वह छात्र आत्महत्या के मुद्दे को लेकर बहुत चिंतित है, जो लगातार बढ़ रही है और इसकी रोकथाम के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की आवश्यकता है, जैसा कि शीर्ष अदालत ने अमित कुमार एवं अन्य बनाम भारत संघ (सुप्रा) मामले में रेखांकित किया है। पीठ ने 10 सितंबर के अपने आदेश में कहा, इस समस्या से निपटने के लिए मजबूत, कुशल और प्रभावी प्रक्रियाएं एवं कार्यक्रम शुरू करने के वास्ते कम से कम एक उचित कार्यात्मक एवं प्रभावी रैगिंग विरोधी हेल्पलाइन की तत्काल स्थापना निश्चित रूप से बेहद जरूरी है। इसमें कोई देरी नहीं की जा सकती, वरना हम इस संकट के कारण और अधिक युवाओं की जान गंवा देंगे।

उच्च न्यायालय ने अमन सत्य काचरू ट्रस्ट की ओर से दायर दो याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान यह निर्देश दिया, जिनमें राष्ट्रीय रैगिंग रोकथाम कार्यक्रम के प्रबंधन के सिलसिले में कई राहत देने का अनुरोध किया गया था। अमन सत्य काचरू ट्रस्ट 2012 से राष्ट्रीय रैगिंग रोकथाम कार्यक्रम का संचालन कर रहा था। अप्रैल 2022 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने एक निविदा जारी की, जिसके बाद कार्यक्रम का संचालन सेंटर फॉर यूथ सोसाइटी (सी4वाई) को सौंप दिया गया।

हर साल औसतन 13 हजार से अधिक मामले

ट्रस्ट ने अपनी एक याचिका में रैगिंग विरोधी कार्यक्रम के प्रबंधन और निगरानी के लिए सोसायटी को दिए गए ठेके को रद्द करने का अनुरोध किया। दूसरी याचिका में यूजीसी को उसका नोटिस, विज्ञापन और ठेका रद्द करने का निर्देश देने का आग्रह किया गया है। राष्ट्रीय अपराध नियंत्रण ब्यूरो (एनसीआरबी) और विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में हर साल छात्र आत्महत्या के औसतन 13 हजार से अधिक मामले सामने आते हैं। आंकड़ों के अनुसार, देश में छात्र आत्महत्या के मामलों में हर साल औसतन चार फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है।

अमृत विचार

शुक्रवार, 12 सितंबर 2025

हताश न होना सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह मनुष्य को कर्मों में प्रेरित करता है और उत्साह ही कर्म को सफल बनता है। – **महार्षि वाल्मीकि**

साझेदारी की ओर

भारत और अमेरिका के बीच दोस्ती का रिश्ता हमेशा से ही खास और गहरा रहा है। दोनों देश लोकतंत्र, स्वतंत्रता और समान अधिकारों जैसे मूल्यों में गहरी आस्था रखते हैं और यही कारण है कि इन्हें एक-दूसरे का स्वाभाविक साझेदार कहा जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बातचीत ने इस रिश्ते की अहमियत को और उजागर किया। ट्रंप ने भारत को स्वाभाविक सहयोगी बताते हुए संबंधों की सराहना की, जबकि मोदी ने भी इसे सकारात्मक रूप से लिया और बातचीत को आगे बढ़ाने की इच्छा जताई। यह घटना केवल औपचारिकता नहीं थी, बल्कि यह संकेत देती है कि दोनों देशों के बीच आपसी विश्वास और समझ लगातार गहरी हो रही है। यह विश्वास भविष्य में न केवल द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा देगा, बल्कि वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करेगा। भारत-अमेरिका रिश्तों की मज़बूती का सबसे बड़ा कारण यह है कि दोनों देश अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में स्थिरता और शांति के पक्षधर हैं और उनके हित एक-दूसरे से मेल खाते हैं। यह तालमेल आने वाले समय में पूरी दुनिया के लिए सकारात्मक असर छोड़ सकता है।

वर्तमान समय में भारत और अमेरिका के बीच सबसे प्रमुख मुद्दा व्यापार है। पिछले कुछ वर्षों में कई तरह की शुल्क दरों और व्यापारिक प्रतिबंधों के कारण तनाव की स्थिति बनी थी। अमेरिका ने भारत के कुछ उत्पादों पर शुल्क बढ़ाया, वहीं भारत ने भी अमेरिकी वस्तुओं पर कुछ पाबंदियां लगाईं। इन परिस्थितियों के चलते दोनों देशों के रिश्ते में खटास आई, लेकिन अब हालात धीरे-धीरे बदल रहे हैं। मोदी ने साफ कहा है कि दोनों देशों की टीमें समझौते को अंतिम रूप देने के लिए गंभीरता से काम कर रही हैं। यदि यह प्रयास सफल होता है तो भारत को तकनीकी सहयोग, निवेश और औद्योगिक विकास में नई दिशा मिलेगी। दूसरी ओर अमेरिकी कंपनियों को भारत के विशाल और तेजी से बढ़ते बाजार तक पहुंचने का अवसर मिलेगा। इससे न केवल द्विपक्षीय व्यापार बढ़ेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। भारत और अमेरिका की साझेदारी केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह रणनीतिक और सुरक्षा के क्षेत्र में भी उतनी ही मज़बूत है। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोनों देश एक साथ खड़े हैं और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता को लेकर उनका दृष्टिकोण लगभग समान है। अमेरिका भारत को आधुनिक रक्षा तकनीक और उपकरण उपलब्ध कराता है, जबकि भारत एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में क्षेत्रीय शांति बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है। इसके अलावा विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा और डिजिटल तकनीक जैसे क्षेत्रों में सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। भारतीय प्रवासी समुदाय ने भी दोनों देशों को और करीब लाने का काम किया है, जो न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी रिश्तों को गहराई देता है। यही वजह है कि भारत-अमेरिका रिश्ते केवल कूटनीति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जनता और समाज के स्तर पर भी मजबूत होते जा रहे हैं। यदि यह साझेदारी आपसी विश्वास, व्यावहारिक दृष्टिकोण और परस्पर सम्मान पर आगे बढ़ती रही तो यह निश्चय ही 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली और सशक्त साझेदारी सिद्ध होगी। यह संबंध न केवल भारत और अमेरिका की जनता को लाभान्वित करेंगे, बल्कि पूरी दुनिया में शांति, स्थिरता और विकास की नई इबारत लिखेंगे।

प्रसंगवश

थंडरस्टॉर्म, झमाझम और भीगी-भागी गड़बड़

सूचना क्रांति ने जर्रे-जर्रे को तरह-तरह की खबरों से इस कदर भर दिया है कि चारों ओर ब्रेकिंग न्यूज का ओवरफ्लो दिखता है। सच तो यह है कि आज का अनुभूत सच गूगल से उठा ली गई सेकंड हैण्ड जानकारियों का जमावड़ा है। वे विद्वान, जिन्हें अपना वजूद जानने को जीपीएस खंगालना पड़ता है, अपने शाब्दिक वाणों से सरकार को सरपट दौड़ाने की कोशिश में लगे रहते हैं। अब कुछ भी ऐसा नहीं बचा, जिसे गोपनीय कहा जा सके। मौसम की भविष्यवाणी इतनी सटीक कि उसके निर्धारित समयानुसार लोग प्याज कतरने और बेसन घोलने का काम शुरू करते है। अब कन्फ्यूजन केवल शब्दावली को लेकर है। मौसम विभाग कहता है, थंडरस्टॉर्म, लेकिन न कोई गड़-गड़, न कोई तड़-तड़, सिर्फ झमाझम और भीगीभागी गड़बड़। अब कहते हैं कि मन भीग जाता है, पर तरबतर होने को देह थोड़ी पड़ जाती है। यमुना का जल खतरे के निशान के आसपास पहुंच जाने की पुख्ता खबर है। इससे दिल्ली वालों पर रत्ती भर फर्क नहीं पड़ता। फिलहाल उनकी चिंताएं अवमानना और क्षमायाचना के इर्द-गिर्द लगातार दोलन कर रही हैं। कहने वाले कहते घूम रहें हैं कि घड़ी के भीतर फिसलती वक्त की बालू इतिहास रचने को तत्पर है। लोगों का कहना है कि जब अवमानना होनी थी, हो गई, जो बीत गया वो बीत गई। बात-बात पर बात का बतंगड़ कोई क्यों बनाए? क्षमायाचना भी तो कुल मिलाकर सॉरी का हिंदी वर्जन ही है, कह दिया तो कह दिया, नहीं कहा तो भी क्या। आजकल छींकते समय मुंह को आस्तीन में छुपा लेने का चलन है। ऐसे में बंदा यथासमय मुंह और नाक को कवर करे या सॉरी आदि कहने की औपचारिकता में उलझकर वायरस प्रसार में योगदान दे डाले।

निर्मल गुप्त
वरिष्ठ लेखक

दिल्ली में निचले इलाकों में रहने वाले बाढ़ के द्वारा किए जाने वाले सालाना उत्पात के लिए कमर कसे लगभग तैयार बैठे हैं। ऊंचे दर्जे की कॉलोनियों में रहने वालों के लिए यह संभावित जलसा है।

दिल्ली में निचले इलाकों में रहने वाले बाढ़ के द्वारा किए जाने वाले सालाना उत्पात के लिए कमर कसे लगभग तैयार बैठे हैं। ऊंचे दर्जे की कॉलोनियों में रहने वालों के लिए यह संभावित जलसा है। जलथल जब एक होगा तब सरकार द्वारा आसमान में उड़ते हेलीकॉप्टर से बाढ़ पीड़ितों की थाह ली जाएगी। कोई भी राहत प्रदान करने से पहले बड़े-बड़े रंगीन इश्तेहार जारी होंगे। जगह-जगह राहत सामग्री को नेपथ्य में रख नेताजी के भीमकाय कटआउट लगेंगे। लार्जर देन लाइफ। इतना सब हो लेने के उपरांत यदि जरूरत महसूस हुई तो इधर-उधर थोड़ी-बहुत राहत सामग्री भी टपका दी जाएगी। साथ ही साथ बाढ़जी से विनम्र निवेदन किया जाएगा कि जो हुआ, बहुत हुआ, अब तुम चुपके से उतर लो। अन्यथा हम तुम्हें चुल्लू में भर-भर कर अन्यत्र उलीच देंगे। सयाने कह गए हैं कि अनुनय-विनय से बिगड़े हुए अधिकतर काम बन जाते हैं। इससे जटिल परिस्थिति में फंसा आदमी भी बिना जग हंसाई कराए दबे पांव पतली गली से बच निकलता है। सब जानते हैं कि भीषण आपदा में खुद को बचा ले जाने का हुनर कायरता नहीं, कार्य कुशलता माना जाता है। बात तो केवल सही समय पर उपयुक्त शब्दावली के प्रयोग की है। आज नहीं तो कल यह बहता हुआ जिद्दी पानी अपने चिह्न छोड़ता खतरे के निशान के आरपार निकल जाएगा। समय चाहे कितनी भी आशंकाओं से भरा हो, देर या सवेर बीत जाएगा।

बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से फूटी बदलाव की चिंगारी

दिग्विजय सिंह
कानपुर

नेपाल वह राष्ट्र है जिसे न तो अंग्रेज गुलाम बना पाए और न ही मुगल शासक वहां अपनी जड़े जमा सके। इसकी बड़ी वजह थी नेपाली युवाओं में देश की आन-बान और शान के लिए मर मिटने का जज्बा, लेकिन वही नेपाल अपने जनप्रतिनिधियों के भ्रष्टाचार, निरंकुशता की वजह से हार गया। गरीबी, भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी की वजह से नेपाल में आंदोलन की चिंगारी फूटी, जिसकी वजह से प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को सत्ता छोड़नी पड़ी और एक पूर्व प्रधानमंत्री की पत्नी की हत्या तक हो गई। यहां 2019 में बेरोजगारी दर 10.39 प्रतिशत थी, जो अब 10.71 फीसद हो गई है। नेपाल की नेशनल स्टैटिस्टिक्स ऑफिस द्वारा जारी किए गए नेपाल लिविंग स्टैंडर्ड सर्वे के अनुसार यहां 2022-2023 में 15 से 24 साल के युवाओं में बेरोजगारी दर 22.7 प्रतिशत पाई गई, जो कि 1995-96 में मात्र 7.3 प्रतिशत थी। यह रिपोर्ट बताने के लिए काफी है कि यहां की सरकार ने रोजगार देने और गरीबी उन्मूलन के लिए कुछ भी नहीं किया।

सत्ता प्रतिष्ठानों पर बैठे लोगों ने सिर्फ अपनी जेब भरने में ही दिलचस्पी दिखाई। देश की कुल संपत्ति का 56 प्रतिशत हिस्सा यहां के 20 प्रतिशत लोगों के पास है, जो यह बताने के लिए काफी है कि यहां आर्थिक असमानता की खाई कितनी गहरी है।

सत्ता प्रतिष्ठानों पर बैठे लोगों ने सिर्फ अपनी जेब भरने में ही दिलचस्पी दिखाई। देश की कुल संपत्ति का 56 प्रतिशत हिस्सा यहां के 20 प्रतिशत लोगों के पास है, जो यह बताने के लिए काफी है कि यहां आर्थिक असमानता की खाई कितनी गहरी है। सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण आबादी का बड़ा हिस्सा आर्थिक रूप से तंग है। एक तरफ बेरोजगारी और गरीबी की मार है तो दूसरी तरफ महंगाई भी यहां के लोगों का जीना दुश्वार कर रही है। 2019 में महंगाई दर 4.6 प्रतिशत थी, जो अब 5.2 प्रतिशत हो गई। यह आंकड़ा दर्शाता है कि महंगाई रोकने के लिए कोई ठोस उपाय सरकार ने नहीं किए। हालांकि पड़ोसी राष्ट्र में इन समस्याओं के लिए कुछ हद तक राजनीतिक उठापटक भी जिम्मेदार है। सरकारें अपना कार्यकाल भी पूरा नहीं कर पा रही हैं। ऐसे में जो नीतियां बनती भी हैं प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो पा रही हैं। नेपाल की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से कर्ज पर आश्रित है। 2023 में सार्वजनिक कर्ज 24 लाख करोड़ रुपये था, जो 2024 में बढ़कर 26 लाख करोड़ रुपये हो गया। यह कर्ज नेपाल की जीडीपी का 44.77 प्रतिशत है। अगर इस कर्ज में विदेशी हिस्सेदारी की बात करें तो यह 50.87 प्रतिशत है, जो यह बताने के लिए काफी है कि इस देश की अर्थव्यवस्था कर्ज के बोझ तले दबी हुई है। देश में औद्योगिक विकास की कमी, कोरोना के बाद पर्यटकों की संख्या में आई गिरावट ने भी यहां की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाया है।

देश में रोजगार न मिलने से युवा भारत, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया जैसे देशों में नौकरी करने को मजबूर हैं। वे जो धनराशि वहां से भेजते हैं, उसे रेमिटेंस कहा जाता है। 2022 में विश्व बैंक द्वारा जारी की गई रिपोर्ट पर गौर करें तो नेपाल की जीडीपी का लगभग 21.8 प्रतिशत हिस्सा रेमिटेंस से ही आता है। अपने देश में यदि रोजगार मिले तो शायद ही युवा दूसरे देशों में जाकर नौकरी करें, लेकिन यहां की सरकारों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। परिणाम स्वरूप तकनीकी रूप से दक्ष नेपाली युवा भी सिक्योरिटी गार्ड जैसी नौकरी करने के लिए विवश हैं। यही वजह है कि जेन-जी कहे जाने वाले 16 से 25 साल के युवा नाराज होकर सड़कों पर उतरे और उन्होंने ओली सरकार को उखाड़ फेंका। अब बात करें भ्रष्टाचार की तो यह दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। ओली सरकार से विभिन्न तरह के सौदों में रिश्वत लेने का आरोप लगा था।

उन पर आरोप था कि उन्होंने भारी भरकम राशि विदेशी बैंकों में जमाकर रखी है और उससे उन्हें हर साल दो करोड़ रुपये से अधिक ब्याज मिलता है। 2021 में नेपाल में 54 हजार करोड़ रुपये से अधिक का घोटाला सामने आया था तो 2024 मतें 69 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की धनराशि के भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ने के आरोप लगे थे। इन घोटालों की जांच हो रही है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के अध्यक्ष एवं पूर्व उप प्रधानमंत्री रबी लामिछाने को सहकारी फंड घोटाले के कारण ही जेल जाना पड़ा था। हालांकि आंदोलनकारियों ने उन्हें जेल से छुड़ा लिया। युवा यह मानते हैं कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा था।

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल भी एक दवा कंपनी को भूमि आवंटन में घोटाले के आरोपों का सामना कर रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली, शेर बहादुर देउबा, पुष्प दलह प्रचंड और बाबूराम भट्टराई भी भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे हुए हैं। इन नेताओं पर परिवारवाद का भी आरोप है। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर लगातार सरकार में बैठे नेताओं और पूर्व प्रधानमंत्रियों व मंत्रियों पर भ्रष्टाचार से जुड़ी मुहिम युवा छेड़े हुए थे और जब इन प्लेटफार्मों पर प्रतिबंध लगा तो वे सड़क पर उतर गए और सरकार को उखाड़ फेंका।

आमने

प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी से बातचीत में हमने भारत-इटली रणनीतिक साझेदारी को और मज़बूत करने की अपनी संयुक्त प्रतिबद्धता दोहराई। पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-यूरोपीय संघ व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने और आईएमईसी पहल के माध्यम से संपर्क को बढ़ावा देने में इटली के सक्रिय सहयोग के लिए धन्यवाद।
– **नरेंद्र मोदी**, प्रधानमंत्री

सामने

भारतीय प्रधानमंत्री के साथ टेलीफोन पर बातचीत हुई, जिसमें हमने द्विपक्षीय संबंधों की उत्कृष्ट स्थिति पर संतोष व्यक्त किया। इटली-भारत रणनीतिक कार्य योजना 2025-2029 को और गहन बनाने की अपनी साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि की, जिसकी शुरुआत आईएमईसी सहित व्यापार, निवेश और संपर्क में सहयोग को मज़बूत करने से होगी।
–**जॉर्जिया मेलोनी**, इटली प्रधानमंत्री

इकोसिस्टम सर्विसेज से संरक्षित होंगे प्राकृतिक संसाधन

प्रो. एचसी पुरोहित
समन्वयक, हिंदू अध्ययन केंद्र, दून विश्वविद्यालय

विश्व के सभी देश आज आपदाओं से ग्रस्त हैं, इनमें प्राकृतिक और मानवजनित दोनों तरह की आपदाएं शामिल हैं। इन आपदाओं का प्रभाव उन देशों पर भी है, जो कार्बन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। जैसे कैरेबियन, डोमिनिका, अफ्रीका का कोमोरोस आदि। क्योंकि पर्यावरण संकट या जलवायु परिवर्तन किसी देश की सीमा तक सीमित न होकर यह समूचे भू मंडल को प्रभावित करता है। विश्व के सभी देश आज आपदाओं से ग्रस्त हैं। विश्व आर्थिक मंच के आंकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष आपदा से विस्थापित होने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

2023 में आपदाओं के कारण आंतरिक विस्थापन लगभग 7.7 मिलियन था। 2024 में आंतरिक विस्थापन लगभग 45.8 मिलियन था, जिसमें 99.5 प्रतिशत विस्थापन जलवायु प्रेरित था और अनुमान है कि यह संख्या वर्ष 2050 तक 1.2 अरब से अधिक हो जाएगी। आपदाओं से होने वाला पलायन युद्ध के कारण होने वाले पलायन से भी अधिक है। आपदाग्रस्त विश्व समुदाय की प्रमुख पीड़ा का कारण उपभोक्तावाद और बाजारवादी आर्थिक मॉडल हैं, क्योंकि आज की अर्थव्यवस्थाएं पूंजीवादी रेखीय मॉडल पर आधारित हैं, जिसके अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम दोहन कर उन्हें विभिन्न वस्तुओं में परिवर्तित एवं निर्मित करना है, जिससे वे उपभोक्ताओं के उपभोग हेतु उपलब्ध हों और उपयोग के पश्चात नष्ट कर दिए जाएं। संक्षेप में यह नीति 'टेक-मेक-डिस्पोज' के नाम से प्रचलित है।

इस प्रणाली में उत्पादों का पुनः उपयोग नहीं किया जाता और उसे कचरा समझ कर फेंक दिया जाता है, जिससे बड़ी मात्रा में अपशिष्ट और प्रदूषण उत्पन्न हो रहा है। इससे प्राकृतिक साधनों का तीव्र क्षरण होने के साथ ही पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित हो रहा है। इससे जनित आपदा से निपटने के लिए हर देश द्वारा हर वर्ष करोड़ों रुपये व्यय किए जाते हैं, परंतु आपदाओं से जो मानसिक आघात पहुंचता है और जान-माल की क्षति से जो दर्द पहुंचता है, उसकी प्रतिपूर्ति शायद ही कभी हो पाए। इसलिए आवश्यकता है कि प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण हेतु मानव समाज को संवेदनशीलता के साथ सामूहिक प्रयास करना होगा। तभी इस समस्या का दीर्घकालीन समाधान संभव होगा और इसके लिए आर्थिक विकास का रेखीय मॉडल के बजाय चक्रीय (सर्कुलर) मॉडल अपनाना होगा। क्योंकि चक्रीय अर्थव्यवस्था का मॉडल उत्पादन और उपभोग हेतु उत्पादों और सामग्रियों को यथासंभव लंबे समय तक साझा करना, पट्टे पर देना, पुनः उपयोग, मरम्मत, नवीनीकरण और पुनर्चक्रण शामिल है, ताकि उन्हें अपशिष्ट बनने से रोका जा सके और कचरे को कम किया जा सके।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा करने से प्रकृति से मिलने वाली निःशुल्क सेवाएं जैसे-ऑक्सीजन, जैव विविधता, जल संरक्षण आदि लगभग डेढ़ दर्जन सेवाओं का मूल्यांकन प्रकृति के प्रति समाज को संवेदनशील बनाएगी और उनके संरक्षण को प्रोत्साहित करेगा। आर्थिक विकास का मॉडल उपभोग की जगह प्रकृति संरक्षण और रेखीय के बजाय चक्रीय आधार अपने से पारिस्थितिकी तंत्र की व्यापकता और सार्वभौमिकता सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगी। इकोसिस्टम सर्विसेज के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर एस पी सिंह का कार्य, विशेष रूप से हिमालयी वन पारिस्थितिकी प्रणालियों पर 2002 में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को जैविक और अजैविक घटकों के बीच परस्पर क्रिया से प्राप्त लाभों के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें कार्बन पृथक्करण, मृदा उर्वरता में सुधार, मृदा और वायु शोधन और जलवायु नियंत्रण शामिल हैं। उनका शोध वनों द्वारा प्रदान की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं पर केंद्रित है, जिनमें ईंधन, लकड़ी, भोजन, जैव उत्पाद, जल आपूर्ति और आनुवंशिक विविधता शामिल हैं। उनके द्वारा पहचानी गई प्रमुख पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में, प्रावधान सेवाएं: ये पारिस्थितिक तंत्रों से प्राप्त उत्पाद हैं। इकोसिस्टम सर्विसेज को पहचानना और इनकी गणना करने की दिशा में रॉबर्ट कोस्टानजा ने 90 के दशक में काफी प्रयास किए। वर्ष 1997 में उनका शोध प्रकाशित होने से दुनिया की इस विषय पर रुचि बढ़ी। उसके बाद वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव कॉफी अन्नन ने भी इस विषय पर दिलचस्पी दिखाई और मिलेनियम इकोसिस्टम एसेसमेंट प्रारंभ करने पर जोर दिया। इकोसिस्टम सर्विसेज की गणना कई देशों में छोटे स्तर पर तो की जाती है, परंतु समग्र रूप से यह प्रचलन में नहीं है, लेकिन अब समय आ गया है कि हम सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त सेवाओं की गणना को प्राथमिकता दें और उस आधार पर आर्थिकी का मापन करें। इसके लिए वैश्विक स्तर पर सामुहिक प्रयास पर्यावरण संकट व जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से मुकाबला करने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक सिद्ध होगा।

हिमालय दिवस की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब हिमालय के संरक्षण के लिए इकोसिस्टम सर्विसेज का मूल्यांकन को आर्थिकी के मापन में किया जाना वैश्विक स्तर पर प्रारंभ होगा, क्योंकि इस प्रकार के प्रयास प्राकृतिक संसाधनों के प्रति मानव समाज को अधिक संवेदनशील बनाएंगे।

विश्व के सभी देश आज आपदाओं से ग्रस्त हैं। विश्व आर्थिक मंच के आंकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष आपदा से विस्थापित होने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

सोशल फोरम

नैतिक शिक्षा बनाम नैतिकता

स्कूल में "नैतिक शिक्षा" को मॉरल साइंस के सब्जेक्ट के रूप में पढ़ाया जाता था। वैसे तो मुझे स्कूल और स्कूली शिक्षा से बहुत चिढ़ थी, लेकिन मिडिल क्लास के परिवारों में बच्चों का स्कूल जाना और पढ़ाई-लिखाई करना जरूरी था और मजबूरी भी। इसी में माता-पिता को बच्चों का भविष्य दिखाई देता था। नैतिक शिक्षा में हमें वही करने को कहा जाता था, जो हम असल में करते नहीं थे। इसलिए यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए आदि आदि। "चाहिए" पर बहुत जोर रहता था। उदाहरण के लिए सुबह जल्दी उठना चाहिए। उठते ही माता-पिता के चरण स्पर्श करने चाहिए। पूजा करनी चाहिए। स्कूल में अध्यापकों के पैर छूने चाहिए। झूठ नहीं बोलना चाहिए, गाली-गलौज नहीं करना चाहिए। बड़ों का आदर करना चाहिए। सब कुछ करना चाहिए, जिसे समाज सही मानता हो, अपेक्षा करता हो या एप्रूव करता हो, तो नैतिक शिक्षा का अर्थ मेरे लिए यह यह था कि मैं जो करता हूं वह सब अनैतिक है।

अमरजीत सिंह
लेखक

फिर स्कूल में हमें कविता पढ़ाई जाती थी। हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत की। मेरे हिसाब से इन सबका व्यावहारिक जीवन में कोई उपयोग नहीं था। उस समय तो फेसबुक के पिताजी भी पैदा तो क्या प्लानिंग में भी नहीं थे। वर्ना समझता कि शायरी कविता वगैरह फेसबुक पर चिपकाकर कुछ लाइक वगैरह बटोरने के काम आते। कविता किसी ने लिखी और उसका भावार्थ लिखने का जिम्मेदारी हम छठी सातवीं के लौंडों पर थी। मैं सोचता कि सही अर्थ तो लेखक को पता होगा। हम क्यों परेशान हों कि इसका मतलब क्या हुआ। अब कबीर, तुलसी, सूरदास, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान और रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता का सही मूल्यांकन करने की हैसियत होती तो क्या आठवीं क्लास में इम्तिहान पास करने के लिए पढ़ रहा होता। अब जिसने डायनामाइट बना भी दिया वह भी कहां खुश था। वह भी प्रायश्चित करने के लिए अपनी अर्जित धन दौलत से नोबेल शांति पुरस्कार ही बांटकर गया। आजकल जब भी चुनाव होते हैं तो चुनाव प्रचार की खबरें प्रमुखता से छपती हैं। उम्मीदवारों के संबध में सभी जरूरी जानकारी अखबारों से मिलती हैं। किसी उम्मीदवार के पास कितनी धन-दौलत है और उसकी शैक्षणिक योग्यता क्या है। किसके खिलाफ कितने आपराधिक मामले लंबित हैं। इसे देखने पर पता लगता है कि अर्जित जायदाद का शैक्षणिक योग्यता से कोई संबंध नहीं हैं। आठवीं, दसवीं और बारहवीं पास उम्मीदवारों के पास पचास, साठ और सत्तर करोड़ रुपए की चल-अचल संपत्ति है, जो शायद किसी अच्छी पोस्ट पर रिटायर्ड ईमानदार अधिकारी के पास भी नहीं होगी।

सामयिकी

पड़ोस की अस्थिरता और भारत की अर्थव्यवस्था

भारत के लिए पड़ोसी देशों की स्थिरता केवल कूटनीतिक या सुरक्षा का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह उसकी अर्थव्यवस्था और निवेश माहौल को भी प्रभावित करती है। हाल ही में नेपाल में बढ़ती राजनीतिक अस्थिरता और चीन का दबदबा भारत के लिए एक बड़ा खतरा बनकर सामने आया है। लगभग 1,850 किलोमीटर लंबी खुली सीमा और साझा सांस्कृतिक-आर्थिक संबंध भारत-नेपाल रिश्तों को बेहद संवेदनशील बनाते हैं। हर साल लाखों नेपाली नागरिक भारत में काम करते हैं और दोनों देशों के बीच सालाना 74,000 करोड़ से अधिक का व्यापार होता है, लेकिन जब नेपाल की राजनीति में अस्थिरता आती है, तो भारत का निर्यात, निवेश और सीमा सुरक्षा सीधे प्रभावित होती है।

वित्त वर्ष 2023-24 के आंकड़े बताते हैं कि भारत ने नेपाल को लगभग 74,000 करोड़ का निर्यात किया, जिसमें पेट्रोलियम उत्पाद, दवाइयां, स्टील और मशीनरी शामिल थे। वहीं, भारत ने नेपाल से कृषि उत्पाद और जड़ी-बूटियां आयात कीं। अगर नेपाल की अर्थव्यवस्था अस्थिर होती है, तो वहां की मांग घटेगी और भारत के छोटे व मध्यम उद्योगों पर असर पड़ेगा। इसके अलावा भारत ने नेपाल के हाइड्रोपावर सेक्टर में बड़े पैमाने पर निवेश किया है। लगभग 6,000 मेगावाट हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स भारत और नेपाल की साझेदारी से चल रहे हैं। राजनीतिक अनिश्चितता और चीन की दखलंदाजी इन प्रोजेक्ट्स को खतरे में डाल सकती है। भारत की चिंता केवल नेपाल तक सीमित नहीं है। पाकिस्तान के साथ लंबे समय से चले आ रहे तनाव के कारण भारत का रक्षा बजट हर साल बढ़ता जा रहा है। बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता और प्रवासन मुद्दे भारत की सामाजिक संरचना को प्रभावित कर रहे हैं। वहीं, मालदीव में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत की हिंद महासागर क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। इन परिस्थितियों का असर भारत की अर्थव्यवस्था और निवेश माहौल पर भी देखा जा रहा है। विदेशी निवेशक अक्सर पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र को एक ही नजरिए से देखते हैं। अगर नेपाल या श्रीलंका जैसे देशों में अस्थिरता बढ़ती है, तो भारत को भी "रिस्क जोन" के रूप में देखा जाता है।

रजत मेहरोत्रा
वित्तीय सलाहकार

वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट बताती है कि 2024 में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह यूएस $71 बिलियन रहा, जो पिछले साल से 10 प्रतिशत कम है। इसका एक कारण क्षेत्रीय अस्थिरता और भू-राजनीतिक तनाव भी है। ऐसे हालात में भारत को बहुआयामी रणनीति अपनानी होगी। वर्तमान में नेपाल-भारत सीमा पर केवल 120 से अधिक चेक-पोस्ट सक्रिय हैं, जबकि निगरानी और तकनीकी सुधार की जरूरत है ताकि अवैध तस्करी और नकली करेंसी की समस्या से निपटा जा सके। क्षेत्रीय स्तर पर भारत को सार्क और बिम्सटेक जैसे मंचों को फिर से सक्रिय करना होगा। दक्षिण एशियाई क्षेत्र का कुल सकल घरेलू उत्पाद लगभग यूएस $ 4 ट्रिलियन है, जिसमें अकेले भारत का हिस्सा 80 प्रतिशत से अधिक है। भारत यदि इन मंचों को नेतृत्व प्रदान करता है, तो क्षेत्रीय स्थिरता और व्यापारिक एकीकरण संभव हो सकता है। साथ ही भारत को निवेशकों को यह संदेश देना होगा कि पड़ोस की अस्थिरता के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था स्थिर और सुरक्षित निवेश का केंद्र है। इसके लिए टैक्स सुधार, नीति स्थिरता और तेज न्यायिक प्रक्रियाओं को प्राथमिकता देनी होगी। नेपाल की अस्थिरता केवल नेपाल की समस्या नहीं है, बल्कि भारत के लिए भी एक आर्थिक और रणनीतिक चुनौती है। अगर भारत अपने पड़ोसियों के साथ मजबूत और स्थिर संबंध बनाए रखने में सफल होता है, तो वह अपनी सकल घरेलू उत्पाद, व्यापार और निवेश माहौल को सुरक्षित रख पाएगा। भारत को यह समझना होगा कि पड़ोस की स्थिरता ही उसकी आर्थिक मजबूती की नींव है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

कैंसर से जंग में विज्ञान की नई छलांग!

कैंसर आज दुनिया की सबसे गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों में गिना जाता है। यह बीमारी हर साल लाखों लोगों को प्रभावित करती है और लाखों की जान ले लेती है। यह रोग शरीर की कोशिकाओं के अनियंत्रित विकास और प्रसार से होता है, जो स्वस्थ ऊतकों को नष्ट कर देती हैं और शरीर के अन्य भागों में मेटास्टेसिस (फैलाव) का कारण बनती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, कैंसर वैश्विक मृत्यु दर का लगभग एक-छठा हिस्सा है। साल 2022 में दुनियाभर में लगभग 2 करोड़ नए मामले सामने आए और करीब 97 लाख लोगों की मौत हुई। अमेरिकन कैंसर सोसाइटी की 2025 रिपोर्ट के अनुसार, अकेले अमेरिका में 6.18 लाख लोग कैंसर के कारण अपनी जान खो सकते हैं।

डॉ. शिवम भारद्वाज
असिस्टेंट प्रोफेसर

ऐतिहासिक झलक

कैंसर का उल्लेख लगभग 2500 वर्ष पहले यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने "कार्सिनोमा" कहकर किया था। भारत में प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में "अरबुद" और "ग्रंथि" जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है। 19 वीं शताब्दी में आधुनिक सर्जरी और माइक्रोस्कोपिक अध्ययन ने कैंसर को बेहतर ढंग से समझने का रास्ता खोला। 20 वीं शताब्दी में रेडिएशन, कीमोथेरेपी और बाद में इम्यूनोथेरेपी जैसी तकनीकों ने इलाज के नए रास्ते खोले और आज एमआरएनए वैक्सीन जैसी आधुनिक तकनीक इस इतिहास को एक नए अध्याय तक ले जाने का संकेत देती है।

वर्तमान उपचार और उनकी सीमाएं

आज कैंसर का इलाज मुख्य रूप से सर्जरी, कीमोथेरेपी, रेडिएशन, इम्यूनोथेरेपी, टार्गेटेड थेरेपी और हार्मोन थेरेपी पर आधारित है। सर्जरी में ट्यूमर को हटाया जाता है, जबकि कीमोथेरेपी दवाओं के जरिए कैंसर कोशिकाओं को मारती है। रेडिएशन उच्च ऊर्जा किरणों का उपयोग करता है। इम्यूनोथेरेपी शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय बनाती है। टार्गेटेड थेरेपी केवल कैंसर कोशिकाओं को निशाना बनाती है और हार्मोन थेरेपी हार्मोन-निर्भर कैंसर में काम आती है। इन सभी में सफलता की संभावना है, लेकिन इनसे जुड़े महंगे इलाज, दुष्प्रभाव और उपचार प्रतिरोध जैसी चुनौतियां भी हैं। यही वजह है कि वैज्ञानिक नई, अधिक सुरक्षित और असरदार विधियों की खोज में लगे हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य

वैश्विक स्तर पर अब तक 100 से अधिक कैंसर वैक्सीन क्लिनिकल ट्रायल्स चल रहे हैं, जिनका फोकस मुख्यतः फेफड़े, स्तन, प्रोस्टेट, मेलेनोमा, अग्नाशय और मस्तिष्क के कैंसर पर है। रूस की एंटरोमिक्स वैक्सीन इन प्रयासों में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो सकती है, बशर्ते कि यह अगले चरणों के ट्रायल्स और अनुमोदन में भी सफल रहे।

कैंसर के प्रकार

कैंसर कई रूपों में सामने आता है। कार्सिनोमा सबसे आम है, जो त्वचा या अंगों को ढकने वाले ऊतक में शुरू होता है, जैसे स्तन, फेफड़े, प्रोस्टेट और कोलन कैंसर। सार्कोमा हड्डी और मांसपेशी जैसे संयोजी ऊतकों में विकसित होता है और अपेक्षाकृत दुर्लभ, लेकिन अत्यधिक आक्रामक होता है। ल्यूकेमिया रक्त कोशिकाओं का कैंसर है, जबकि लिंफोमा और मायलोमा प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करते हैं। मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी का कैंसर सबसे जटिल माने जाते हैं। भारत में फेफड़े, स्तन, मुख और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर सबसे आम हैं।

एंटरोमिक्सः रूस से नई उम्मीद

सितंबर 2025 में रूस के वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि उन्होंने एमआरएनए आधारित कैंसर वैक्सीन एंटरोमिक्स विकसित की है, जिसके प्रारंभिक ट्रायल में उल्लेखनीय सफलता दर्ज की गई। यह वैक्सीन रूसी स्वास्थ्य मंत्रालय की अंतिम अनुमोदन प्रक्रिया का इंतजार कर रही है। मीडिया खबरों के अनुसार एंटरोमिक्स चार गैर-हानिकारक वायरसों का उपयोग करती है, जो ट्यूमर को सीधे नष्ट करते हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करते हैं। रूस के नेशनल मेडिकल रिसर्च रेडियोलॉजिकल सेंटर और एंगेलहार्ट इंस्टीट्यूट ऑफ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के सहयोग से किए गए प्रारंभिक परीक्षणों में वैक्सीन सुरक्षित पाई गई और कई मामलों में ट्यूमर का आकार 60–80 प्रतिशत तक कम हुआ। फेडरल मेडिकल एंड बायोलॉजिकल एजेंसी की प्रमुख वेरोनिका स्कवोर्त्सोवा ने कहा कि यह परिणाम शुरुआती हैं और व्यापक प्रभावकारिता के लिए बड़े पैमाने पर फेज टू और थ्री ट्रायल्स की आवश्यकता है।

एमआरएनए तकनीक और कार्यप्रणाली

खबरों के अनुसार एंटरोमिक्स पारंपरिक कैंसर उपचार से पूरी तरह अलग है। यह एमआरएनए तकनीक पर आधारित है, वही तकनीक जो कोविड-19 वैक्सीन में इस्तेमाल हुई थी। इसमें कमजोर या निष्क्रिय वायरस नहीं होता, बल्कि यह शरीर की कोशिकाओं को निर्देश देता है कि वे कैंसर विशिष्ट प्रोटीन (एंटिजेन) उत्पन्न करें। प्रतिरक्षा प्रणाली इन एंटिजेन को पहचानकर केवल कैंसर कोशिकाओं पर हमला करती है, जिससे स्वस्थ कोशिकाएं सुरक्षित रहती हैं।

वर्तमान में एंटरोमिक्स का प्रमुख फोकस कोलोरेक्टल कैंसर (बड़ी आंत का कैंसर) है, लेकिन शोधकर्ता ग्लियोब्लास्टोमा, मेलेनोमा और ऑकुलर मेलेनोमा जैसे आक्रामक कैंसरों पर भी इसका परीक्षण करने की योजना बना रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, यह वैक्सीन प्रत्येक रोगी की ट्यूमर प्रोफाइल के अनुरूप भी तैयार की जा सकती है।

आर्थिक प्रभाव

भारत जैसे विकासशील देशों में कैंसर केवल चिकित्सकीय समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक बोझ भी बन जाता है। एक कैंसर मरीज का इलाज अक्सर परिवार की पूरी बचत समाप्त कर देता है। कई परिवारों को संपत्ति बेचनी पड़ती है या कर्ज लेना पड़ता है। अक्सर यही आर्थिक संकट इलाज को अधूरा छोड़ने का कारण बनता है और मृत्यु दर को और बढ़ा देता है।

सामाजिक प्रभाव और भारत में संभावनाएं

यह वैक्सीन सामाजिक असमानताओं को कम करने में भी मदद कर सकती है। कैंसर गरीबों के लिए घातक है, क्योंकि इलाज महंगा है। भारत में, जहां कोलोरेक्टल और सर्वाइकल कैंसर आम हैं, यह वैक्सीन जीवन बचाने में सहायक हो सकती है। हालांकि पेटेंट और उत्पादन जैसी चुनौतियां भी हैं। कोविड-19 के दौरान एमआरएनए पेटेंट विवादों ने यह स्पष्ट किया कि इस क्षेत्र में बौद्धिक संपदा जटिल और विवादास्पद हो सकती है। फिर भी भारत-रूस की विशेष मैत्री इस संदर्भ में लाभप्रद हो सकती है। कोविड-19 के दौरान स्पूतनिक वी वैक्सीन का भारत में सफल उपयोग इसका प्रमाण है। एंटरोमिक्स वैक्सीन कैंसर के इलाज में नई क्रांति का संकेत है, परंतु यह सावधानी और बड़े पैमाने पर मूल्यांकन के बाद ही व्यापक उपयोग के लिए तैयार होगी। भारत में दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीन निर्माण उद्योग, मजबूत जेनेरिक दवा क्षेत्र और उन्नत बायोटेक अनुसंधान क्षमताएं मौजूद हैं। सीरम इंस्टीट्यूट, बायोकॉन, डॉ. रेड्डीज और भारत बायोटेक जैसी कंपनियों के पास उन्नत वैक्सीन का स्थानीय उत्पादन करने की क्षमता है। भारत की वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षमता इस वैक्सीन को लोगों तक पहुंचाने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। यदि यह सफल रही, तो शायद कैंसर का नाम आने वाली पीढ़ियों के लिए भय का नाम नहीं रहेगा।

भारतीय परिप्रेक्ष्य

2023 में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अनुसार, भारत में 14 लाख से अधिक लोग कैंसर से प्रभावित हुए। सरकार ने कैंसर की रोकथाम, समय पर पहचान और इलाज के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। 2025-26 के संघीय बजट में स्वास्थ्य मंत्रालय को कुल 99,858.56 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जिसमें से 3,900.69 करोड़ रुपये स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए हैं। इस बजट के तहत 200 डे केयर कैंसर सेंटर अगले तीन वर्षों में सभी जिला अस्पतालों में स्थापित किए जाएंगे। इसके अलावा 36 जीवन रक्षक दवाओं पर आयात शुल्क पूरी तरह हटाया गया है और छह दवाओं पर केवल 5 प्रतिशत शुल्क रहेगा।

कैंसर नियंत्रण के लिए एनपीसीडीसीएस कार्यक्रम के तहत ओरल, स्तन और सर्वाइकल कैंसर की स्क्रीनिंग और जागरूकता पर जोर दिया गया है। अब तक 770 जिला एनसीडी क्लिनिक, 372 जिला डे केयर सेंटर और 6,410 कम्युनिटी हेल्थ सेंटर एनसीडी क्लिनिक स्थापित किए जा चुके हैं। इसके अलावा 19 राज्य कैंसर संस्थान और 20 टर्शियरी कैंसर सेंटर पूरे देश में स्थापित किए गए हैं।

आयुष्मान भारत योजना ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के कैंसर इलाज में मदद की है। 2024 तक 90 प्रतिशत पंजीकृत मरीजों का इलाज इस योजना के तहत शुरू हो चुका है। वहीं, हेल्थ मिनिस्टर कैंसर पेशेंट फंड और नेशनल कैंसर ग्रिड गरीब और ग्रामीण मरीजों को समय पर और किफायती इलाज सुनिश्चित करते हैं। भारत ने अनुसंधान के क्षेत्र में भी बड़ी प्रगति की है। भारत में कैंसर के बारे में जानकारी इकट्ठा करने और नीतियां बनाने में नेशनल कैंसर रजिस्ट्री प्रोग्राम ने 1982 से अहम भूमिका निभाई है। वहीं, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ कैंसर प्रिवेंशन एंड रिसर्च कैंसर स्क्रीनिंग और अनुसंधान के लिए मार्गदर्शन देता है। अप्रैल 2024 में नेक्सकार 19, देश की पहली देशी कार-टी सेल थैरेपी, विकसित की गई। यह ब्लड कैंसर के इलाज में एक नई उम्मीद लेकर आई है। सितंबर 2024 में क्वाड कैंसर मूनशॉट पहल के तहत भारत ने अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ मिलकर सर्वाइकल कैंसर को खत्म करने की योजना शुरू की। जनवरी 2025 में एक्ट्रेक का विस्तार भी शुरू हुआ, ताकि उन्नत कैंसर इलाज और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सके।

नए उत्पाद गैजेट

सैमसंग गैलेक्सी एस 25 एफई और टैब एस 11 सीरीज लॉन्च

- सैमसंग ने अपने लेटेस्ट गैलेक्सी इवेंट में दो बड़े प्रोडक्ट लॉन्च कर दिए हैं। पहला- सैमसंग गैलेक्सी एस 25 एफई स्मार्टफोन और दूसरा- नई सैमसंग गैलेक्सी टैब एस 11 सीरीज। कंपनी का फोकस प्रीमियम स्मार्टफोन खरीदारों और उन टैबलेट यूजर्स पर है, जो बेहतर प्रोडक्टिविटी और एआई फीचर्स चाहते हैं।

कीमत और उपलब्धता

- सैमसंग गैलेक्सी एस 25 एफई की शुरुआती कीमत करीब 57,300 है, जिसमें 8 जीबी + 128 जीबी वेरिएंट मिलेगा। 8 जीबी+ 256 जीबी वेरिएंट की कीमत करीब 62,570 रखी गई है। यह स्मार्टफोन आइसी ब्लू, जेट ब्लैक, नेवी और व्हाइट कलर ऑप्शन में उपलब्ध है। फोन की सेल अमेरिका में शुरू हो चुकी है और भारत में कीमत व उपलब्धता जल्द घोषित होने की उम्मीद है।

सैमसंग गैलेक्सी टैब एस 11

- **फीचर्स और स्पेसिफिकेशन**-दोनों टैबलेट्स एंड्रॉइड 16 आधारित वन यूआई 8 पर चलते हैं और इन्हें भी 7 साल तक के अपडेट्स मिलेंगे। गैलेक्सी टैब एस 11 में 11-इंच एमोलेड डिस्प्ले है, जबकि टैब एस 11 अल्ट्रा में 14 .6-इंच एमोलेड डिस्प्ले दिया गया है। दोनों में 120 एसजेड रिफ्रेश रेट और 1,600 निट्स पीक ब्राइटनेस है।
- इन टैबलेट्स में मीडियाटेक डाइमेंशन 9400 चिपसेट, 12 जीबी रैम और 512 जीबी तक स्टोरेज मिलता है। एआई फीचर्स जैसे नोट सहायता स्केच से छवि ड्राइंग एसिटेड शामिल हैं।
- कैमरा सेटअप में 13 एमपी+ 8 एमपी ड्यूल रियर कैमरा है, जबकि टैब एस 11 में 13 एमपी सिंगल कैमरा दिया गया है। दोनों में 12 एमपीफ्रंट कैमरा मौजूद है।
- डिजाइन के मामले में टैब एस 11 की मोटाई 5 .5 एमएम और वजन 469 ग्राम है, जबकि टैब एस 11 आल्ट्रा सिर्फ 5 .1 एमएम मोटा है और इसका वजन 692 ग्राम है। बैटरी क्षमता क्रमशः 8,400 एमएएच (टैब एस 11) और 11,600 एमएएच (अल्ट्रा) है। दोनों में 45 वॉट फास्ट चार्जिंग का सपोर्ट है।

अजूबे जैसी अमूल्य धरोहर सलखन जीवाश्म पार्क

धरती की उम्र का अनुमान 450 करोड़ साल के आसपास लगाया गया है, लेकिन इन 450 करोड़ सालों में जीवन की शुरुआत कब हुई, जीवाश्म इसी तरफ इशारा करते हैं। वैज्ञानिक मान्यता जीवन की शुरुआत धरती पर लगभग 400 करोड़ साल पहले होने की है, लेकिन कहां हुई, इसे लेकर अलग-अलग धारणाएं हैं। इनमें सर्वाधिक प्रबल धारणा कहती है कि जीवन की शुरुआत समुद्र की सतह पर हुई थी। पहले जीव जो धरती पर आए, उन्हें प्रोकैरेयोट कहा जाता है। इन जीवों में न्यूक्लियस यानी केंद्रक नहीं होता है और हमारी कोशिकाओं के मुकाबले बहुत सरल होते हैं। बैक्टीरिया की किस्म प्रोकैरेयोट ही होती है। इन्हीं बैक्टीरिया को मारने के लिए हमें एंटीबायोटिक दवाएं खानी पड़ती हैं। धरती पर जब जीवन का अविष्कार हुआ, तो दो तरह के प्रोकैरेयोट सामने आए। इनमें एक का नाम बैक्टीरिया और दूसरे का आर्किया है। धरती पर इनका वर्चस्व लगभग 200 करोड़ साल तक चला। इनमें साइनोबैक्टीरिया को लगभग 350 करोड़ वर्ष पुराना माना जाता है। इन जीवाश्म को पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की आर्कियन चट्टानों में पाया गया था। सोनभद्र जिले के सलखन गांव के पास भी साइनोबैक्टीरिया पाए जाते हैं। यह दुर्लभ जीवाश्म नीले-हरे शैवाल द्वारा निर्मित हैं। इनकी उम्र 150 करोड़ साल के आसपास है। *– मनोज त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार*

सलखन में है दुनिया का सबसे बड़ा जीवाश्म पार्क

फॉसिल्स या जीवाश्म पार्क उन्हें कहते हैं, जहां खोदाई में मिले हजारों-लाखों साल पुराने अवशेषों को सहेज कर रखा जाता है। उत्तर प्रदेश में सलखन एक ऐसा ही महत्वपूर्ण जीवाश्म पार्क है। 25 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला यह पार्क कैमूर वन्य जीव अभयारण्य के भीतर स्थित है। सोनभद्र जिले में यह जगह रॉबर्ट्सगंज से 17 किमी की दूरी पर है। कुदरत का नायाब तोहफा और दुनिया की अनमोल धरोहर सलखन फासिल्स पार्क पृथ्वी पर जीवन के शुरुआत की कहानी बयां करता है। यहां स्ट्रोमैटोलाइट्स को संरक्षित किया गया है, जो प्राचीन साइनोबैक्टीरिया (नीली-हरित शैवाल) द्वारा निर्मित दुर्लभ संरचनाएं हैं। सलखन जीवाश्म पार्क अमेरिका के येलो स्टोन नेशनल पार्क के फासिल्स से भी काफी पुराना है। सलखन में मिले 150 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म, इसे दुनिया का सबसे बड़ा फासिल्स पार्क बनाते हैं। यहां पाए गए करोड़ों वर्ष पुराने शैवाल और स्ट्रोमैटोलाइट्स के जीवाश्म धरती पर जीवन के सबसे पुराने साक्ष्य हैं।

आकृतियों को ग्रामीण बताते थे पत्थर के फूल

सलखन जीवाश्म पार्क में लाम स्टोन स्तंभ और दुर्गम दृश्य हैं, जिनकी ऊपरी सतह पर अंकित गोल छल्ले जैसी आकृतियों वाली लगभग एक मीटर ऊंची रचनाएं 150 करोड़ साल से ज्यादा पुराने जीवन के प्रमाण हैं। सिएनोबैक्टीरिया की बनाई इन संरचनाओं को स्थानीय लोग दशकों से पत्थर के फूल कहते हैं। दो दशक पहले 50 देशों के भू-वैज्ञानिकों ने सलखन में भ्रमण करने के बाद इसे पूरी दुनिया का सबसे पुराना बहुमूल्य फासिल्स पार्क बताया था।

दुनिया में कहीं और नहीं, इतने खूबसूरत व स्पष्ट जीवाश्म

सलखन में पाए गए जीवाश्म धरती के प्रारंभिक जैवमंडल और महासागरीय पारिस्थितिकी तंत्र के विकास से संबंधित महत्वपूर्ण खोज प्रदान करते हैं। भू-वैज्ञानिकों को यहां के जीवाश्म ने पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण सबूत प्रदान किए हैं। 1933 में इनकी खोज जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने की थी। कनाडा के प्रख्यात भू-वैज्ञानिक एचजे हाफमैन ने सलखन आने के बाद कहा था कि इससे खूबसूरत और स्पष्ट जीवाश्म दुनिया में कहीं और नहीं हैं। ऐसे में यह पार्क वैज्ञानिक अनुसंधान और पर्यटन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सोनभद्र में 150 करोड़ वर्ष पहले समुद्र की लहरें मारती थीं हिलोरें

धरती पर ऐसे तमाम रहस्य छिपे हैं, जिन्हें जानने की कोशिश में दुनियाभर के वैज्ञानिक लगातार शोध कर रहे हैं। मान्यता है कि लगभग 350 करोड़ वर्ष पूर्व पैदा हुए सायनोबैक्टीरिया संभवतः ऑक्सीजनिक प्रकाश संश्लेषण करने वाले प्रथम जीव थे, जिनके कारण लगभग 250 करोड़ वर्ष पूर्व ऑक्सीकरण की घटना घटित हुई। इसी ने पृथ्वी के वायुमंडल को ऑक्सीजन से समृद्ध किया। इसके बाद ही धरती पर जीवन संभव हो सका। प्रकाश संश्लेषण करने वाले ये सूक्ष्मजीव करीब 160 करोड़ वर्ष पुराने मेसोप्रोटेरोजोइक युग के हैं, इसी कारण इनके जीवाश्म 140 से 150 करोड़ वर्ष पुराने माने जाते हैं। सलखन में मिले जीवन के सृजन की शुरुआत के साक्षी जीवाश्मों ने इस तथ्य पर मुहर लगाई है कि 150 करोड़ वर्ष पूर्व यहां समुद्र की लहरें हिलोरें मारा करती थीं।

काम की बात

सितंबर का महीना चल रहा है और कुछ समय बाद सर्दियां दस्तक दे देंगी। सर्दियों में एसी का इस्तेमाल न के बराबर होता है। ठंड में इसकी जरूरत कुछ खास पड़ती नहीं, इसलिए लोग इसे सर्दियों के महीनों में बंद ही रखते हैं। ऐसे में यह लंबे समय तक बंद रहने की वजह से इनमें कुछ खराबियां आ सकती हैं, लेकिन एसी को लंबे समय तक बंद रखने से पहले हमें कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है ताकि वह सालों तक सही से चलता रहे और बार-बार उसकी मेंटेनेंस पर पैसे न खर्च करना पड़े। आइए आपको बताते हैं क्या हैं वे जरूरी बातें।

एसी केयर टिप्स

एसी की साफ-सफाई कर लें

सर्दियों में जब एसी लंबे समय के लिए बंद रहता है, तो उसके फिल्टर पर धूल-मिट्टी जम जाती है। बाद में इसे साफ करना काफी सिर दर्द वाला काम हो सकता है। ये गंदगी एसी की कूलिंग पर भी असर डालती है। इसलिए बेहतर होगा कि फिल्टर को अच्छे से साफ करके ही एसी को कवर करें।

एसी में जमा पानी निकालना न भूलें

सर्दियों में जब एसी बंद करने का समय आए, तो पहले उसके अंदर जमा पानी निकाल देना सही रहता है। अगर पानी लंबे समय तक रह गया तो उसमें जंग लग सकती है और एसी के पार्ट्स खराब हो सकते हैं। ऊपर से गंदा पानी बैक्टीरिया को जन्म देती है, जिससे बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है।

एसी का प्लग निकाल दें

कई बार शॉर्ट सर्किट की वजह से घर के कई इलेक्ट्रॉनिक सामान डैमेज होने का डर रहता है। इसलिए एसी को कवर लगाने के बाद उसका प्लग निकालना जरूरी है। इससे एसी में बिजली नहीं जाएगी और यह पूरी तरह से सेफ रहेगा।

आउटडोर यूनिट भी ढक दें

सर्दियों में एसी की आउटडोर यूनिट को भी ढक देना काफी फायदेमंद होता है। इससे उस पर धूल-मिट्टी या कोई गंदगी नहीं जमती।

ठंड में महीने में एक-दो बार एसी को ऑन करें

एक्सपर्ट का कहना है कि सर्दियों के महीने में एक-दो बार एसी को थोड़ी देर के लिए ऑन कर देना चाहिए। इससे एसी की मशीन सही तरीके से चलती रहती है और गर्मी में अचानक खराब नहीं होती, लेकिन अगर आपने एसी की सर्विसिंग करवा कर उसे अच्छे से ढक दिया है, तो ये करना जरूरी नहीं।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	81,548.73	25,005.50
बढ़त	123.58	32.40
प्रतिशत में	0.15	0.13

सोना- 1,13,100 प्रति 10 ग्राम

चांदी- 1,24,800 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, शुक्रवार, 12 सितंबर 2025

www.amritvichar.com

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2600, राज श्री 1830, फॉर्चून कि. 2220, रविन्द्रा 2550, फॉर्चुन 13 किग्रा 1950, जय जवान 1960, सचिन 2040, सूरज 1960, अवसर 1885, उजाला 1920, गृहणी 13 किग्रा 1880, क्लासिक (किग्रा) 2095, मोर 2150, चक्र टिन 2345, ब्लू 2110, आशीर्वाद मस्टर्ड 2475, स्वास्तिक 2540

किराना (प्रतिकु.) : हल्दी निजामाबाद 14500, जीरा 24000, लाल मिर्च 14000-17000, धनिया 9000-11000, अजवायान 13500-20000, मेथी 7000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 27000, (प्रतिकि0) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 880, किसमिस पीली 400-600, मखाना 900-1100

चावल (प्रति कु.) : डबल चाबी सेला 9600, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 4950, शर्बती स्टीम 5100, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 7300, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1-5 किग्रा) 10100, हरी पति नेचुरल 9100, जेनिथ 8100, गलैक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4350, खजाना 4300

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12800-13500, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450 मलका दाल 7550-8900, मलका छोटी 7550, दाल उड़द बिलासपुर 8000-9000, मसूर दाल छोटी 9500-11200, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 10300, उड़द धोवा इंदौर 13000, उड़द धोवा 10000-11000, चना काला 7050, दाल चना 7600, दाल चना मोटी 7850, मलका विदेशी 7300, रूपकिशोर बेसन 8200, चना अकोला 7200, डबरा 7200-9200, सच्चा हीरा 9000, मोटा हीरा 11000, अरहर गोला मोटा 7800, अरहर पटका मोटा 8100, अरहर कोरा मोटा 8800, अरहर पटका छोटा 9800-10300, अरहर कोरी छोटी 10300

चीनी : डालमियां 4420, पीलीभीत 4340, सितारगंज 4300, धामपुर 4420

आत्मनिर्भरता को उद्योग व सरकार का साथ काम करना जरूरी

सियाम के सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- देश विकसित भारत के दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहा है

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि देश 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहा है और इसके लिए सरकार और वाहन उद्योग को संपूर्ण विनिर्माण मूल्य श्रृंखला में 'सच्ची आत्मनिर्भरता' हासिल करने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है।

सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) के वार्षिक सम्मेलन में लिखित संबोधन में मोदी ने कहा कि जैसे-जैसे भारत हरित और स्मार्ट परिवहन में वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है, निवेश और सहयोग के अपार अवसर पैदा हो रहे हैं। सियाम के अध्यक्ष शैलेश चंद्रा ने प्रधानमंत्री के संदेश को पढ़ा। अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख चालक वाहन उद्योग ने परिवहन और जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है और यह 'मेक इन इंडिया' पहल का अग्रदूत रहा है।

मोदी ने कहा कि जैसे-जैसे

● सियाम के अध्यक्ष शैलेश चंद्रा ने प्रधानमंत्री के संदेश को पढ़ा

देश हरित और स्मार्ट परिवहन में वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है, निवेश और सहयोग के अवसर बढ़ रहे हैं। जैसे-जैसे हम 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहे हैं, सरकार और उद्योग के लिए यह ज़रूरी है कि वे संपूर्ण वाहन निर्माण मूल्य श्रृंखला में सच्ची आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए मिलकर काम करें। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख चालक, वाहन उद्योग ने जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह मेक इन इंडिया पहल का अग्रदूत रहा है, जिसने भारतीय विनिर्माण में वैश्विक भरोसे को बढ़ाया है और भारत को वाहन क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित किया है। भारत भविष्य के लिए तैयार परिवहन पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ यह एकीकरण परिवहन के क्षेत्र में भारत की महत्वाकांक्षी विकास गाथा का आधार है। इस पर प्रकाश डालते हुए कि कैसे वाहन क्षेत्र भी हरित प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रिक वाहन और टिकाऊ विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थिरता को अपना रहा है, उन्होंने कहा कि ये प्रगति भारत के स्वच्छ परिवहन लक्ष्यों को मजबूत करती है। साथ ही डिजाइन, उत्पादन और तैनाती में अवसर पैदा करती हैं। स्टार्टअप इकाइयों का आगे बढ़ना, ऊर्जा भंडारण उत्साहजनक है।

प्रमाणन जमा करने वाले खरीदारों को विशेष छूट दी जाए : गडकरी

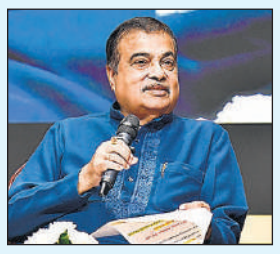

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने वाहन उद्योग जगत से कहा कि वे उन ग्राहकों को अतिरिक्त छूट देने पर विचार करें जो नई गाड़ी खरीदते समय अपने पुराने वाहन को कबाड़ में बदलने का प्रमाणपत्र जमा करते हैं। गडकरी ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से अनुरोध किया है कि जो लोग अपने पुराने वाहन को कबाड़ में बदलकर नई गाड़ी खरीदते हैं, उन्हें माल एवं सेवा कर (जीएसटी) में राहत दी जाए। उन्होंने ई20 ईंधन (20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रित पेट्रोल) के खिलाफ जारी सोशल मीडिया प्रचार को राजनीतिक रूप से उनके खिलाफ बताया और कहा कि यह प्रचार एक पैसे लेकर (पेड कैंपेन) शुरू किया गया अभियान था, जो खास तौर पर एथनॉल के खिलाफ था और मेरा राजनीतिक विरोध करने के लिए किया गया। उन्होंने सियाम के वार्षिक सम्मेलन में कहा कि यह सोशल मीडिया अभियान एक सशुल्क अभियान था। यह एथनॉल के खिलाफ था और इसका उद्देश्य मुझे राजनीतिक रूप से निशाना बनाना था। कांग्रेस ने हाल ही में गडकरी के खिलाफ हितों के टकराव के आरोप लगाए हैं। उसका दावा है कि गडकरी एथनॉल उत्पादन के लिए आक्रामक रूप से पैरवी कर रहे थे, जबकि जबकि उनके दो पुत्र एथनॉल उत्पादन करने वाली कंपनियों में शामिल हैं और सरकार की नीति से लाभ उठा रहे हैं। वाहन स्क्रैप नीति पर, गडकरी ने कहा कि यह उद्योग और सरकार दोनों के लिए फायदेमंद है, क्योंकि इससे निजी क्षेत्र को स्क्रैप धातुओं की उपलब्धता में भी मदद मिल सकती है, जिन्हें आयात किया जाता है। मंत्री ने उद्योग जगत से पुराने वाहन को कबाड़ में बदलने का प्रमाणपत्र जमा करने के बाद नया वाहन खरीदने वालों को अच्छी छूट देने पर विचार करने को कहा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में, औसतन 16,830 पुराने वाहन हर महीने कबाड़ में बदले जा रहे हैं और निजी क्षेत्र ने 2,700 करोड़ रुपये का निवेश किया है।

कटौती से वाहन क्षेत्र को मिलेगी नई रफ्तार : सियाम

वाहन विनिर्माताओं के प्रमुख संगठन सियाम ने कहा है कि माल एवं सेवा कर (जीएसटी) दरों में हालिया कटौती से भारतीय वाहन क्षेत्र में विकास को नई गति मिलेगी, वाहन अधिक किफायती बनेंगे और व्यक्तिगत परिवहन तक व्यापक पहुंच संभव होगी। संगठन के अध्यक्ष शैलेश चंद्रा ने सरकार के कुछ प्रक्रियात्मक मुद्दों में उचित संशोधन करने के कदम का स्वागत किया, जिससे कारोबार सुगमता को बढ़ावा देने में काफी मदद मिलेगी। चंद्रा ने कहा कि वाहनों पर जीएसटी दरों को कम करने के हालिया ऐतिहासिक फैसले के लिए हम भारत सरकार के बेहद आभारी है। इससे उपभोक्ताओं को फायदा होगा और वाहन क्षेत्र को नई गति मिलेगी।

विशेष उच्च ग्रेड के इस्पात के विकास पर विचार

इस्पात और भारी उद्योग मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने कहा कि भारत का इस्पात उद्योग आयात पर निर्भरता कम करने को कुछ वाहन कलपुर्जों में इस्तेमाल होने वाले विशेष उच्च-श्रेणी के इस्पात के विकास पर विचार कर रहा है। भारत लंबे समय से उच्च-श्रेणी के इस्पात के लिए आयात पर निर्भर रहा है, जो वाहन कलपुर्जों के अलावा रक्षा और रणनीतिक क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है। देशभर में बड़ी परियोजनाओं के कारण उच्च-श्रेणी के इस्पात की मांग बढ़ रही है। वाहनों के उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना के तहत कंपनियां पहले ही 29,576 करोड़ की पूंजी का निवेश कर चुकी हैं, जिसमें नई उत्पादन सुविधाएं और परिचालन प्रौद्योगिकी स्थापित करना शामिल है।

दोपहिया ग्राहकों के लिए कार खरीदने का अवसर

कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) को उम्मीद है कि वाहनों पर जीएसटी दरों में कटौती के बाद घरेलू यात्री वाहनों की बिक्री में वृद्धि 7% पर आ जाएगी। कंपनी के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (विपणन एवं बिक्री) पार्थो बनर्जी ने सम्मेलन के मौके पर कहा कि छोटी कार खंड, जिसमें कंपनी का दबदबा है, में वृद्धि की उम्मीद 10% है। उन्होंने कहा कि जीएसटी दर में कमी छोटी कारों को और किफायती बनाने में मदद करेंगे, जिससे दोपहिया वाहन चालकों को कार खरीदने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

बिजनेस ब्रीफ

चीन पर डंपिंग रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश

नई दिल्ली। वाणिज्य मंत्रालय की जांच इकाई डीजीटीआर ने चीन, बहरीन, थाइलैंड से इलेक्ट्रिकल्स सहित विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले ग्लास फाइबर के आयात पर पांच साल के लिए डंपिंग रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की है। व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) ने अंतिम जांच रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला है कि संबंधित उत्पाद को भारत में सामान्य मूल्य से कम कीमत पर निर्यात किया गया, जिससे डंपिंग हुई। अनुशंसित शुल्क 194 अमेरिकी डॉलर प्रति टन से लेकर 394 अमेरिकी डॉलर प्रति टन के बीच है। डीजीटीआर ने एक अधिसूचना में कहा कि प्राधिकरण चीन, बहरीन और थाइलैंड से उत्पाद के आयात पर पांच साल की अवधि के लिए डंपिंग-रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करता है।

बिजली चोरी रोकने को टाटा की लोक अदालत

नई दिल्ली। विद्युत वितरण कंपनी टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रिब्यूशन लि. (टाटा पावर डीडीएल) बिजली चोरी और 'कनेक्शन' काटे जाने के मामलों के निटान को 13 सितंबर को राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित करेगी। उत्तरी दिल्ली की 90 लाख आबादी को बिजली आपूर्ति करने वाली टाटा पावर डीडीएल ने गुरुवार को कहा, टाटा पावर डीडीएल, दिल्ली राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण (डीएसएलएसए) के सहयोग से शनिवार 13 सितंबर, 2025 को राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित करेगी। इसके जरिए बिजली चोरी और 'कनेक्शन' काटे जाने के मामलों का तत्काल निपटान किया जाएगा।

10 मिनट में सामान पहुंचाएगा अमेजन

नई दिल्ली। ऑनलाइन खरीद-बिक्री के मंच अमेजन ने गुरुवार को कहा कि उसने बेंगलुरु और दिल्ली में सफल शुरुआत के बाद अपनी 10 मिनट की डिलिवरी सेवा, अमेजन नाउ का विस्तार मुंबई के चुनिंदा हिस्सों में किया है। कंपनी ने कहा कि अमेजन ने तेज डिलिवरी के लिए इन तीनों शहरों में तेजी से सामान की आपूर्ति के लिए 100 से ज्यादा आपूर्ति केंद्र (माइक्रो-फुलफिलमेंट सेंटर) खोले हैं और साल के अंत तक सैकड़ों और खोलने की योजना है। अमेजन इंडिया के उपाध्यक्ष और क्षेत्रीय प्रबंधक समीर कुमार ने कहा, कि हमने इस साल की शुरुआत में बेंगलुरु में अमेजन नाउ पेश किया था।

टाटा कैपिटल का आईपीओ अक्टूबर में

नई दिल्ली। टाटा कैपिटल अक्टूबर के पहले पखवाड़े में अपना बहुप्रतीक्षित दो अरब डॉलर (17,000 करोड़ रुपये से अधिक) का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) ला सकती है। कंपनी को रिजर्व बैंक से शेयर बाजारों में सूचीबद्धता के लिए समयसीमा बढ़ाए जाने की मंजूरी मिली है। इस गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी को शेयर बाजारों में सूचीबद्धता के लिए 30 सितंबर तक का समय दिया गया था।

व्यापार समझौते पर अमेरिका से वार्ता सकारात्मक माहौल में जारी : गोयल

पटना, एजेंसी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को कहा कि भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को लेकर बातचीत सकारात्मक माहौल में आगे बढ़ रही है और दोनों देश अब तक हुई प्रगति से संतुष्ट हैं।

गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस वर्ष फरवरी में दोनों देशों के व्यापार मंत्रियों को इस समझौते के पहले चरण को नवंबर 2025 तक पूरा करने के निर्देश दिए थे। उन्होंने कहा कि व्यापार समझौते को लेकर चर्चा मार्च से ही गंभीरता के साथ चल रही है। यह प्रगति कर रही है और दोनों देश इससे संतुष्ट

● केंद्रीय मंत्री बोले- बीटीए दोनों देश अब तक की प्रगति से संतुष्ट

हैं। गोयल ने बुधवार को कहा था कि भारत अमेरिका के साथ व्यापार समझौते के लिए 'सक्रिय वार्ता' कर रहा है। इससे पहले ट्रंप ने सोशल मीडिया पोस्ट पर कहा था कि दोनों देशों के बीच बातचीत सफल नतीजे तक पहुंचने में 'कोई मुश्किल' नहीं होगी और वह जल्द ही मोदी से बातचीत करने को उत्सुक हैं। मोदी ने भी ट्रंप की टिप्पणी पर कहा था कि चल रही वार्ता दोनों देशों की साझेदारी की असीम संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेगी। दोनों देशों के बीच मार्च से अब तक पांच दौर की बातचीत हो चुकी है, जबकि छठा दौर अमेरिकी टीम की यात्रा स्थगित होने के कारण टल गया।

ट्रंप प्रशासन की तरफ से भारत पर 50 प्रतिशत सीमा शुल्क लगा देने से हालात थोड़े असहज हो गए हैं। भारत ने इन शुल्कों को अनुचित और अन्यायपूर्ण बताया है। व्यापार समझौते का उद्देश्य वर्ष 2030 तक दोनों देशों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं के व्यापार को मौजूदा 191 अरब डॉलर से बढ़ाकर 500 अरब डॉलर तक पहुंचाना है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

जल्द 50 लाख रूफटॉप सोलर के आंकड़े पर पहुंचेंगे : जोशी

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

नई दिल्ली, एजेंसी

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत देश भर में 20 लाख से ज्यादा घरों में रूफटॉप सोलर प्रणाली (छत पर सौर बिजली परियोजना) लगाई जा चुकी हैं और इसमें 30 लाख की संख्या और जुड़ जाएगी। मंत्री ने योजना के तहत एक करोड़ लाभार्थियों के लिए रूफटॉप सोलर उपकरण लगाने के लक्ष्य का आधा हिस्सा हासिल करने के लिए कोई समयसीमा नहीं बताई।

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली व प्रधानमंत्री-कुसुम योजनाओं की राज्यों की समीक्षा बैठक में जोशी ने कहा, अब 20 लाख घरों में रूफटॉप

● केंद्रीय मंत्री ने योजनाओं को लेकर राज्यों की समीक्षा बैठक की

लगाए गए हैं और जल्द हम 30 लाख और जोड़ेंगे। हमारा लक्ष्य एक करोड़ घरों का है। उन्होंने उन लोगों के लिए एक उपयोगिता-आधारित मॉडल को मंजूरी दे दी है जिनके सिर पर छत नहीं है। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों के रूफटॉप सोलर लगाने की योजना बनाई है। आंध्र प्रदेश ऐसा राज्य है। मुख्यमंत्री ने मुझसे मुलाकात की थी और मुझे प्रस्तुतीकरण दिया था।

एथनॉल उत्पादन बढ़ाएं, निर्यात पर ध्यान दें उत्पादक

केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने जैव ईंधन उत्पादकों से एथनॉल का उत्पादन बढ़ाने को कहा ताकि वैश्विक बाजारों में इसका निर्यात हो सके। जोशी ने भारत शुगर एंड बायो-एनर्जी कॉन्फ्रेंस 2025 में एथनॉल मिश्रण, ऊर्जा सुरक्षा और ग्रामीण समृद्धि के क्षेत्र में भारत की प्रगति को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों का संगठन सतत विकास को आगे बढ़ाने और भारत की पर्यावरण अनुकूल जैव-अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की भी जिम्मेदारी संभाल रहे जोशी ने कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास के साथ, हम 2047 तक आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2014 में भारत में ईंधन में एथनॉल मिश्रण 1.5 प्रतिशत था और आज यह 20 प्रतिशत है। एथनॉल मिश्रित ईंधन की ओर बदलाव से ऊर्जा सुरक्षा, महत्वपूर्ण आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ प्राप्त हुए हैं।

राज्यों से योजनाओं का लाभ उठाने को कहा

उन्होंने राज्यों से दोनों योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए सक्रिय रहने को कहा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के तहत, हम देख चुके हैं कि आधे लाभार्थियों को शून्य बिजली बिल मिल रहे हैं। यह दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करते हुए नागरिकों को राहत प्रदान करने के मॉडल को दर्शाता है। मैं सभी राज्यों से ऐसे तरीकों को अपनाने और सक्रिय रूप से बढ़ाने का आग्रह करता हूं। कई योजनाओं, ग्रिड कनेक्टिविटी व लाइसेंस में अनुपालन संबंधी समस्याएं हैं और राज्यों को सक्रिय रहने की जरूरत है।

आईपीओ और एमपीएस की समयसीमा बढ़ाने पर सेबी करेगा विचार

मुंबई, एजेंसी

बाजार नियामक सेबी का निदेशक मंडल शुक्रवार को अपनी बैठक में कई अहम सुधार प्रस्तावों पर विचार कर सकता है, जिनमें बड़ी कंपनियों के लिए आईपीओ की शर्तों में ढील और न्यूनतम सार्वजनिक हिस्सेदारी (एमपीएस) हासिल करने की समयसीमा बढ़ाने जैसे प्रस्ताव शामिल हैं।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय के कार्यकाल की यह तीसरी बोर्ड बैठक होगी। पांडेय ने इस साल एक मार्च को सेबी प्रमुख का पदभार संभाला था। सूत्रों ने कहा कि सेबी का निदेशक मंडल बड़ी कंपनियों को भारतीय बाजार में सूचीबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित करने वाले प्रस्ताव पर अपनी मुहर भी लगा सकता है। प्रस्ताव है कि 50,000 करोड़ से लेकर एक लाख करोड़ रुपये के पूंजीकरण वाली कंपनियों के लिए न्यूनतम सार्वजनिक निर्गम (एमपीओ) 1,000 करोड़ और न्यूनतम 8% निर्गम-पश्चात पूंजी का प्रावधान रखा जाए। इन्हें न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता (एमपीएस) की 25% सीमा को मौजूदा तीन साल के बजाय पांच साल में हासिल करने की छूट दी जा सकती है।

वहीं, एक लाख करोड़ से पांच लाख करोड़ रुपये तक के पूंजीकरण वाली कंपनियों के लिए एमपीओ का आकार 6,250 करोड़ और न्यूनतम 2.75% निर्गम-पश्चात पूंजी होगी। इनके लिए एमपीएस की समयसीमा 10 साल तक बढ़ाई जा सकती है। पांच लाख करोड़ से ऊपर की कंपनियों के लिए एमपीओ 15,000 करोड़ और 1% निर्गम-पश्चात पूंजी रहेगी। ऐसा होने पर कंपनियां अपेक्षाकृत छोटे आईपीओ से शुरुआत कर सकेंगी और लंबी अवधि में क्रमिक रूप से सार्वजनिक हिस्सेदारी बढ़ा पाएंगी। इससे कंपनियों पर तत्काल बड़े पैमाने पर प्रवर्तक हिस्सेदारी घटाने का दबाव कम होगा।

● सेबी का निदेशक मंडल होने वाली बैठक में कई सुधार प्रस्तावों पर करेगा चर्चा

विदेशी निवेशकों के लिए स्वागत-एफआई का प्रस्ताव

बैठक में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के अनुपालन को सरल बनाने, कुछ एआईएफ (वैकल्पिक निवेश कोष) में मान्यता प्राप्त निवेशकों के लिए नियम शिथिल करने, रेटिंग एजेंसियों की गतिविधियों का दायरा बढ़ाने और निवेश ट्रस्ट- रीट्स एवं इनविट्स को इक्विटी का दर्जा देने जैसे प्रस्तावों पर भी चर्चा हो सकती है। बैठक में कम जोखिम वाले विदेशी निवेशकों के लिए एकल खिड़की पहुंच व्यवस्था 'स्वागत-एफआई' का प्रस्ताव भी आ सकता है। यह ढांचा लागू होने पर सरकारी कोष, केंद्रीय बैंक, सरकारी संपत्ति कोष, बहुपक्षीय संस्थाएं, बीमा कंपनियां और पेंशन कोष जैसे निवेशकों को निवेश की आसान सुविधा मिलेगी और बार-बार दस्तावेज जमा करने की जरूरत कम होगी।

आईटीआर फाइलिंग : लापरवाही से बचें

इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइलिंग का समय नजदीक आ चुका है और इस दौरान छोटी सी गलती भी बड़ी परेशानी का कारण बन सकती है। एनुअल इंफॉर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) में दिया गया डेटा टैक्सपेयर्स के लिए बेहद अहम है। कई बार लोग ब्याज या डिविडेंड जैसी छोटी इनकम को नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन 5,000 रुपये का भी फर्क आने पर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट नोटिस भेज सकता है। इसलिए आईटीआर फाइल करने से पहले फॉर्म 16, फॉर्म 26 एएस और एआईएस का बारीकी से मिलान करना बेहद जरूरी है। लापरवाही से नोटिस के साथ-साथ पेनल्टी का भी खतरा रहता है।

इन गलतियों से बचें

आयकर विभाग लगातार टैक्सपेयर्स की आय और उनके फाइनेंशियल ट्रांजेक्शंस पर नजर रखता है। इसके लिए एआईएस को आधार बनाया जाता है। एआईएस में बैंक, म्यूचुअल फंड, स्टॉक मार्केट और अन्य संस्थानों की ओर से दी जानकारी दर्ज रहती है। अगर आईटीआर में दी जानकारी और एआईएस में अंतर पाया जाता है, तो टैक्सपेयर को स्वत: नोटिस भेजा जाता है।

छोटी गलती से बड़ा नोटिस

कई बार लोग ब्याज से मिली छोटी रकम को डिक्लेयर करने की जरूरत नहीं समझते, जो खतरनाक साबित होता है। एक टैक्सपेयर को 5,000 रुपये की इंटरेस्ट इनकम छुपाने पर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का नोटिस मिला।

इसका दें ध्यान

- फॉर्म 16, 26एएस और एआईएस का मिलान करना जरूरी।
- बैंक इंटरेस्ट की जानकारी शिड्यूल ओएस (अदर सोर्स) में ग्रॉस अमाउंट के आधार पर दर्ज करें।
- डिविडेंड इनकम की जानकारी दें, किसी भी चार्जेज को घटाकर न दिखाएं।
- म्यूचुअल फंड या इक्विटी से हुए कैपिटल गैंस को अनिवार्य रूप से दर्ज करें।

वैश्विक बाजारों में तेजी से सेंसेक्स-निफ्टी मजबूत

मुंबई, एजेंसी

● सेंसक्स में लगातार चौथे दिन और निफ्टी में सातवें कारोबारी सत्र में रही तेजी

स्थानीय शेयर बाजार में गुरुवार को तेजी बनी रही और बीएसई सेंसेक्स 124 अंक के लाभ में रहा, जबकि एनएसई निफ्टी 25,000 अंक के पार पहुंच गया। अमेरिकी रिजर्व के नीतिगत दर में कटौती की उम्मीद के बीच वैश्विक बाजारों में तेजी के साथ घरेलू शेयर बाजार लाभ में रहे।

सेंसक्स में लगातार चौथे दिन तेजी रही और यह 123.58 अंक याकी बढ़त के साथ 81,548.73 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में लगातार सातवें कारोबारी सत्र में तेजी रही और यह 32.40 अंक बढ़कर तीन सप्ताह के उच्चतम स्तर 25,005.50 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में एनटीपीसी, एक्सिस बैंक, पावर ग्रिड, भारती एयरटेल, इटर्नल और सन फार्मा प्रमुख रूप से लाभ में रहीं। दूसरी तरफ नुकसान में रहने वाले शेयरों में इन्फोसिस, टाइटन, अल्ट्राटेक सीमेंट और हिंदुस्तान यूनिलीवर शामिल हैं।

मझोली कंपनियों से जुडे बीएसई मिडकैप सूचकांक में 0.14 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि स्मॉलकैप स्थिर रहा। एशिया के अन्य बाजारों में, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की और चीन का शंघाई कम्पोजिट सकारात्मक दायरे में रहे, जबकि हांगकांग का हैंग सेंग नुकसान में रहा। यूरोप में दोपहर के कारोबार में तेजी का रुख था। अमेरिकी बाजार मिले-जुले रुख के साथ बंद हुए थे।

योजना | सरकार जल्द शुरू करेगी कार्बन कैप्चर, उपयोग और भंडारण मिशन, 50-100 प्रतिशत तक का दिया जाएगा प्रोत्साहन

कार्बन डाइऑक्साइड को पहले ही कैप्चर कर लेती है सीसीयूएस

नई दिल्ली, एजेंसी

सरकार जल्द ही कार्बन कैप्चर उपयोग और भंडारण मिशन शुरू करेगी। इसमें 50-100 प्रतिशत तक का प्रोत्साहन दिया जाएगा। कार्बन कैप्चर, उपयोग और भंडारण (सीसीयूएस) एक ऐसी प्रक्रिया है जो औद्योगिक स्रोतों और बिजली संयंत्रों से कार्बन डाइऑक्साइड को वायुमंडल में प्रवेश करने से पहले ही 'कैप्चर' कर लेती है।

'कैप्चर' की गई कार्बन डाइऑक्साइड को फिर रसायनों या ईंधन जैसे विभिन्न उत्पादों में उपयोग के लिए प्रयोग किया जाता है या समाप्त हो चुके तेल और गैस भंडारों जैसे भूमिगत भूवैज्ञानिक संरचनाओं में संग्रह किया जाता है।

नीति आयोग के सलाहकार

बिजली क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने में सीसीयूएस की महत्वपूर्ण भूमिका

नीति आयोग के सलाहकार ने बताया कि लेकिन इससे जुड़ी चुनौतियां भी हैं, अगर आप वास्तव में नवीकरणीय ऊर्जा को प्रणाली में एकीकृत करना चाहते हैं, तो इसमें अन्य लागत भी शामिल हैं। आपको इसके साथ-साथ भंडारण भी करना होगा, जो महंगा हो सकता है। इससे पहले, नीति आयोग ने कहा था कि देश की 70 प्रतिशत से अधिक बिजली की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोयले पर निर्भरता को देखते हुए, बिजली क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने में सीसीयूएस की महत्वपूर्ण भूमिका है। भले ही भारत ग्रिड को पर्याप्त रूप से हरित बनाने और 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा की 500 गीगावाट स्थापित क्षमता के लक्ष्य को पूरा करने में सक्षम हो, फिर भी सौर और पवन ऊर्जा का भरोसेमंद नहीं होना (मौसम के हिसाब से उत्पादन को लेकर) और गैर-प्रेषण प्रकृति को देखते हुए, जीवाश्म ईंधन (मुख्य रूप से कोयला) या अन्य प्रेषण योग्य स्रोतों से बिजली की मूल मांग को पूरा करने की आवश्यकता होगी। भारत का प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन 1.9 टन प्रति वर्ष है, जो वैश्विक औसत के 40 प्रतिशत से कम और चीन का एक-चौथाई है। उन क्षेत्रों के कार्बन मुक्त करने के लिए एक स्थायी समाधान की आवश्यकता है जो उत्सर्जन में 70 प्रतिशत का योगदान करते हैं। सीसीयूएस की इसमें एक महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका है।

(ऊर्जा) राजनाथ राम ने इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) द्वारा आयोजित 17वें भारत कोयला शिखर सम्मेलन में कहा कि हम बहुत जल्द सीसीयूएस मिशन शुरू करने जा रहे हैं। इसके तहत कुछ प्रौद्योगिकी को 100 प्रतिशत सरकारी वित्तपोषण दिया जाएगा। ये प्रोत्साहन 50-100 प्रतिशत तक हो सकते हैं। ये प्रोत्साहन उद्योगों को कार्बन कैप्चर प्रौद्योगिकी को अपनाने और उन्हें कोयला-आधारित ऊर्जा प्रणालियों के साथ एकीकृत करने में मदद करेंगे।

उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था में वृद्धि के साथ, ऊर्जा की मांग भी बढ़ने की उम्मीद है। ऊर्जा की मांग में वृद्धि के लिए निश्चित रूप से ऊर्जा की आपूर्ति में वृद्धि की आवश्यकता होगी। हालांकि, कोयले को हमारी कुल प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है, फिर भी इस प्रणाली में बड़ी मात्रा में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित की जा रही है।

काठमांडू में सरकार के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान नारेबाजी करते प्रदर्शनकारी। दाएं : सरकार विरोधी प्रदर्शनों के मद्देनजर कर्फ्यू बढ़ाए जाने के बीच मुश्तैद सशस्त्र पुलिस बल के जवान।

नेपाल में निषेधाज्ञा बढ़ाई, आवाजाही में ढील

हिंसा को रोकने के लिए सड़कों पर सेना की गश्त जारी, धीरे-धीरे सामान्य हो रहीं स्थितियां

काठमांडू, एजेंसी

नेपाल सेना ने गुरुवार को काठमांडू घाटी के तीन जिलों में निषेधाज्ञा बढ़ा दी है तथा कुछ निश्चित समयावधि के लिए लोगों की आवाजाही की अनुमति दे दी है। इससे हिंसक प्रदर्शनों के बाद इस हिमालयी राष्ट्र में धीरे-धीरे स्थिति सामान्य हो रही है। इन हिंसक प्रदर्शनों के कारण केपी शर्मा ओली को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा।

सेना सड़कों पर पहरा दे रही है, लेकिन देश के बाकी हिस्सों में स्थिति शांतिपूर्ण बनी हुई है। केवल काठमांडू के दक्षिण-पूर्व में एक जेल से भागने के दौरान नेपाली सेना की गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। नेपाल सेना की ओर से जारी एक नोटिस में कहा गया है कि काठमांडू घाटी के तीन जिलों काठमांडू, ललितपुर और भक्तपुर में सुबह छह बजे से कर्फ्यू हटा लिया गया है। सेना द्वारा जारी नोटिस में कहा गया है कि आम जनता को आवश्यक कार्यों के लिए कुछ घंटों की आवाजाही की अनुमति देने के बाद प्रतिबंधात्मक आदेश सुबह 10 बजे से शाम पांच बजे तक लागू रहेंगे।

इसमें कहा गया है कि शाम पांच बजे से सात बजे तक ढील के बाद शुक्रवार शाम सात बजे से सुबह छह बजे तक रात्रि कर्फ्यू लागू रहेगा। कर्फ्यू हटते ही लोग जरूरी सामान खरीदने के लिए बाजारों, दुकानों और किराने की दुकानों की ओर दौड़ पड़े। सड़कों पर इक्का-दुक्का वाहन ही दिखे। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सेना ने बुधवार शाम पांच बजे से कर्फ्यू लगा दिया था और नेपाली सैनिकों ने बुधवार को शांति बहाल करने और विरोध-प्रदर्शन की आड़ में संभावित हिंसा को रोकने के लिए सड़कों पर गश्त की। देशभर में आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाओं के बाद मंगलवार रात से सुरक्षा अभियानों की कमान संभालने वाली सेना ने चेतावनी दी कि किसी भी तरह के विरोध-प्रदर्शन, तोड़फोड़, आगजनी या व्यक्तियों एवं संपत्ति पर हमले को आपराधिक कृत्य माना जाएगा और उससे उचित तरीके से निपटा जाएगा।

काठमांडू स्थित त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (टीआईए) पर हिंसक विरोध प्रदर्शनों के कारण परिचालन बंद होने के 24 घंटे बाद बुधवार शाम से सेवाएं फिर से शुरू हो गईं। इस बीच, स्थानीय मीडिया में आयी खबरों के अनुसार गुरुवार सुबह रामेछाप जिला जेल से बड़े पैमाने पर कैदियों को भागने से रोकने के लिए सेना द्वारा की गई गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और 12 से अधिक कैदी घायल हो गए।

प्रतिबंध के बीच आवाजाही में ढील दिए जाने के बाद सड़कों पर निकले लोग। एजेंसी

जेल में झड़प के दौरान तीन कैदियों की मौत, अब तक 15,000 कैदी फरार

काठमांडू। नेपाल में सरकार विरोधी हिंसक प्रदर्शनों के बीच गुरुवार को एक जेल में सुरक्षा बलों के साथ झड़प के दौरान तीन कैदियों की मौत हो गई, जबकि अब तक दो दर्जन से अधिक जेलों से 15,000 से अधिक कैदी फरार हो चुके हैं। अधिकारियों ने बताया कि ताजा घटनाक्रम के साथ, मंगलवार से भड़की हिंसा के दौरान सुरक्षा बलों के साथ हुई झड़पों में मरने वाले कैदियों की संख्या बढ़कर आठ हो गई है। प्रदर्शनकारियों द्वारा जेलों पर हमले करने और अराजकता के चलते देशभर में कानून-व्यवस्था की स्थिति गंभीर बनी हुई है। अधिकारी स्थिति को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त बल तैनात कर रहे हैं। हिंसक प्रदर्शन के कारण केपी शर्मा ओली को मंगलवार को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा, जिसके बाद नेपाल सेना ने गंभीर कानून व्यवस्था की स्थिति के कारण विभिन्न प्रांतों में प्रतिबंध लगा दिए। पुलिस सूत्र ने बताया कि गुरुवार सुबह मधेस प्रांत के रामेछाप जिला जेल में कैदियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच हिंसक झड़प में तीन कैदियों की मौत हो गई और 13 अन्य घायल हो गए। सूत्र ने बताया कि झड़प तब शुरू हुई जब कैदियों ने गैस सिलेंडर में विस्फोट करके जेल से बाहर निकलने की कोशिश की।

सशस्त्र सीमा बल ने नेपाल में जेल तोड़कर भागे 60 संदिग्ध कैदियों को पकड़ा

नई दिल्ली। भारत-नेपाल सीमा की सुरक्षा करने वाले सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर विभिन्न स्थानों से लगभग 60 लोगों को पकड़ा है। इनमें से ज्यादातर नेपाली हैं, जिन पर अपने देश में अशांति के दौरान जेल तोड़कर भागने का संदेह है। एसएसबी के जवानों ने पिछले दो दिनों में उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल की सीमा चौकियों से इन्हें पकड़ा है। उन्होंने बताया कि इन्हें संबंधित राज्य पुलिस बलों को सौंप दिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि पकड़े गए लोगों में से दो या तीन ने भारतीय मूल का होने का दावा किया है और इसकी पुष्टि की जा रही है।

जेन जी नेताओं की अंतरिम सरकार गठन के लिए सेना मुख्यालय में राष्ट्रपति पौडेल से बातचीत

काठमांडू। नेपाल में प्रदर्शनकारी जेन जी समूह के प्रतिनिधि गुरुवार को नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल और सेना प्रमुख अशोक राज सिगडेल के साथ भद्रकाली स्थित सेना मुख्यालय में अंतरिम सरकार के नेता का नाम तय करने के लिए बातचीत कर रहे हैं। सेना के एक प्रवक्ता ने पुष्टि की कि विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत जारी है। हालांकि, उन्होंने किसी का नाम नहीं बताया। सेना के प्रवक्ता ने कहा,हम विभिन्न हितधारकों के साथ कई दौर की बातचीत कर रहे हैं। बैठक के दौरान सेना मुख्यालय के बाहर बड़ी संख्या में युवा बेसब्री से फैसला सुनने का इंतजार करते दिखे।

ट्रंप के करीबी सहयोगी कार्यकर्ता चार्ली किर्क की गोली मारकर हत्या

ओरेम (अमेरिका), एजेंसी

अमेरिका में उताह के एक कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी सहयोगी और रूढ़िवादी कार्यकर्ता चार्ली किर्क की गोली मारकर हत्या कर दी गई। किर्क अपने गैर-लाभकारी राजनीतिक संगठन 'टर्निंग पॉइंट यूएसए' द्वारा 'उताह वैली विश्वविद्यालय' के 'सोरेंसन सेंटर' प्रांगण में आयोजित एक बहस में बोल रहे थे।

गोलीबारी से ठीक पहले, किर्क एक दर्शक द्वारा भीड़ पर गोलीबारी करने और हिंसा के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब दे रहे थे। तभी हमलावर ने कुछ दूरी से परिसर की एक छत से गोली चलाई। अधिकारियों का कहना है कि हमलावर चीख-पुकार और छात्रों में मची भगदड़ के बीच फरार हो गया। संघीय, राज्य और स्थानीय अधिकारी गुरुवार तड़के तक अज्ञात हमलावर की तलाश में जुटे रहे। उताह के जनसुरक्षा अधिकारियों ने बताया कि बुधवार को दो लोगों को हिरासत में लिया गया था, लेकिन किसी की भी गोलीबारी से कोई संलिप्तता नहीं पाई गई और उन्हें रिहा कर दिया गया। अधिकारियों को अभी तक इस हत्या के मकसद का पता नहीं चल पाया है लेकिन इस घटना ने अमेरिका में बढ़ती राजनीतिक हिंसा को लेकर चिंता को फिर से बढ़ा दिया है। ट्रंप ने किर्क की मृत्यु की खबर सोशल मीडिया पर साझा की, उन्हें महान व्यक्ति बताया।

- गैर-लाभकारी राजनीतिक संगठन द्वारा आयोजित एक बहस में पहुंचे थे किर्क

हत्यारे का अब तक सुराग नहीं, अत्याधुनिक राइफल बरामद

ओरेम। पुलिस चार्ली किर्क के हत्यारे की पहचान करने में जुटी है, जो गोली चलाने के बाद छत से कूदकर भाग गया था। । जांच एजेंसी एफबीआई ने बताया कि जिस इलाके से किर्क पर हमले का संदिग्ध भागा था, वहां से एक अत्याधुनिक राइफल बरामद की गई है। अधिकारियों ने बताया कि हमलावर कॉलेज जाने वाले छात्रों की उम्र का प्रतीत होता है। उन्होंने बताया कि हमलावर चीख-पुकार और छात्रों में मची भगदड़ के बीच फरार हो गया।

भारत-अमेरिका संबंधों को दर्शाती है गोरो की नियुक्ति : क्वात्रा

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन। अमेरिका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा ने कहा कि भारत में अमेरिका के नामित राजदूत सर्जियो गोर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक हैं और दिल्ली में सेवा देने के लिए उनके नामांकन को द्विपक्षीय संबंधों के महत्व और प्राथमिकता के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

क्वात्रा ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, मैं स्वागत करता हूं कि राष्ट्रपति ट्रंप अपने सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक सर्जियो गोर को भारत में अगले अमेरिकी राजदूत के रूप में सेवा देने के लिए भेज रहे हैं। क्वात्रा ने कहा कि इस कदम को भारत-अमेरिका संबंधों के महत्व और प्राथमिकता के संकेत के रूप में देखा जा रहा है, तथा यह दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने और मित्रता को गहरा करने की प्रतिबद्धता है।

गोर गुरुवार को वाशिंगटन डीसी में सीनेट की विदेश संबंध समिति के समक्ष 'भारत में अमेरिका के असाधारण एवं पूर्णाधिकारी राजदूत' बनने के लिए पेश होंगे, जहां राजदूत के रूप में उनके नाम पर मुहर लगाने संबंधी सुनवाई होगी।

नेतन्याहू ने बंधकों की रिहाई की उम्मीद खत्म की : कतर

दोहा, एजेंसी

- प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल थानी ने साक्षात्कार में कही बात

कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल थानी ने कहा है कि इजराइल द्वारा दोहा में हमास नेताओं को निशाना बनाकर किए गए हमले से इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ग़ाज़ा में बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई की हर उम्मीद खत्म कर दी है। शेख मोहम्मद ने यह तीखा बयान संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपनी उपस्थिति से पूर्व दिया।

यह इजराइली हमले को लेकर खाड़ी देशों, विशेष रूप से अरब देशों के भीतर गहराते असंतोष को दर्शाता है। इस हमले में कम से कम छह लोगों की मौत हुई थी। सीएनएन को बुधवार देर रात दिए गए एक साक्षात्कार में शेख मोहम्मद ने कहा, हमले के दिन सुबह मैं एक बंधक के परिवार से मिला था। वे लोग संघर्षविराम और मध्यस्थता पर पूरी तरह निर्भर थे। उनके पास कोई और आशा नहीं थी। लेकिन मुझे लगता है कि नेतन्याहू ने जो किया, उससे उन बंधकों की रिहाई की हर उम्मीद समाप्त हो गई है। कतर और मिस्र, ग़ाज़ा में संघर्ष विराम की मध्यस्थता के प्रमुख प्रयासों में शामिल रहे हैं। अमेरिका के आग्रह पर कतर ने वर्षों से दोहा में हमास के राजनीतिक नेतृत्व को आश्रय दिया है, ताकि इजराइल और हमास के बीच बातचीत की संभावनाएं बनी रहें।

इजराइल को रोकने के लिए मुस्लिम देश हों एकजुट

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने गुरुवार को कतर के अमीर से मुलाकात की और दोहा में इजराइल की ओर से रिहायशी इलाकों को निशाना बनाकर किए गए हालिया हमलों की निंदा करते हुए खाड़ी देश के साथ एकजुटता जताई। शरीफ ने मुस्लिम देशों से इजराइली आक्रामकता के खिलाफ एकजुट होने का आग्रह भी किया। आधिकारिक बयान के मुताबिक, एक दिवसीय यात्रा पर दोहा पहुंचे शरीफ ने कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी के साथ बहुत गर्मजोशी भरी और सौहार्दपूर्ण बैठक की।

लैरी ने सबसे अमीर आदमी का खिताब खोया, मस्क नंबर वन

नई दिल्ली। कम्प्यूटर क्षेत्र की दिग्गज कंपनी ओरेकल के सह संस्थापक लैरी एलिसन कुछ ही देर के लिए सही पर दुनिया के सबसे अमीर शख्स बन गए। उन्होंने नंबर वन की पोजीशन पर काबिज एलन मस्क को दूसरे नंबर पर धकेल दिया।

ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार, बुधवार सुबह एलिसन की संपत्ति बढ़कर 393 अरब डॉलर हो गई, जबकि मस्क 385 अरब डॉलर पर आ गए। यह उछाल ओरेकल के शेयरों के 40% से ज्यादा बढ़ने के बाद आया। यह एलिसन की संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा है। यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रह सकी और शेयर की कीमत दिन के अंत तक कुछ कम हो गई, जिससे मस्क फिर शीर्ष पर आ गए।

पहलगाम हमले के आरोपियों के पॉलीग्राफ और नार्को परीक्षण की एनआईए की याचिका खारिज

जम्मू, एजेंसी

जम्मू की एक विशेष अदालत ने पहलगाम आतंकी हमले के सिलसिले में गिरफ्तार दो लोगों के 'पॉलीग्राफ टेस्ट' और 'नार्को एनालिसिस' परीक्षण के लिए एनआईए की याचिका को खारिज कर दिया है और कहा है कि वैज्ञानिक तकनीक खुद के खिलाफ साक्ष्य देने से बचने के अधिकार का हनन करती हैं।

एनआईए ने अदालत को सूचित किया था कि आरोपियों ने अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए दोनों परीक्षणों के लिए अपनी सहमति दे दी है। केंद्रीय एजेंसी ने 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के पांच दिन बाद मामले की जांच अपने हाथ में ली थी। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी। हालांकि, आरोपी बशीर अहमद जोतद और परवेज अहमद ने एनआईए के दावे का खंडन किया। उन्हें आतंकवादियों को पनाह देने के आरोप में 26 जून को गिरफ्तार किया गया था। अदालत ने छह पृष्ठ के आदेश में कहा, आज दोनों आरोपियों को पेश किया गया... दोनों आरोपियों ने खुली अदालत में कहा है कि वे पॉलीग्राफ या नार्को एनालिसिस परीक्षण कराने के इच्छुक नहीं हैं। एनआईए के मुख्य जांच अधिकारी ने अदालत से दोनों का 'पॉलीग्राफ टेस्ट' और 'नार्को एनालिसिस' कराने की अनुमति मांगी है।

- जम्मू की एक विशेष अदालत ने कहा- वैज्ञानिक तकनीक खुद के खिलाफ साक्ष्य देने से बचने के अधिकार का हनन करती हैं

कर्नाटक हाईकोर्ट और मानवाधिकार आयोग का दिया हवाला

अदालत ने कहा कि किसी व्यक्ति पर उसकी इच्छा के विरुद्ध नार्को-एनालिसिस, पॉलिग्राफ टेस्ट जैसी वैज्ञानिक तकनीकें लागू करना संविधान में दिए गए खुद के खिलाफ साक्ष्य देने से बचने के अधिकार का उल्लंघन होगा। आदेश में अदालत ने 'पॉलिग्राफ टेस्ट', नार्को-एनालिसिस, और ब्रेन इलेक्ट्रिकल एक्टिवेशन प्रोफाइल पर कर्नाटक उच्च न्यायालय के फैसले और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के दिशानिर्देशों का भी हवाला दिया।

सिंगापुर में भारतीय मूल के आव्रजन अधिकारी को जेल

सिंगापुर। सिंगापुर में भारतीय मूल के एक आव्रजन अधिकारी को लोगों को यात्रा पास दिलाने में मदद के बदले में यौन शोषण के जुर्म में बृहस्पतिवार को 22 महीने की जेल की सजा सुनाई गई। आव्रजन एवं जांच प्राधिकरण (आईसीए) के निरीक्षक कन्नन मोरिस राजगोपाल जयराम ने अल्पकालिक यात्रा पास आवेदनों को मंजूरी में मदद के बदले यौन कृत्यों के रूप में भ्रष्ट आचरण के तीन आरोपों को कबूल किया। 'चैनल न्यूज एशिया' की खबर के अनुसार, कन्नन (55) को सज़ा सुनाते समय तीन अन्य समान आरोपों पर विचार किया गया। अदालती दस्तावेज़ों में 2022 और 2023 की घटनाओं का विवरण दिया गया है। इनमें 25 से 30 वर्ष की आयु के भारतीय नागरिक भी शामिल हैं-जो पढ़ाई के लिए सिंगापुर आए थे।

9/11 आतंकी हमलों की 24वीं बरसी पर दी श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि सभा में शामिल होने के लिए जाते राष्ट्रपति ट्रंप और उनकी पत्नी।

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- हमलों में मारे गए लोगों की याद में श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित

अमेरिकी लोग 11 सितंबर 2001 को हुए भीषण आतंकी हमलों की 24वीं बरसी मना रहे हैं और इन हमलों में मारे गए लोगों की याद में श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की जा रही हैं। आतंकवाद के इस भीषण कृत्य में लगभग 3,000 लोग मारे गए थे।

इन लोगों के परिजन गुरुवार को न्यूयॉर्क, पेंटागन और पेंसिलवेनिया के शैंक्सविले में आयोजित स्मृति समारोह में गणमान्य व्यक्तियों और राजनीतिक नेताओं के साथ शामिल होंगे। राष्ट्रपति ट्रंप और प्रथम महिला मेलानिया ट्रंप ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

मेक्सिको में गैस टैंकर में विस्फोट से 3 की मौत, 70 घायल

मेक्सिको सिटी। मेक्सिको सिटी के एक प्रमुख राजमार्ग पर गैस टैंकर में हुए भीषण विस्फोट के कारण तीन लोगों की मौत हो गई और 70 अन्य घायल हो गए। मेक्सिको सिटी की मेयर ने बुधवार देर रात यह जानकारी दी। यह विस्फोट मेक्सिको की राजधानी से प्यूब्ला शहर की ओर जाने वाले एक अहम राजमार्ग पर हुआ।

सरकार का कहना है कि अगली सूचना तक के लिए इस सड़क को बंद कर दिया गया है। मेयर क्लारा ब्रुगाडा विस्फोट के तुरंत बाद दमकलकर्मियों और चिकित्सकों सहित बचाव दल के साथ मौके पर पहुंची। उन्होंने राजमार्ग के पुल के नीचे हुए विस्फोट को आपात स्थिति बताया जिसमें 18 वाहन जलकर खाक हो गए। उन्होंने बताया कि घायल हुए 70 लोगों में से 19 की हालत गंभीर है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 12 सितंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-आश्विन, पक्ष-कृष्ण पक्ष, पंचमी 09 .58 तक तत्पश्चात षष्ठी।

आज का पंचांग

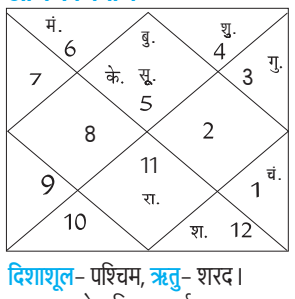

दिशाशूल- पश्चिम, ऋतु- शरद। चन्द्रबल- मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुंभ।

ताराबल-अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।

नक्षत्र-भरणी 11 .58 तक तत्पश्चात कृत्तिका।

मेष — आज व्यापार में साझेदारी करना लाभकारी होगा। वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। जीवनसाथी की सलाह पर गौर अवश्य करें। कार्यक्षेत्र में आपका प्रदर्शन जबर्दस्त रहेगा। आप आराम के मूड में रहेंगे।

वृष — आज पुराने किए गए खर्चे आपके बजट को बिगाड़ सकता है। अति शीघ्रता में काम बिगड़ने के आसार बन रहे हैं। नई परियोजनाओं में निवेश करने से बचें। घुटनों में दर्द से पीड़ित लोगों को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

मिथुन — आज व्यापार में उन्नति के अवसर मिलेंगे। बच्चों के साथ गंभीर विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। रिश्तेदारों से मिलाप हो सकता है। घर में आपका सम्मान और वर्चस्व बढ़ेगा। उच्च शिक्षा में अच्छे परिणाम मिलेंगे। घर में धार्मिक कार्यक्रमों का आनंद लेंगे।

कर्क — आज व्यापारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर ज्यादा निर्भर न रहें। अन्य दिनों की तुलना में आप अपने काम को लेकर ज्यादा ऊर्जावान और गतिशील रहेंगे। आप गृहकार्यों में काफी व्यस्त रहेंगे। गृहस्थ जीवन में आपसी सामंजस्य बढ़ेगा।

सिंह — आज उधार दिया हुआ धन वापस मिलने की संभावना बन रही है। भावुक होकर कोई बड़ा निर्णय न लें। विद्यार्थी नए कोर्स को जॉइन करने की योजना बना सकते हैं। रचनात्मक कार्यों में आप काफी रुचि लेने वाले हैं।

कन्या — आज छोटी-छोटी बातों को गंभीरता से न लें। वरना लोग आपसे नाराज हो सकते हैं। आर्थिक मामलों में बाधा आएगी। दांपत्य जीवन में परेशानियां खड़ी हो सकती है। परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य कम रहेगा। अहंकार की भावना का त्याग करें।

तुला — आज घर की साज-सज्जा के लिए आप मूल्यवान वस्तुओं की खरीदी कर सकते हैं। विरोधियों के बीच आपकी प्रशंसा होगी। बच्चों की समस्याओं को सुलझाने में सफल रहेंगे। प्रेम विवाह के लिए परिवार की अनुमति मिल सकती है।

वृश्चिक — आज रुके हुए कार्यों को निपटाने के लिए दिन उत्तम है। सभी कार्यों को बारीकी से अंजाम देंगे। शत्रुओं को कमजोर समझने की भूल न करें। अपने लक्ष्यों को लेकर योजना बना सकते हैं। व्यापार में आपको कुछ सुधार करना पड़ेगा।

धनु — आज दुश्मन आपसे दूरियां बनाकर रखने का प्रयास करेंगे। किसी धार्मिक आयोजन में सम्मिलित हो सकते हैं। परिवार की जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक निभाएंगे। किसी नकारात्मक बात से मन व्यथित हो सकता है। आपकी उदारता का लोग गलत लाभ उठा सकते हैं।

मकर — आज आपकी रचनात्मकता और कार्यकुशलता में कुछ कमी आ सकती है। घर में किसी बात को लेकर झगड़ा हो सकता है। अपने करियर को लेकर काफी उत्साहित रहेंगे। मन में कुछ हिचकिचाहट की भावना रहेगी।

कुंभ — आज व्यवसाय में बेहतरीन परिणाम मिलेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास और पराक्रम में वृद्धि होगी। सभी कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण होंगे। पड़ोसियों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आप जो भी योजना बनाएंगे वो सफल होगी।

मीन — आज अपनी दिनचर्या को संतुलित रखें। वैवाहिक जीवन को पर्याप्त समय अवश्य दें। दूसरों के मामलों में अपनी राय न दें। वाणी पर संयम रखें। काम के दबाव के कारण लापरवाही हो सकती है। महिलाओं को स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है।

सुडोकू-97

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		9				6		
5					9		1	
7		8		4				2
		3	6		8		4	
		7				8		
	2		5		3			
4				1				8
	3		2				5	
		6				9		

सुडोकू - 96 का हल

9	1	4	6	2	8	5	7	3
3	2	6	9	7	5	4	8	1
8	7	5	1	3	4	9	2	6
6	9	7	8	4	1	2	3	5
4	8	2	5	6	3	7	1	9
1	5	3	2	9	7	6	4	8
7	6	8	3	5	2	1	9	4
5	4	1	7	8	9	3	6	2
2	3	9	4	1	6	8	5	7

मुझे लगता है कि जब तक भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध बेहतर नहीं हो जाते तब तक क्रिकेट और व्यापार भी नहीं होने चाहिए। वह व्यक्तिगत रूप से पाकिस्तान के साथ क्रिकेट और व्यापार का समर्थन नहीं करते हैं।

- हरभजन सिंह

स्टेडियम

बरेली, शुक्रवार, 12 सितंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

मैच से पहले पाकिस्तान से संबंधों में सुधार हो

मुंबई : पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा कि क्रिकेट के मैदान पर आमने-सामने होने से पहले भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्तों में सुधार जरूरी है। पारंपरिक प्रतिद्वंदी भारत व पाकिस्तान ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहली बार दुबई में आमने-सामने होंगे। हरभजन ने यहां सोसाइटी मैगजीन के एक कार्यक्रम के दौरान कहा भारत और पाकिस्तान मैच हमेशा सुर्खियों में रहता है पर ऑपरेशन सिंदूर के बाद सभी ने कहा कि क्रिकेट और व्यापार नहीं होना चाहिए। हम विश्व चैंपियनशिप खेल रहे थे, हमने पाकिस्तान के खिलाफ वो मैच नहीं खेला।

मुक्केबाज पूजा रानी ने पदक पक्का किया

लिवरपूल : भारत की अनुभवी मुक्केबाज पूजा रानी ने पोलैंड की एमिलिया कोटेरस्का को हराकर महिलाओं के 80 किग्रा वर्ग के सेमीफाइनल में प्रवेश किया और इस तरह से विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में अपना पहला पदक पक्का किया। पहले दौर में बाई हासिल करने वाली 34 वर्षीय पूजा ने अपने अनुभव के दम पर बुधवार देर रात क्वार्टर फाइनल में किशोरी कोटेरस्का को 3-2 से हराया। 80 किग्रा भार वर्ग ओलंपिक में शामिल नहीं है और विश्व चैंपियनशिप में इस वजन वर्ग में 12 मुक्केबाज भाग ले रहे हैं। इस तरह से विश्व चैंपियनशिप में भारत के तीन पदक पक्के हो गए हैं। पूजा से पहले दो बार की एशियाई चैंपियन जैस्मीन लेम्बोरिया (57 किग्रा) और नुपुर शेरॉन (80 किग्रा से अधिक) ने सेमीफाइनल में पहुंचकर पदक पक्के किए थे।

यू मुंबा ने पटना पाइरेट्स को हराया

विशाखापत्तनम : यू मुंबा ने प्रो कबड्डी लीग में रोमांचक मुकाबले में पटना पाइरेट्स को 40-39 से हराया। पटना पाइरेट्स के अयान लोहचब पीकेएल के इतिहास में लगातार 20 अंक बनाने वाले पहले खिलाड़ी बने। लेकिन अंतिम क्षण में हुई गलती के कारण मैच प्रतिद्वंद्वी टीम के पक्ष में चला गया, जिससे उन्हें काफी निराशा हुई। यू मुंबा के लिए आमिरमोहम्मद जफरदानिश ने सुपर 10 लगाया। पहले हाफ तक मुंबई की टीम ने पटना पाइरेट्स के खिलाफ 23-15 से बढ़त बनाई हुई थी।

शिवम दुबे।

महत्वपूर्ण ऑलराउंडर बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं शिवम

दुबई, एजेंसी

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में इंपैक्ट प्लेयर नियम के कारण शिवम दुबे की गेंदबाजी में भूमिका सीमित हो गई थी लेकिन वह भारतीय टीम के लिए अदद ऑलराउंडर बनना चाहते हैं। जिसमें उन्हें मुख्य कोच गौतम गंभीर का समर्थन और गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल का मार्गदर्शन मिल रहा है।

संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ एशिया कप के पहले मैच में दो ओवर में चार रन देकर तीन विकेट लेने वाले दुबे ने एक तेज गेंदबाज के रूप ने अपने खेल में सुधार के संबंध में मोर्कल की भूमिका के बारे में बात की। दुबे ने भारत की नौ विकेट से जीत के बाद संवाददाताओं से कहा जब से मैं इंग्लैंड श्रृंखला के लिए भारतीय टीम में वापस आया हूं, तब से मोर्ने मेरे साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने मुझे कुछ विशेष सलाह दी है और मैंने उन पर अमल किया है। इस विस्फोटक बल्लेबाज ने कहा उन्होंने मुझे ऑफ स्टंप से थोड़ा बाहर की लाइन पर गेंदबाजी करने को कहा। उन्होंने धीमी गेंद करने को लेकर भी मेरे साथ काम किया और मेरे रन-अप में भी थोड़ा बदलाव किया।

मुख्य कोच और कप्तान ने मुझे बताया था कि मेरी गेंदबाजी की भूमिका अहम होगी। आईपीएल के बाद दुबे को अपने ऑलराउंड खेल और फिटनेस पर काम करने के लिए दो महीने का समय मिला। दुबे का आईपीएल में उनकी फ्रैंचाइज़ी चेन्नई सुपर किंग्स पावर-हिटर के रूप में ज्यादा इस्तेमाल करती है।

दुबे ने कहा पिछले दो महीनों में, मैंने अपनी फिटनेस पर काफी काम किया है। जहां तक मेरी बल्लेबाज़ी का सवाल है तो मुझे पता है कि बीच के ओवरों में मुझे (एक पावर-हिटर के तौर पर) अपनी भूमिका निभानी है। उन्होंने कहा मैं जानता हूं कि पिछले कुछ वर्षों में गेंदबाजों ने मुझे शॉर्ट पिच गेंदों से निशाना बनाया है और मैंने अपने शॉट्स की रेंज बढ़ाने पर काम किया है। इस ऑलराउंडर ने कहा जैसे-जैसे टूर्नामेंट आगे बढ़ेगा, विकेट धीमा होता जाएगा और मैं जानता हूं कि तब मेरी धीमी गेंदें प्रभावी होंगी।

पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले से पहले ध्यान केंद्रित रखें : कपिल

- विश्व कप विजेता कप्तान कपिल देव ने रविवार को पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले एशिया कप के मुकाबले से पहले भारतीय खिलाड़ियों से अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित रखने और बाहरी कारकों से विचलित नहीं होने को कहा। इस साल की शुरुआत में पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में 26 लोगों के मारे जाने पर भारत द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहली बार भारत और पाकिस्तान दुबई में आमने-सामने होंगे। कपिल ने यहां संवाददाताओं से कहा भारतीय खिलाड़ियों को केवल खेल पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनके पास एक अच्छी टीम है और उन्हें जीतना चाहिए।

03 विकेट लिए थे सिर्फ चार रन देकर

बांग्लादेश ने हांगकांग को हराया

एशिया कप टी-20 : कप्तान लिटन दास ने खेली आक्रामक अर्धशतकीय पारी

अबुधाबी,एजेंसी

लिटन दास ने कप्तानी पारी खेलते हुए आक्रामक अर्धशतक लगाया जिसकी मदद से बांग्लादेश ने एशिया कप के अपने पहले मैच में बृहस्पतिवार को हांगकांग को सात विकेट से हरा दिया।

बांग्लादेश के गेंदबाजों ने अनुशासित प्रदर्शन करते हुए हांगकांग को सात विकेट पर 143 रन पर रोक दिया था। इसके बाद दास ने 39 गेंद में 59 रन बनाकर टीम को 14 गेंद बाकी रहते जीत दिलाई। हांगकांग की यह टूर्नामेंट में लगातार दूसरी हार है जिसे पहले मैच में अफगानिस्तान ने 94 रन से हराया था।

बांग्लादेश के सलामी बल्लेबाज परवेज हुसैन इमोन ने 14 गेंद में 19 रन बनाये। बीच के ओवरों में रन मुश्किल से बने और पावरप्ले के बाद एक समय तो 33 गेंद में कोई चौका छक्का नहीं लगा था। दास ने मोर्चे से अगुवाई करते हुए यासिम मुर्तजा को छक्का लगाया और फिर दो चौके लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया। मुर्तजा के फेंके 15वें ओवर में 16 रन बने। तौहीद हृदय 36 गेंद में 35 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने दास के साथ 95 रन की साझेदारी की। दास 59 रन बनाकर अतीक इकबाल की गेंद पर बोल्ड हो गए लेकिन तौहीद ने टीम को विजयी रन तक पहुंचाया।

इससे पहले बांग्लादेश के गेंदबाजों ने अनुशासित प्रदर्शन करते हुए हांगकांग को सात विकेट पर 143 रन पर रोक दिया। नये कप्तान लिटन के साथ उतरी बांग्लादेश ने पहले गेंदबाजी करते हुए पावरप्ले में ही दबाव बना दिया था। स्पिनर मेहदी हसन ने पहला ओवर डाला लेकिन तेज गेंदबाज तसकीन अहमद और तंजीम हसन साकिब ने हांगकांग के शीर्षक्रम को सबसे ज्यादा परेशान किया। नयी गेंद से सीम और स्विंग दोनों मिल रही थी जिसका उन्होंने पूरा फायदा उठाया। तसकीन ने अंशुमान रथ (चार) को अपने पहले ओवर में विकेट के पीछे लपकवाया जबकि तंजीम ने बाबर हयात (14) को आउट किया। इससे पहले हयात ने उन्हें स्ट्रेट छक्का जड़ा था। पावरप्ले में हांगकांग का स्कोर दो विकेट पर 34 रन था। सलामी बल्लेबाज जीशान अली (30 रन) ने कुछ अच्छे स्ट्रोक्स लगाए जिसमें एक्स्ट्रा कवर पर जड़ा छक्का शामिल है।

बांग्लादेश के कप्तान लिटन दास अर्धशतक लगाने के बाद जश्न मनाते हुए। एजेंसी

भारत से मुकाबले से पहले अपनी तैयारी पुख्ता करेगा पाकिस्तान

दुबई : पाकिस्तान की टीम एशिया कप टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में भारत के खिलाफ होने वाले मुकाबले से पहले शुक्रवार को ग्रुप ए के अपने पहले मैच में कमजोर ओमान के खिलाफ अपनी तैयारी को पुख्ता अंजाम देने की कोशिश करेगी। पाकिस्तान ने एशिया कप से पहले त्रिकोणीय श्रृंखला के फाइनल में अफगानिस्तान को 75 रन से हराया था जिससे निश्चित तौर पर उनका मनोबल बढ़ा होगा। इस मैच में स्पिनर मोहम्मद नवाज ने हैट्रिक बनाई थी और वह फिर से पाकिस्तान के लिए तुरुप का इक्का होंगे। संयुक्त अरब अमीरात की धीमी पिचों के कारण पाकिस्तान को टीम में स्पिनरों को शामिल करना पड़ा। उसकी यह रणनीति त्रिकोणीय सीरीज के दौरान कारगर साबित हुई और एशिया कप में भी यह रणनीति महत्वपूर्ण साबित होगी। पाकिस्तान के कप्तान सलमान आगा ने कहा था हम इस तरह से तैयारी करना चाहते थे जिससे एशिया कप के लिए मदद मिले और हमने ऐसा किया।

महिला एशिया कप में भारत की पहली हार

हांगझोउ, एजेंसी

- चीन ने 4-1 से हराया, भारत की तरफ से एकमात्र गोल मुमताज खान ने किया

भारतीय महिला हॉकी टीम को एशिया कप में पहली पराजय का सामना करना पड़ा जब सुपर 4 चरण के मैच में बृहस्पतिवार को मेजबान चीन ने उसे 4-1 से हराया। भारत के लिए एकमात्र गोल मुमताज खान ने 39वें मिनट में किया जबकि चीन के लिये झोउ मेइरोंग (चौथा और 56वां मिनट), चेन यांग (31वां) और तान जिंझुयांग (49वां) ने गोल दागे।

भारतीय टीम पूल चरण में अपराजेय रही थी। उसने थाईलैंड और सिंगापुर को हराया जबकि जापान से ड्रॉ खेला। सुपर 4 चरण के पहले मैच में उसने कोरिया को 4-2 से हराया था। सुपर 4 की शीर्ष दो टीमें 14 सितंबर को फाइनल खेलेंगी। एशिया कप के विजेता को 2026 महिला विश्व कप में सीधे प्रवेश मिलेगा जो बेल्जियम और नीदरलैंड में होना है।

भारतीय टीम मौकों को भुनाने में नाकाम रही और तीन में से एक भी पेनल्टी कॉर्नर पर गोल नहीं कर सकी। पहले क्वार्टर में दोनों टीमों ने हमले बोलकर मौके बनाए। चीन ने बढ़त बनाने में सफलता अर्जित की जब चौथे मिनट में मेइरोंग ने रिबाउंड पर गोल दाग दिया। भारत को अब शुक्रवार को जापान से खेलना है जिसे जीतकर टीम फाइनल में प्रवेश सुनिश्चित करना चाहेगी।

दक्षिणेश्वर और नागल पर रहेगा दारोमदार

डेविस कप

बील (स्विट्जरलैंड), एजेंसी

भारत ने शुक्रवार से यहां मेजबान स्विट्जरलैंड के खिलाफ शुरू हो रहे डेविस कप विश्व ग्रुप एक के इंडोर मुकाबले के लिए युवा दक्षिणेश्वर सुरेश और वापसी कर रहे सुमित नागल को मैदान में उतारा है। भारत की नजरें इस मुकाबले में जीत हासिल करके डेविस कप क्वालीफायर में जगह बनाने पर टिकी हैं।

भारत के गैर खिलाड़ी कप्तान रोहित राजपाल को अमेरिका में रहने वाले दक्षिणेश्वर को टीम में शामिल करने के लिए उनके कोच को मनाना पड़ा था और मदुरै में जन्मा यह 6 फुट 5 इंच लंबा खिलाड़ी अभ्यास सत्र के दौरान उनकी उम्मीदों पर खरा उतरा।

इंडोर कोर्ट पर फ्लैट हिटिंग और बड़ी सर्विस महत्वपूर्ण होती है और दक्षिणेश्वर ने दोनों ही चीजें सही साबित कीं, जिससे गैर खिलाड़ी कप्तान को आसानी से यकीन हो गया कि वह दूसरे एकल के लिए अधिक उपयुक्त होंगे। दुनिया के 626वें नंबर के खिलाड़ी दक्षिणेश्वर दुनिया के 155वें नंबर के खिलाड़ी जेरोम किम के खिलाफ मुकाबले की शुरुआत करेंगे। राजपाल ने कहा हम प्रदर्शन के आधार पर निर्णय ले रहे हैं। इसमें मनमर्जी जैसी कोई बात नहीं है। दक्षिणेश्वर की सर्विस बहुत अच्छी है और यह इनडोर कोर्ट में बहुत बड़ा हथियार है। वीज़ा संबंधी कुछ समस्याएं थीं, इसलिए मैंने यूएस कॉलेज में दक्षिणेश्वर के कोचों से अनुरोध किया था कि वे उसे इनडोर कोर्ट पर तैयार करें।

भारत की डेविस कप टीम के खिलाड़ी स्विट्जरलैंड के बील में मुकाबले से पहले फोटो सेशन कराते हुए। एजेंसी

रोनाल्डो का खेल देखकर प्रेरणा लेते हैं अभिषेक

नई दिल्ली : एशिया कप हॉकी में भारत की खिताबी जीत के सूत्रधार रहे अभिषेक नैन के लिए क्रिस्टियानो रोनाल्डो प्रेरणास्रोत रहे हैं। जिन्हें देखकर ही उन्होंने काफी कुछ सीखा। अभिषेक ने टूर्नामेंट में छह गोल किए और कई गोलों में सूत्रधार रहे।

उन्होंने सोनीपत में अपने घर से भाषा को दिए इंटरव्यू में कहा पेरिस ओलंपिक 2024 कांस्य पदक और हांगझोउ एशियाई खेल 2022 में स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम के सदस्य रहे अभिषेक ने बताया कि उनके खेल पर पुर्तगाल के फुटबॉलर रोनाल्डो का काफी प्रभाव है।

आयुष शेट्टी ने बड़ा उलटफेर करते हुए क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया

हांगकांग, एजेंसी

भारत के उदीयमान खिलाड़ी आयुष शेट्टी ने गुरुवार को यहां हांगकांग ओपन सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट में बड़ा उलटफेर करते हुए 2023 के विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता जापान के कोडाई नाराओका को तीन गेम तक चले कड़े मुकाबले में हराकर पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

जून में यूएस ओपन सुपर 300 का खिताब जीतने वाले कर्नाटक के 20 वर्षीय खिलाड़ी ने अपनी आक्रामक शैली और बेहतरीन कोर्ट कवरेज का प्रदर्शन करते हुए जापानी शटलर को 72 मिनट तक चले रोमांचक मुकाबले में 21-19, 12-21, 21-14 से हराया। क्वार्टर फाइनल में आयुष का सामना हमवतन खिलाड़ी लक्ष्य सेन से होगा। इससे पहले लक्ष्य छह महीने में पहली बार किसी शीर्ष बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर प्रतियोगिता के पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में पहुंचे जबकि सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने भी इस 500,000 डॉलर इनामी टूर्नामेंट के पुरुष युगल के अंतिम आठ में जगह बनाई। विश्व चैंपियनशिप के पूर्व कांस्य पदक विजेता लक्ष्य ने हमवतन एचएस प्रणय को 15-21, 21-18, 21-10 से हराया।

- हांगकांग ओपन में लक्ष्य सेन और सात्विक-चिराग भी पहुंचे क्वार्टर फाइनल में

दक्षिण क्षेत्र 149 रनों पर सिमटा

दलीप ट्रॉफी फाइनल

बेंगलुरु, एजेंसी

मध्य क्षेत्र ने स्पिनर सारांश जैन (49 रन देकर पांच विकेट) और कुमार कार्तिकेय (53 रन देकर चार विकेट) की बदौलत बृहस्पतिवार को दलीप ट्रॉफी फाइनल के पहले दिन दक्षिण क्षेत्र के बल्लेबाजी क्रम को झकझोरते हुए उसे पहली पारी में 63 ओवर महज 149 रन पर समेट दिया। जैन और कार्तिकेय ने मिलकर 45 ओवर डाले। स्टंप तक मध्य क्षेत्र ने बिना विकेट गंवाए 50 रन बना लिए थे जिससे वह पहली पारी के हिसाब से 99 रन से पीछे थी। दानिश मालेवार 28 और अक्षय वाडकर 20 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे।

जैन ने लगातार 24 ओवर गेंदबाजी की। कार्तिकेय ने कलाई की स्पिन की तुलना में पारंपरिक स्पिन गेंदबाजी की और ये दोनों गेंदबाज मध्य क्षेत्र की मजबूत स्थिति के मुख्य सूत्रधार रहे। दक्षिण की टीम की मुश्किलों की शुरुआत 16वें ओवर से हुई, जब सलामी बल्लेबाज मोहित काले (06) कार्तिकेय की गेंद पर लापरवाही से स्वीप खेलने की कोशिश में बोल्ड हो गए। इसके बाद दक्षिण की टीम ने लंच से पहले तीन और विकेट गंवा दिए जिससे 33 ओवर में उसका स्कोर चार विकेट पर 64 रन हो गया। इस सत्र में सबसे ज्यादा नुकसान तन्मय अग्रवाल (76 गेंद में 31 रन) के रन आउट होने से हुआ जो अच्छी बल्लेबाजी कर रहे थे पर वह रिकी भुई टकराकर रन आउट हो गए।

मध्य क्षेत्र के गेंदबाज कुमार कार्तिकेय (दाएं) दक्षिण क्षेत्र के बल्लेबाज गुरजपनीत सिंह का विकेट लेने के बाद जश्न मनाते हुए। एजेंसी

- मध्य क्षेत्र के स्पिनर सारांश जैन और कुमार कार्तिकेय ने की धारदार गेंदबाजी

सचिन बीसीसीआई अध्यक्ष पद की दौड़ में नहीं

नई दिल्ली : दिग्गज बल्लेबाज और पूर्व भारतीय कप्तान सचिन तेंदुलकर ने इन अटकलों को खारिज कर दिया कि वह भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) का अगला अध्यक्ष बनने की दौड़ में हैं। उनकी प्रबंधन फर्म ने ऐसी सभी बातों को निराधार बताया।

तेंदुलकर की प्रबंधन फर्म ने उनकी ओर से बयान जारी कर इन अटकलों पर विराम लगा दिया है कि वह रोजर बिन्नी के संभावित उत्तराधिकारी हो सकते हैं। कंपनी की ओर से जारी बयान में कहा गया हमारे संज्ञान में आया है कि सचिन तेंदुलकर के नाम पर बीसीसीआई के अध्यक्ष पद के लिए विचार किए जाने या नामांकित किए जाने के बारे में कुछ अफवाहें फैल रही हैं। हम स्पष्ट रूप से कहना चाहते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है।

भूले-बिसरे दिन पाकिस्तान के क्रिकेट हीरो से लेकर बॉलीवुड स्टार तक बनकर खूब कमाया नाम

मोहसिन खान ने मैच और बॉलीवुड को याद किया

दुबई, एजेंसी

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान मोहसिन खान जब पीछे मुड़कर अपने करियर देखते हैं तो उन्हें क्रिकेट के मैदान और मुंबई के फिल्म स्टूडियो की याद आती है। मोहसिन ने जहां क्रिकेट के मैदान में अपनी पीढ़ी के सबसे जबरदस्त तेज गेंदबाजों का सामना किया तो वहीं उन्होंने हिंदी सिनेमा के कुछ सबसे बड़े सितारों के साथ एक दर्जन फिल्मों में भी काम किया।

पाकिस्तान के लिए 48 टेस्ट और 75 एकदिवसीय मैच खेलने वाले मोहसिन ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए पीटीआई से कहा भारत के खिलाफ स्वदेश और विदेश दोनों जगह खेलना मजेदार हुआ करता था। जिमी (मोहिंदर अमरनाथ) मेरे करीबी दोस्त बन गए। हमारे जमाने में आक्रामकता तो थी, लेकिन बदतमीजी नहीं थी।

मोहसिन खान। एजेंसी

मोहसिन ने 1979 में जब पहली बार भारत का दौरा किया तो सिर्फ क्रिकेट के ही दरवाजे नहीं खुले। फिल्म निर्माताओं ने तुरंत उनसे संपर्क किया और श्रृंखला के बाद छोटे कार्यक्रमों के लिए रुकने का आग्रह किया। मोहसिन ने कहा 1979 में जब मैं पहली बार भारत आया तो मुझे बॉलीवुड से प्रस्ताव मिलने लगे। लोग कहते थे कि बस 20 दिन रुक जाओ, हम तुम्हारा हिस्सा पूरा कर देंगे। लेकिन तब मेरा ध्यान क्रिकेट पर था। क्रिकेट को प्राथमिकता देने का फैसला जल्द ही सही साबित हुआ। मोहसिन ने 1982 तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में एक कैलेंडर वर्ष में एक हजार रन बनाने वाले पहले पाकिस्तानी क्रिकेटर के रूप में रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया। यह बहुत खास था, विशेषकर लॉर्ड्स में दोहरा शतक लगाने वाला पहला पाकिस्तानी बल्लेबाज बनना। दो साल बाद 1984 में डेनिस लिली के खिलाफ उन्हीं की धरती पर एडीलेड और मेलबर्न में लगातार शतक जड़े। मोहसिन ने कहा अपने समय के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज के खिलाफ ऐसा करना संतोषजनक था।

बटवारा फिल्म रही जीवन की बेहद खास

मोहसिन ने कहा, दरअसल जब मुझे बटवारा (फिल्म) का प्रस्ताव मिला तो मैं रीना के साथ मुंबई होते हुए लंदन जा रहा था। उन्होंने कहा धरम जी बहुत प्यारे थे और विनोद मेरे दोस्त थे। एक दृश्य ऐसा था जिसमें गहरी भावनात्मक तीव्रता की आवश्यकता थी और (जेपी) दत्ता ने अपने क्रिकेटर-अभिनेता को इसे समझाने का एक दिलचस्प तरीका ढूंढ निकाला। मोहसिन ने कहा उन्होंने मुझे कहा मोहसिन, फर्ज करो तुमने सौ मारा, फिर भी पाकिस्तान भारत से हारा। कैसा महसूस होगा आपको? उन्होंने इसे इस तरह समझाया। इस फिल्म के लिए मोहसिन को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए फिल्मफेयर नामांकन मिला।